श्री शत्रुंजय महातीर्थादि का
यात्रा विवरण

[illegible]

નિવેદન

[illegible]

[illegible]

[illegible]

गूजरात विद्यापीठ ग्रंथालय

[गुजराती कॉपीराइट विभाग]

अनुक्रमांक ૮૧-૨૧ दिनांक

पुस्तकनुं नाम શત્રુંજય મહાતીર્થાદિયાત્રા

विषय [illegible]

२६

परोपकाराय सताम् विभूतयः

श्री शत्रुंजय महातीर्थादिक यात्रा विचार.

योजक.

शांतमूर्ति मुनि महाराज श्री वृद्धिचंद्रजीना
शिष्याणु मुनि कर्पूर विजयजी.

स्वधर्मी भाईओ व्हेनोने.

श्री पुनानिवासी शेठ भगवानजी भीमाजीनी विधवा
भार्या भागुबाईना स्मरणार्थ एमना ट्रस्टीओ वती
शा शिवनाथ लुंबाजी तरफथी भेट.

छपावी प्रसिद्ध कर्त्ता.

श्री जैन श्रेयस्करमंडळ—म्हेसाणा.

(तरफथी शा. वेणीचंद सुरचंद.)

आ पुस्तक श्री सत्यप्रकाश प्रेस खाडीया अमदावादमां
शा. प्रेमचंद म्हालचंद तथा डाह्याभाई शकराभाई
गांधीए छाप्युं.

आवृत्ति १ ली. प्रत ३००० [illegible]

संवत १९७० वीर संवत् २४४० सने १९१३

कींमत वांचन, मनन अने यथाविध वर्तन

ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય
અ. નં. ૩૨૯
ગુજરાત ... ૭૯૨૯

आ पुस्तक ज्यां त्यां रखडतुं मूकी आशातन करवी नहीं.

ॐ नमः श्रीतीर्थराजाय, सर्वतीर्थ मयात्मने ॥
अर्हते योगिनाथाय, रुपातीताय तायिने ॥ १ ॥

भावार्थः—सर्व तीर्थमय जेनुं स्वरुप छे एवा श्री शत्रुंजय तीर्थ राजने तेमज परमयोगीश्वर, देहातीत अने विश्वत्राता एवा अर्हिंत परमात्माने अमारो नमस्कार थाओ !

श्रीतीर्थपांथरजसा विरजीभवंति,
तीर्थेषु बंभ्रमणतो न भवे भ्रमंति;
द्रव्यव्ययादिह नराः स्थिरसंपदाः स्युः
पूज्या भवन्ति जगदीशमथार्चयंतः ॥

भावार्थः—श्री तीर्थ भूमीना रज स्पर्शथी भव्यात्माओ कर्मरज रहित थाय छे. तीर्थोमां परिभ्रमण करवाथी भवमां भमता नथी (भव भ्रमणथी मुक्त थाय छे), अत्र दान देवाथी मनुष्यो अचळ लक्ष्मी-वाळा थाय छे अने जिनेश्वरनी पूजा—अर्चा करता छता विश्व-पूज्य थाय छे.

विज्ञप्ति

प्रिय वांचनार !

सत्पुरुषो पोतेज तीर्थरुप छे. एटलुंज नहि पण तेमना पवित्र चरणकमळथी स्पर्श थयेली भूमि अने तेनी प्रत्येक रज ए पण तीर्थरुप छे. एवा तीर्थनी विधिपूर्वक स्पर्शना, बहुमान, पूजन वगेरेथी आपणामां ते ते सत्पुरुषोना असाधारण सद्गुणो संक्रांत थाय छे. अने तथाविध उपासनाथी अनुक्रमे आपणे ए सत्पुरुष जेवाज थइ शकीए तेम छीए; अनंत सद्गुण संपन्न महर्षीओना रोमेरोममां उच्चता, पवित्रता, श्रेष्ठता, भरी रहेली होय छे. तेमना प्रत्येक श्वासोश्वासमां अने शरीरना साडात्रण क्रोड रोममांथी निकळता परमाणुओमां अलौकिक असर करनार उच्च शक्तिओ रहेली होय छे. तेओ ज्यां ज्यां जाय छे त्यां त्यांनी दशे दिशामां ए सद्गुणोनुं बळवान वातावरण रचाय छे. ते वातावरणमां जइ वसनाराओ उपर तेनी चमत्कारिक असर थाय छे. ए हालनी सायन्स विद्याए अनेक पुरावाओथी सिद्ध करी बताव्युंछे अने आपणा सर्वज्ञ शास्त्रकारोए अनेक दलीलो साथे जणाव्युं छे.

तीर्थाधिराज शत्रुंजयतीर्थ ए अनंत महात्माओनी स्पर्श करेली परम पवित्र भूमि छे, देव दानव अने इंद्रादिदेवो जेना दर्शन स्पर्शनने अहोनिश इच्छे छे, ते भुमिनी यात्रा आपणामांना घणा सज्जन स्त्री पुरुषोए एक करतां वधु वखत करी हशे, पण यात्राने जे विधिपूर्वक

करवी जोइए ते विधिपूर्वक न करवामां आवे तो जोइए तेटलो लाभ मळतो नथी. कडवी तुंबडी अडसठे तीर्थनी यात्रा करी आवे ते छतां तेमांनी जरा पण कडवाश कमी थती नथी. तेवी यात्राओ आपणे अनेक वखत करी चूक्या होइशुं, पण यात्रा करीआव्या त्यांथी आपणे शुं नवो सद्‌गुण लेता आव्या ? आपणामांथी केटली खामीओ कमी थइ ? आपणामां केटली योग्यता वधी ? योग्यता न वधवाना शुं कारणो छे ? शास्त्रकारोए शामाटे आवा तीर्थनी यात्रा करवामां जन्मनी सफळता कही छे ? केवी रीते यात्रा करवामां आवे तो आपणने यात्राना योग्य लाभो मळे ? ए बाबत समजाय, अमलमां मुकाय अने तथाविध यात्रानो लाभ लेवाय, तो श्री शत्रुंजय माहात्म्यादि ग्रंथोमां शत्रुंजयनी यात्रानुं फळ जणाव्युं छे तेनो निश्चयात्मक अनुभव थाय.

अनेक मुमुक्षु स्त्री पुरुषो, आ साधनोनी अनुकूळतावाळा जमानामां आ तीर्थनी यात्रानो लाभ घणी वखत लेछे पण तेमांनो म्होटो भाग गतानुगतिक होवाथी यात्राना खरा लाभोथी बेनसीब रहे छे. केटलीक वखत तीर्थनी आशातना वगेरे करीने, तीर्थनी छांयामां नहीं आचरवा योग्य कृत्यो करीने, लाभने बदले महोटो टोटो करी जाय छे, माटे तेम थतुं अटकाववाने अमारा साहित्य प्रसिद्धिना उच्च उद्देशनी सिद्धि अर्थे आ "श्री शत्रुंजय महातीर्थादि यात्राविचार" नामनुं न्हानकडुं पण अति उपयोगी पुस्तक अमारी ग्रंथमाळाना २६ मा मणका तरिके प्रथमावृत्तिमां घणीक उपयोगी

बाबतोनो उमेरो करीने जिज्ञासु स्त्री पुरुषोने भेटतरीके आपी तेनो व्होळो प्रसार करवा अर्थे छपावी व्हार पाडवामां आव्युं छे.

आ पुस्तक शांतमूर्ति मुनिमहाराज श्रीमान् कर्पूरविजयजी महाराजजीए तैयार करी आप्युं छे, उपोद्घात अने प्रस्तावनामां पण तेओश्रीए पोताना विद्वताभर्या उदगारो जाहेर कर्या छे ते बदल तेओश्रीनो अमो अंतःकरणपूर्वक आभार मानीए छीए अने आवा अनेक ग्रंथो लखी जैन कोमने विशेष आभारी करशे एम इच्छीए छीए.

आवा ग्रंथनी प्रसिद्धि माटे अने जनसमाजमां व्होळो प्रचार करवा अर्थे धननी मदद करनार धर्मचुस्त सज्जनोनो पण अमो अंतःकरणपूर्वक आभार मानवासाथे आवा कार्योमां वारंवार योग्य मदद करवा कराववा माटेनी सविनय विज्ञप्ति करीए छीए. समग्र जैन प्रजानुं आवा उत्तम कार्य भणी वळण थवाने अने समाजने उपयोगी थई पडे तेवा लाखो ग्रन्थो विना मुल्ये के पाणीना मुल्ये समाजमां फेलाववा अमो सर्व सज्जन स्त्री पुरुषोने साग्रह विज्ञप्ति करी विरमीए छीए. भूलचूक मिच्छामि दुक्कडं. मुज्ञेषु किं बहुना.

सौभाग्य पंचमी संवत् १९७० ली० प्रसिद्धकर्त्ता.

श्रीशत्रुंजय महातीर्थादिक यात्रा विचार.

[प्रस्तावना]

" योग असंख्य छे जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जाणोरे;
तेह तणे आलंबने, आतम ध्यान प्रमाणोरे "

नवपद प्रकरणमां कह्युं छे के " भो भो महानुभावो दश दृष्टांते दुर्लभ मनुष्य जन्म पामीने अने ते साथे वळी आर्य क्षेत्र, उत्तम कुल विगेरे प्रधान सामग्री पुन्य जोगे पामीने महा अनर्थकारी पांच प्रकारनो प्रमाद (मद, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथा) जलदी तजी दइ उत्तम धर्म करणी करवा तमारे पुरुषार्थ फोरववो जोइए. ते धर्म सर्व जिनेश्वरोए दान, शील, तप अने भावभेदे करी चार प्रकारनो उपदिश्योछे" तेमां पण भावनी प्रधानता वखाणी छे. भाव सहित ज करवामां आवती धर्म करणी दान, शील, तप प्रमुख सफळ कही छे. भाव वगरनी ते करणी अलेखे जाय छे. " भाव पण मन संबद्ध छे अने आलंबन वगर मन अति दुर्जय छे, तेथी मनने नियममां राखवा माटे सालंबन (आलंबनवाळुं) ध्यान कहेलुं छे.

जोके शास्त्रमां अनेक प्रकारनां आलंबन वखाण्यां छे तो पण ते सहुमां नवपद ध्यानज मुख्य छे एम जिनेश्वरो कहे छे. "

"१ अरिहंत, २ सिद्ध, ३ आचार्य, ४ उपाध्याय, ५ साधु, ६ दर्शन, ७ ज्ञान, ८ चारित्र, अने ९ तप ए नवपद वखाणेलां छे. "

ए नवपदनुं सविस्तर वर्णन नवपदप्रकरणमां करवामां आव्युं छे त्यांथी जाणी तत्संबंधी निश्चय करवा योग्य छे. ए नवपदज जगतमां सार

छे. तेथी तेनुंज आराधन करवा अधिक लक्ष राखवानी जरुर छे. ए नवपदमां अरिहंतादिक पांच धर्मी (धर्मात्मा) छे त्यारे दर्शनादिक चार (प्रकारनो) धर्म छे. ए दर्शन (सम्यकत्व), ज्ञान, अने चारित्ररूप सद्धर्मनुं आराधन करवाथीज धर्मात्मा थइ शकाय छे. जे जे अरिहंतादिक थाय छे ते सहु उक्त धर्मना आराधन (सेवन) वडेज थया छे अने भविष्यमां पण जे जे अरिहंतादिक थशे तेओ पण पवित्र धर्मना आराधन वडेज थशे. एथी वर्तमान काले पण भव्य जनोए एज पवित्र धर्मनुं आराधन करवा उजमाळ रहेवुं उचित छे. धर्म धर्मी जनोमां निवसे छे तेथी धर्मनुं आराधन करवा इच्छनारे उक्त अरिहंतादिक धर्मात्माओनुं दृढ आलंबन लेवुं अत्यंत जरुरनुं छे.

अरिहंतादिक पवित्र धर्मात्माओना नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव ए चारे निक्षेपा पूजानिक छे. जेमना भाव पवित्र छे तेमनांज नाम, स्थापना अने द्रव्य पण पवित्र छे पण बीजानां नथी. तेथी अरिहंतादिक पवित्र आत्माओनुं (भाव सहित) नाम स्मरण करवाथी, तेमनी (शाश्वत अशाश्वत) प्रतिमानां दर्शनादिक करवाथी, तेमज त्रिकाळगत तेमना आत्मद्रव्यने नमस्कारादि करवाथी आपणो आत्मा जागृत थाय छे एटले ए अरिहंतादिकमां जेवा उत्तम गुणो छे तेवाज उत्तम गुणो प्राप्त करवा उजमाल थाय छे. जे गुणो अरिहंतादिकने व्यक्त (प्रगट) थयेला छे तेज (तेवाज) गुणो आपणा प्रत्येक आत्मामां शक्ति (सत्ता) रुपे तो रहेलज छे. ते गुणो कर्मनां आवरणथी ढंकाइ गयेला होवाथी प्रगट देखी शकाता नथी. परंतु जो प्रगट गुणी अरिहंत परमात्मादिकनुं दृढ आलंबन लही ए कर्मनां सघळां आवरण

दूर करी देवामां आवे तो पछी स्वसत्तामां रहेला समस्त गुणो जेवाने तेवा झळहळता प्रगट थायज छे. सूर्यादिक उपर आवी लागेलां वादळां दूर थतांज तेनी स्वाभाविक प्रभा शुं प्रगट थया वगर रहे छे? एथीज अव्यक्त गुणी एवा आपणे व्यक्त गुणी एवा अरिहंतादिक परमेष्ठिनुं दृढ आलंबन लेवुं उचितज छे. जे जे कार्य उचित विवेक सहित विधि पूर्वक करवामां आवे छे ते अल्प श्रमे अद्भुत लाभ मेळवी आपे छे एटलामाटे पवित्र धर्म करणीनुं सेवन करनारे यथाचित मर्यादारूप विधि साचववा अने यद्वा तद्वा करवा रूप अविधि दोष टाळवा खास काळजी राखवी ज जोइए. एवा हेतुथी प्रस्तुत ग्रंथमां श्री शत्रुंजय महातीर्थ जेवा पवित्र स्थळनी स्पर्शना–सेवना करवा जेवो पुन्य–संयोग मळे त्यारे जे कंइ विधि–सेवा करवी जोइए अने अविधि दोष टाळवा जोइए तेनुं दिग् दर्शन प्रसंगे प्रसंगे करावावामां आवेलुं छे ते लक्षमां राखी प्रीतिथी हित मार्गनो आदर करवा भव्यात्माओने खास भलामण छे. जूओ ! खेती करनारा खेडूत लोको तेमनां क्षेत्रने यथाविध खेडी तेमां खातर प्रमुख नांखी यथाअवसर वावणी करे छे अने तेनो विनाश थवा न पामे पण प्रतिदिन तेनी रक्षा–पुष्टि थया करे तेवी पूरती काळजी राखे छे तो परिणामे तेमांथी इच्छित लाभ मेळवी शके छे, एज रीते आपणे जे धर्म करणी करीए तेनो यथार्थ लाभ लेवोज होय तो ए खेडूतनी पेरे आपणे पण पूरती संभाळ राखी रहेवानी खास जरूर छे ज. सुज्ञेषु किं बहुना. इति शम्

ली० शासनरुचि मुनि कर्पूरविजय.

उपोद्घात अंतर्गत प्रस्ताविक बोध वचन.

श्री शत्रुंजय, गिरिनार, अर्बुदाचल (आबु गढ) अने संमेत शिखर प्रमुख उत्तम तीर्थोने भेटवा जतां, तेमज गमे ते गाम, नगर, पुर, पाटण प्रमुख स्थळनां भूषण रूप श्री जिनचैत्यो (जिन मंदिरो तेमज तेमां प्रतिष्ठित प्रभुना बिंबो) ने जूहारवा जतां तथा मुनिजनोने वंदन करवा जतां यथायोग्य प्रवचन सारोद्धार, पंचाशक अने देववंदन भाष्य प्रमुख पवित्र शास्त्रोमां फरमाव्या मुजब आपणे निसीहि प्रमुख दशत्रिको बराबर लक्ष राखीने साचववी जोईए. एटले के १ यथास्थाने त्रणवार निसीहि (तेनो परमार्थ समजी-धारी) कहेवी. २ चैत्य फरती त्रणवार प्रदक्षिणा देवी. (प्रदक्षिणा देतां कंइ आशातना जेवुं नजरे पडे तो ते टाळवा प्रथम खप करवो.) ३ त्रणवार पंचांग नमावीने प्रणाम करवा (प्रथम प्रभुजी नजरे पडे एटले तत्काल अंजलि (बे हाथ) जोडी प्रणाम करवो, पछी नजदीक आवतां अर्धांग नमावी देवुं अने छवटे चैत्यवंदन करती वखते पंचांग प्रणाम करवा जोईए). ४ त्रण प्रकारनी पूजा (अंग पूजा, अग्र पूजा अने भाव पूजा) करवी. ५ प्रभुनी त्रण अवस्था (छद्मस्थ अवस्था, केवळी अवस्था अने निर्वाण अवस्था) भाववी. ६ प्रभु शिवायनी त्रणे दिशा तरफ जती दृष्टिने संयमी-नियममां राखी ते दृष्टि प्रभुनी सन्मुखज स्थापी राखवी. ७ प्रभुने पंचांग प्रणाम करतां त्रणवार तेटली भूमिनुं प्रमार्जन करवुं. ८ चैत्यवंदन करतां उच्चरवामां

आवता सूत्रादिक शब्दो शुद्ध बोलवा, तेना रहस्यार्थमां उपयोग राखवो अने प्रभुनी मुद्रा उपर सारी रीते लक्ष राखवुं. ९ नमुथ्थुणं कहेतां योग मुद्रा करवी. जावंति चेइयाइं, जावंत केवि साहू अने जयवीयराय कहेतां मुक्ताशुक्ति मुद्रा अने काउस्सग्ग करतां जिनमुद्रा करवी. छेवटे १० चैत्यवंदन समये जावंति चे०, जावंत केवि साहू अने जयवीयराय ए त्रण प्रणिधान बराबर लक्ष परोवी कहेवां, अथवा चैत्यवंदन समये मन, वचन अने कायानी एकाग्रता करवी. ए दशे त्रिकोनुं अधिक स्वरुप भाष्यत्रय नामना गुजराती पुस्तकमांथी पण जोई, जाणी, अविधि दोष टाळी, विधि–मार्ग आदरवा पूरतो खप करवो. उक्त पवित्र स्थळमां दाखल थतां (प्रवेश करतां) पांच अभिगम पाळवा पण पूरतुं लक्ष राखवुं. १ निज भोगमां लेवा योग्य सचेत वस्तुनो त्याग करी देवो. २ शुद्ध वस्त्र, अलंकारादिक अचेत वस्तु साथेज राखी लेवी. ३ अखंड उत्तरासंग (जनोईना आकारे) नांखीने प्रवेश करवो. ४ मनने एकाग्र करी देवुं. अने ५ देव–गुरु नजरे पडतांज बे हाथ जोडी मस्तके लगाडी नमस्कार करवो. वळी राज्य चिन्ह रुप गणातां १ छत्र, २ चामर, ३ मुगट, ४ खड्ग, तेमज ५ उपानह (मोजडी प्रमुख) बाहेर उतारी नांखीने ज अंदर प्रवेश करवो उचित छे. अन्यथा देवगुरुनी आशातना करी लेखाय.

देव–गुरुनां दर्शन पूजादिक करीने पाछां वळतां (बाहेर निसरतां) आपणा परम पूज्य देव–गुरुने पुंठ वाळीने (पुंठ दइने) चालवुं नहिं. पण विवेकथी तेमने आपणी पुंठ न पडे एम उपयोग

राखीने अदब सर पाछा फरवुं. जूओ ! लौकिकमां कोई शहेनशाह प्रमुख मातबरनी सलामे गया होय तेमने पण सलामी लही पाछा पगले चालवुं पडे छे. तेम छतां कोई जाणतां अजाणतां पुंठ दइने चाल्युं होय तो तेणे ते मातबरनुं अपमान कर्युं लेखाय छे. ज्यारे आम छे त्यारे त्रण जगतना परम उपकारक प्रभुनो (शुद्ध देव—गुरुनो) आपणे केटलो बधो विनय साचववो जोईए ? आ बाबत खास करीने सहुकोइ सज्जनोए विशेषे संभाळ राखी व्यवहार शुद्धि साचववा पूरतो ख्याल करवो जोईए. दरेक हित कार्य पण विवेक पूर्वक करवाथीज व्यवहार शुद्धि पळे छे. श्री शत्रुंजयादिक पवित्र तीर्थोनी स्पर्शना करती वखत, अने गमे त्यां देवाधिदेव (वीतराग परमात्मा) ने जूहारती वखते तेमज ब्रह्मचर्य, निःसंगता प्रमुख उत्तम गुणोथी अलंकृत आचार्यादिक पवित्र आत्माओना दर्शन करवा अर्थे तेओनी समीपे जतां, खुल्ला (अलवाणां) पगे barefooted चालीने जवुं जोईए. चालतां जतां अने गया बाद हृदयमां तेमना पवित्र गुणोनुं ज सतत स्मरण अने बनी शके तेटलुं तेवा सद्गुणोनुं अनुकरण करवुं जोईए. तीर्थादिक पवित्र स्थले पुन्ययोगे आवी तेनी सारीरीते सेवा करवी, पण देहादिक जड वस्तुओ उपर मोह ममता राखीने सुखशील थई केवळ बेसी रहेवानुं अथवा इन्द्रियादिकनी लगाम मोकळी मूकी दई स्वेच्छाए म्हालवानुं नथी. जे जीवो अहीं आवी लाभ लइ जवाने बदले अवळो व्यापार करीने उलटो तोटो बांधे छे ते हतभाग्य जनोनो क्यांय छूटको थवानो नथी. एम दीलमां विचारी प्रमादाचरण तजी, पोतानुं लक्ष सुधारी सुकृत उपार्जन करवा जलदी साव-

धान थई जवुं जोईए. कुकर्मवशात् अवळे रस्ते चालेला छता श्री शत्रुंजय जेवा परम पवित्र तीर्थस्थलनो तन मनथी दृढ आश्रय करी, फरी धर्म सन्मुख थयेला पापी जीवो पण पावन थई जाय छे. जूओ! कह्युंछे के "च्यार हत्यारा नर परदारा, देव गुरु द्रव्य चोरी खावे; चैत्री कार्तकी पुनम जात्रा, तप जप ध्यानथी कर्म जलावे. गिरिवर दर्शन विरला पावे." धर्मज एक अशरणने शरण आपनार अने अधर्मनो पण उद्धार करनार निष्कारण बंधु समान छे. अत्र प्रस्तावे शत्रुंजय माहात्म्यमां विस्तारथी वर्णवेलुं कंडु राजानुं चरित्र मनन पूर्वक वांची धडो लेवा योग्य छे. तेमां प्रसंगे कह्युं छे के " धर्मनाज प्रभावे सुख साहेबी पामीने जे कृतघ्न, एज धर्मनो अनादर करे छे ते स्व स्वामी द्रोह करनार पापीप्राणीनुं भविष्य शीरीते सुधरी शकशे ? नहिंज सुधरी शके." आवां मार्मिक (ऊंडी असर करनारां) वचनोथी कंडूराजा चमकी उठयो हतो, तेम भवभीरु जनोए जागवुं जोइए. नहिंतो पछी " लग्न वेळा गई उंघमां, पछी वर पस्ताय ' एना जेवुं थवानुं. शाणा माणसने एटली शिखामण बस छे. संसारिक पाप आरंभमां रगदोळायाथी मलीन थई गया छतां छेवट निर्मळ थवा इच्छता भव्य जनोए पवित्र तीर्थस्थळमां आवीने अद्भूत वीर्योल्लासथी प्रभु प्रतिमानुं अथवा निर्ग्रंथ साधु पुरुषादिकनुं उत्तम आलंबन लही स्थिर चित्तथी चपलता रहित प्रेम पूर्वक—रुचि बहुमान सहित प्रभुनो पवित्र मार्ग आदरवो जोइए अने अनादि काळथी दृढ-रुढ थयेला दोष जाळनो उच्छेद करवा प्रबळ पुरुषार्थ सेववो जोइए. शत्रुंजयादिक महातीर्थना उच्च प्रदेशमां सद्गुरुना चरणमां आवीन

रही यथाशक्ति तप जप संयमवडे अनादि कर्म मळनो क्षय करवा उजमाळ थवुं जोइए. पूर्वे अनंत आत्माओए पवित्र रत्नत्रयीनुं यथार्थ आराधन करी जेम सकळ कर्मनो क्षय करी शाश्वत सुख मेळव्युं छे तेम भाविक जनोए रत्नत्रयीनुं आराधन करवा अत्यारे पण लक्ष राखवुं जोइए. शाश्वत–मोक्ष सुख मेळववुं एज आपणुं साध्य बिंदु होवुं जोइए; अने एनोज उपाय गवेषीने आदरवो जोइए.

शाश्वत–मोक्ष सुखनो उपाय.

तत्त्वार्थ सूत्रकार कहे छे तेम सम्यग् दर्शन, ज्ञान अने चारित्र रूप रत्नत्रयीनुं सेवन करवुं ए मोक्ष प्राप्तिनो अमोघ उपाय छे.

श्री जिनेश्वरे (सर्वज्ञ परमात्माए) भाखेलां तत्त्वोमां यथार्थ श्रद्धान ते सम्यग् दर्शन अथवा सम्यक्त्व, ते तत्वोनो निर्मळ [चोख्खो शंका रहित] अवबोध ते सम्यग् ज्ञान अने ए उभयना परिणामे तजवा योग्यनो त्याग अने आदरवा योग्यनो आदर ए सम्यक् चारित्र जाणवुं. अथवा आत्माने अनंत विभूति (सत्तागत गुण समृद्धि) नी प्रतीति थवी ते सम्यक्त्व, तेनुं यथार्थ भान थवुं ते ज्ञान अने ए उभयना परिणामे स्वरूप स्थिरता कहो के निज गुणमांज रमणता थवी ते चारित्र, ए रीते आत्मश्रद्धा, आत्मज्ञान अने आत्मरमणता रूप रत्नत्रयीनुं संसेवन करवुं एज मोक्षनो खरो उपाय छे.

शत्रुंजयादिक महातीर्थादिकनुं सेवन पण एज हेतुथी करवानुं छे. ए पूर्वोक्त रत्नत्रयीरूप मोक्ष मार्ग पामवा माटेज अने एमांज आगळ वधवा माटेज शुद्ध देव–गुरुनां, सत्पुरुषोनां, शत्रुंजयादिक पावन

तीर्थोनां, तेमज तेमां पावन थवा आवता अने आवेला शासन रसिक श्री चतुर्विध संघनां दर्शन, स्पर्शन, बहुमानादिक सद्भावथी करवानां छे. ए लक्ष भाविक यात्रिकोए सदाय राखी रहेवानुं छे–भूलवानुं नथी. ए लक्ष वगरनी करणी एकडा वगरना मींडाजेवी जाणवी. पवित्र तीर्थ स्थलोमां पुन्ययोगे अनायासे अथवा अल्प श्रमे प्राप्त थता सत् समागमनो अपूर्व लाभ लही, बने तेटली तत्त्व गवेषणा करवी. स्व शंकास्थळोनुं समाधान मेळवी निःशंक थावुं, अने एम तत्त्वज्ञान वडे आत्म श्रद्धा रुप समकितनो पायो मजबूत रची ते उपर यथाशक्ति व्रत नियम अंगीकार करी लेवा रुप शुभ इमारतनुं चणतर करवुं बहुज हितकारी छे. पण आ बधुं जो कल्पित सुखनी इच्छा–कामना रहितज (निष्कामपणे) करवामां आवे तो परिणामे ते अक्षय–मोक्ष सुख आपवावाळुं थई शके. क्षणिक अने कल्पित सुखनी आशाथी धर्म करणी करवी ए तो बोरनी खातर चिंतामणिरत्न गुमावी देवा जेवुं जाणवुं. एम समजीनेज मोक्षना अर्थी मुमुक्षु जनो आ लोक संबंधी क्षणिक अने कल्पित सुखनी इच्छा के आशा राख्या वगर ज केवळ निष्कामपणेज धर्म साधना करे छे अने एज रीति–नीति अख्त्यार करवी हरेक आत्मार्थी जीवने खरेखर हित कारक छे.

वेदादिक अन्य शास्त्रोमां पण मोक्षना उपाय तरीके कहेवामां आवेलुं अत्र प्रसंगागत जणाववामां आवे छे. तेमां कह्युं छे के " मोक्ष–सुख मेळववानो उपाय, परमात्म स्वरूपनुं यथार्थ ज्ञान थवुं एज छे." अत्र प्रस्तावे ' प्रभुपणे प्रभु ओळखीरे, अमल विमल गुण धाम; साध्य दृष्टि साधकपणेरे, वंदे धन्य नर तेह ' इत्यादिक आप्त वचनो तेनुं समर्थन करे छे. " मननो लय करवो ए परमात्म स्वरुपनुं ज्ञान

थवानो उपाय छे " (योगी-योगनिष्ट-संयमी पुरुषो एनो अनुभव करी शके छे.) " शुद्ध-निष्कामपणे कर्म-उपासना करवी ए मनना लयनो उपाय छे. " तेमज वळी

" आ सर्व जगत् विनाशी छे एम विचारपूर्वक जाणवुं अने अनुभववुं अने तेवो दृढ निश्चय करवो, ए निष्काम थवानो उपाय छे. (शान्त सुधारस भावनामां पण एवोज उदार आशय समायेलो छे.) अने एज भावनुं अनेक महाशयोए अनेक रीत्या समर्थन करेलुं जणाय छे. जेमके—

" ताहरुं ध्यान ते समकित रूप, तेहिज ज्ञान अने चारित्र तेह छे जी; तेहथी जाये सघळां हो पाप, ध्याता रे ध्येय स्वरुप होये पछे जी." इत्यादिक अनेक आप्त पुरुषोनां वचनो अत्र समर्थन रुप छे.

जे भव्यजनोने तारे अथवा तरवानुं सामर्थ्य आपे, जेनावडे भव्यजनो भव सायर तरी पेले पार जइ शके, ते तीर्थ स्थावर अने जंगम बे प्रकारनां छे. तेमां श्री शत्रुंजयादिक स्थावर तीर्थ छे त्यारे शासनरसिक श्री गणधर प्रमुख चतुर्विध संघ जंगम तीर्थ गणाय छे. मोक्षार्थी जनोए ए उभय प्रकारना तीर्थनो यथायोग्य विनय सत्कार करवो अत्यंत हितरुप छे. परंतु बंने प्रकारना तीर्थमांथी कोइनो पण अनादर करवो योग्य नथी. विकथादिक प्रमादाचरणनो त्याग करी ते उभय प्रकारना तीर्थनो सर्व प्रकारे लाभ लेवा प्रयत्नशील थावुं ए आ मनुष्य जन्मादिक दुर्लभ सामग्री पाम्यानुं उत्तमोत्तम फळ समजवानुं छे. आवुं उत्तमोत्तम फळ मेळववा आपणे क्यारे भाग्यशाळी थइ शकिये ? ज्यारे आपणामां उक्त पवित्र तीर्थो प्रत्ये अविहड प्रीति--भक्ति जागे त्यारेज.

अविहड प्रीति–भक्ति केवी होय ?

प्रीति रीति कच्छु और है, जाणे जाणणहार;
गुंगे गुड खाया तेनो, स्वाद कहे शुं बार ?

अर्थ—खरी अंतरंग प्रीति (प्रेम–भक्ति) नी खुबी कंइ विलक्षणज छे. ए तो जे जाणता होय ते ज जाणे. एटले एवी अद्भुत प्रीति–भक्ति जेना हृदयमां जागृत थयेली छे, जेने तेनुं अपूर्व रसास्वादन मळ्युं छे अने तेथी जेनामां नवुं चेतन्य रेडायुं छे, ए विगेरे चिन्होवडे तेवी प्रेम–भक्तिनी खरी खूबी जेना जाणवामां–कळवामां आवी होय छे तेज तेने पिछानी शके छे. कोई मुंगे माणसे गोळ खाधो होय–तेनो रसास्वाद लीधो होय ते तेनुं स्वरुप बीजाने पोतानी शक्ति उपरांत होवाथी शी रीते समजावी शके ?

प्रीत मेह अरु मोरडी, आवत दे अति मान;
पुकारिके जगमें कहत, आवत मेह महान. २

अर्थ–मेघ अने मोरलीने जेवी प्रीत लागेली छे, तेवी अकृत्रिम प्रीत होवी जोइए. ज्यारे मेघ आवे छे–आववानी तैयारीमां होय छे त्यारे ते केकारव करी मुर्कीने जणावे छे के अमारा प्राणाधार अति व्हाला अने उपगारी महान् मित्र–मेघराज पधारे छे. २

मेह पिछानत मोर नहीं, मोर करी तस प्रीत;
पूर्व जन्मके कर्मथे, होत प्रीत इस रीत. ३

अर्थ–जो के मेघराज मोरने कंई ओळखता पाळखता नथी तेम तेने मोरनी तमा (दरकार) पण नथी, छतां जेम मोर मेघना मंगळकारी गुणोनी पिछान करी तेनुं आवागमन हृदयना उमळकाथी वधावी ले छे अने मुक्त कंठथी तेना नामोत्कीर्तन पूर्वक गुण गाय छे; यावत् मेघने देखी देखी जेम ते नाचे माचे छे तेम पूर्वोपार्जित कर्मना संबंधथी एवा प्रकारनी गाढी प्रीति बंधाय छे के जे अंतरनी होवाथी अनुकूळ–प्रतिकूळ संयोगोमां पण कायम बनी रहे छे, अने परिणामे स्वपर उभयने अनेक जातना उत्तम लाभ समर्पे छे.

प्रीत प्रीत सब जन कहे, जुदी प्रीतकी रीति;
लोह चमक जड दोउ पें, देखत चलन सुनीति. ४

अर्थः–प्रीत प्रीत सहु कोई मुखथी पोकारे छे, पण प्रीतनी रीत कंई विलक्षण ज छे. जुओ! लोह [लोढुं] अने चमक उपल (लोहचुंबक पाषाण) ए बंने जड पदार्थ छतां एक बीजा तरफ केटलुं बधुं आकर्षण छे? खरी प्रीति–भक्ति एवी आकर्षणवाळी अने दंभ वगरनीज होवी जोइए अने एवी अकृत्रिम उल्लसती प्रीति--भक्तिज भक्त जनोने बहु लाभप्रद थाय छे.

ली. पवित्रशासनरुचि मुनि कर्पूरविजय.

अनुक्रमणिका.

सूचना.

आ पुस्तक खपी जनोने भेट तरिके आपवानुं छे माटे पोष्ट खर्चनी एक आनानी टीकीट मोकलीने प्रसिद्धकर्ता पासेथी अगर नीचेना सीरनामेथी मंगावी लेवुं.

शा. शिवनाथ लुंबाजी जेन पुस्तकालय.
ठे. वेतालपेठ नं ४९. पुना सीटी.

श्री शत्रुंजय महातीर्थ
यात्रा विधि.

श्री शत्रुंजय माहात्म्य.

प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवानना आदेशथी तेमना प्रथम गणधर श्री पुंडरीक महाराजाए जगतना कल्याण माटे सर्वतत्त्वयुक्त अने अनेक आश्चर्यथी भरेलुं ' श्री शत्रुंजय महातीर्थनुं माहात्म्य ' सवालाख श्लोकोथी प्रगट कर्युं हतुं. त्यारबाद श्री महावीर स्वामीना शासनथी तेमना गणधर श्री सुधर्मास्वामीए भावी मनुष्योनां आयुष्य अति अल्प जाणी तेमना उपकार माटे उक्त माहात्म्यने संक्षेपी २४ हजार श्लोक प्रमाण कर्युं. त्यार पछी श्री सौराष्ट्र देशना महाराजा 'शिलादित्य'ना आग्रहथी तेमना समर्थ गुरु "श्री धनेश्वरसूरिए" तेमांथी सार सार ग्रही वल्लभीपुरमां लगभग १० हजार श्लोक प्रमाण सुख-बोधक शत्रुंजय माहात्म्य बनाव्युं. आ सुखबोधक श्री शत्रुंजय माहात्म्य उपरांत एक शत्रुंजय लघुकल्प अने बीजो शत्रुंजय महातीर्थकल्प ए

पण पूर्व महापुरुष प्रणीत होवाथी प्रमाणभूत छे. तेमां पण बहु अगत्यनी बाबतनो समावेश करेलो छे. ज्ञातासूत्र तथा अंतगड दशांग सूत्र पण आ पवित्र तीर्थराजनी उत्तम साक्षी आपे छे.

तीर्थराजनां उत्तम २१ नाम.

१ शत्रुंजय, २ बाहुबली, ३ मरुदेव, ४ पुंडरीकागिरि, ५ रैवतगिरि, ६ विमलाचल, ७ सिद्धराज, ८ भगीरथ, ९ सिद्धक्षेत्र, १० सहस्रकमल, ११ मुक्तिनिलय, १२ सिद्धाचल, १३ शतकूटगिरि, १४ ढंक, १५ कोडी निवास, १६ कदंबगिरि, १७ लोहित्य, १८ तालध्वज, १९ पुण्यराशि, २० महाबल अने २१ दृढ शक्ति. ए तेनां सुप्रसिद्ध उत्तम २१ नाम छे. शत्रुंजय महातीर्थ कल्पमां कंइ पाठांतरे जुदां नाम पण कह्यां छे. उक्त बधां नाम सुर नर अने मुनिजनोए तेना उत्तम गुणने अनुसरी पाडेलां छे. वळी तेनां १०८ नाम पण संभळाय छे, जेमांनां ९९ नाम तो नवाणुं प्रकारनी पूजामां ज आवेलां छे. ते नवाणुं नाम उपरांत बीजां पण नाम श्री शत्रुंजय माहात्म्य प्रमुखमां देखाय छे. ए बधांए नाम कंइने कंइ उत्तम हेतुथी ज प्रसिद्ध थयेल छे तेमां पण ढंक, कदंब, कोडीनिवास, लोहित्य अने तालध्वज ए पांच कूट तो देवताधिष्टित रत्नखाणो, गुफाओ, औषधी अने रसकुंपिका युक्त छे. ते पांच कूट सजीवन कहेलां छे.

तीर्थराजनुं मान–प्रमाण.

दरेक अवसर्पिणी काळना प्रथमादिक छ आरामां तेनुं मान अनुक्रमे ८०, ७०, ६०, ५०, १२ योजन अने ७ हाथनुं घटतुं कहेलुं

छे. तेवीज रीते उत्सर्पिणी काळना चढता छ आरामां तेनुं मान अनुक्रमे ७ हाथथी वधतुं जतुं छेवटे ८० योजन प्रमाण थइ जाय छे. ऋषभदेव (प्रथम तीर्थंकर)ना समये तेनुं मान उंचपणे ८ योजन, मूळमां विस्तार ५० योजन, अने उपर शिखर तळे १० योजन हतुं. ए त्रीजा आराना छेडे रहेलुं गिरिनुं मान जणाव्युं. तेवीज रीते चोथा आराना छेडे मूळ घेरावमां १२ योजननुं मान समजी लेवुं.

सिद्धाचळ उपर तीर्थंकरोनुं अवारनवार आगमन.

अतीत काळमां ऋषभसेन प्रमुख असंख्य तीर्थंकरोए गिरिराज उपर समवसरी अनेक जीवोने उद्धरी पोते सिद्धिपदने पाम्या छे. भविष्यकाळमां पद्मनाभ प्रमुख तीर्थंकरो अहीं आवी समवसरशे, तेमज वर्तमान चोवीशीमां श्री नेमिनाथ वगर २३ तीर्थंकरो आवी समवसर्या छे. केवळज्ञान–दर्शनवडे अनंत लाभ जाणीने, तीर्थंकर भगवानो अत्र अवारनवार आवी समवसर्या छे तेमां पण वर्तमान चोवीशीना प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान तो पूर्व ९९ वार अत्र आवी समवसर्या छे.

प्रथम तीर्थंकर भगवानना प्रथम गणधर श्रीपुंडरीक महाराज अत्र एक मासनुं अणसण पाळी चैत्री पूर्णिमाना दिवसे पांच क्रोड मुनिओ साथे मोक्षपद पाम्या छे, ते दिवसथी आ गिरिराज "पुंडरीक" नामथी प्रसिद्धि पाम्यो छे.

ऋषभदेव भगवान पहेलां १८ क्रोडाक्रोड सागरोपम जेटलो काळ धर्म [1]व्यवधान पडेलुं तेथी ते वखते भावी जनोना कल्याण अर्थे सौधर्म

1 अंतर.

इंद्रना आदेशथी प्रभुना पुत्र भरत चक्रवर्तीए प्रभुना मुखथी श्रीतीर्थ-राजना गुण सांभळी श्रीसंघपति तीलक करावी चक्रवर्ती संबंधी सकळ समृद्धि साथे लइ श्रीनाभ गणधरने आगळ करी श्रीतीर्थराजने भेटी त्यां वर्धकी रत्ननी पासे २२ जिनालय युक्त उत्तुंग श्रीऋषभदेव प्रासाद बनाव्यो. २२ जिनालय साथे श्रीऋषभदेव प्रभुनो प्रासाद बनाववानो हेतु ए जणाय छे के नेमिनाथ शिवाय २३ तीर्थंकरो अत्र समवसरेला छे.

संघपति थइ संघ साथे यात्रा करवा आवनारनो विवेक.

प्रथम उत्तम गुरुमहाराज पासे अक्षत वासक्षेप कराववो. त्यार-बाद महर्धिक श्रेष्ठी प्रमुखे संघपतिने तेमज संघवणने उत्तम पुष्पमाळा पहेराववी. पछी संघपति सर्व स्थानकथी श्री संघने आमंत्रण करी बोलावे अने स्वनगर चैत्योमां प्रथम महोत्सव करे. पछी ज्ञानी गुरु-जनोने भक्तिथी पोताना घरे बोलावी सर्व विघ्नोनो नाश करवा माटे प्रथम शांतिकर्म करावे, जेथी मंत्रोवडे प्रत्यक्ष थयेला देवताओ निर्विघ्ने यात्रा पूर्ण करावे. संघपति साथे एक मनोहर चैत्य श्री आदीश्वरप्रभुनी प्रतिमा युक्त राखे. शुभदिवसे शुभमुहूर्ते शुभशुकनयोगे त्यांथी प्रयाण करे. गुरु महाराजने आगळ करी, मार्गमां जिनशासननी प्रभावना करता, जीर्ण चैत्यादिकनो उद्धार करतां, दीन दुःखीने योग्य [1]आलंबन देता अने संघ साधर्मिक जनोनी यथायोग्य भक्ति करता अनुक्रमे

1 सहाय.

तीर्थराज नजदीक आवे. अहींथी तीर्थराजनां दर्शन थाय छे एवी वधामणी आपनारने अति उदारताथी 'तुष्टिदान' आपे. अने गिरिराजनां साक्षात् दर्शन करी वाहननो त्याग करी विकस्वर लोचनवडे तिर्थाधिराजने निरखी पंचांग प्रणाम करी प्रभुना चरणनी पेरे गिरिराजनी सेवा करे. गिरिराजने वगर देख्यां पण श्री संघनी भक्ति करवाथी बहु लाभ थाय छे, तो पछी गिरिराजने साक्षात् नजरे जोया बाद श्री संघनी भक्ति करवाना फळनुं कहेवुंज शुं? गिरिराजनां दर्शन थया बाद त्यांज निवास करी संघपतिए महाधर्वोनी साथे उपवास करवो अने शुद्ध थइ उत्तम वस्त्र अलंकार धारी पत्नी सहीत देवालयमां आवी प्रभुनी स्नात्र पूजा करवी. पछी उत्तम धूप दहन करी मंगळ ध्वनि सहित मंगळ गीत गातां श्री गिरिराज तरफ थोडां पगलां जइ उत्तम यक्ष कर्दमवडे भूमि उपर विलेपन करी श्री संघने स्वस्ति—कल्याणकारी एवो अक्षतनो के मोतीनो एक स्वस्तिक (साथीओ) करवो. पछी वधो कोलाहल शांत करावी गुरु महाराजने आगळ करी संघपतिए विधविध द्रव्योथी पूजनोत्सव करवो, अने संघ पूजा साधर्मिवात्सलय तथा देवालयमां संगीत भक्तिभावथी करवां. ते समये महाधर्वोए तेमज अन्य महाशयोए पण पत्नी सहित संघपतिनी वस्त्रालंकार तथा पुष्पमाळाथी बहु मानपूर्वक पूजा करवी. ते दिवस देवगुरुनी भक्ति करतां सहुए त्यांज रहेवुं अने भरत महाराजनी पेरे श्री तीर्थराजनी स्तुति करवी. जे भव्यजनो भक्तिभावथी गिरिराजनी स्तुति करे छे ते स्वस्थाने रह्या छतां तीर्थयात्रानुं उत्तम फळ पामे छे.

बीजा दीवसे प्रभाते संघ सहित जिनालयमां जइ तीर्थंकर भगवंतने तथा गुरु महाराजने वंदना करी संघपति विगेरे पारणुं करे. त्यार बाद गुरु महाराजने आगळ करी संघपति संघ सहित श्री तीर्थराजने भेटवा आतुरता धारी आगळ चाले, मंगळ ध्वनि सहित श्री गिरिराज उपर चढतां वाटमां गिरिराजनी अद्भूत शोभा जोइ दीलमां अति आल्हाद पामे.

गिरिराजनो अद्भूत महिमा.

अन्य स्थळे अति उग्रतप अने ब्रह्मचर्यथी जे फळ मळे ते अत्र शुद्धभावथी निवसवावडे ज प्राप्त थइ शके छे.

कोटि गमे मनुष्योने इच्छित भोजन कराववाथी जे फल प्राप्त थाय ते अत्र एक उपवास मात्रथी प्राप्त थइ शके छे.

स्वर्ग मृत्यु अने पातालमां जे जे तीर्थो छे, तेमनां दर्शननुं फळ पुंडरीक गिरिराजने भावथी भेटवा वडे प्राप्त थइ शके छे.

श्री शत्रुंजयना मार्गमां यात्रार्थे जता साधु संघनी भक्ति, प्रभावना, वैयावच्च प्रमुख करतां गिरिराज दूर होय त्यां सुधी क्रोड गणुं फळ अने साक्षात नजरे पडतां अनंतगणुं फळ प्राप्त थइ शके छे.

जे जे महानुभाव मुनिओने अत्र केवळज्ञान उत्पन्न थयुं छे, तेमज निर्वाण प्राप्त थयुं छे, ते सर्वने वंदन करवानुं फळ श्री पुंडरीक गिरिराजने भावसहित वंदन करतां प्राप्त थइ शके छे. अष्टापद,

समेतशिखर, पावापुरी, चंपापुरी अने गिरनारजीने वंदन करतां जे पुन्य फळ थाय तेथी सोगणुं फळ आ गिरिराजने शुद्धभावथी वंदना करवा वडे मळी शके छे.

अत्र प्रभु पूजा (शुद्ध द्रव्यथी) करनारने जे फळ मळे तेथी सोगणुं फळ शास्त्र रीति मुजब निर्माण थयेली जिनपडिमा भरावबाथी प्राप्त थाय छे. हजार गणुं फळ शास्त्र रीतिथी जिनभुवन करावतां मळे छे. परंतु आ तीर्थनुं यथार्थ रक्षण करनारने तो अनंत गुणुं पुण्य हांसल थइ शके छे. प्रभु आज्ञानुं रहस्य जाणी ते प्रमाणे परमार्थ दावे वर्तनारनीज बलिहारी छे. श्रेष्ठ फळ तेज मेळवी शके छे. आ गिरिराजने मन, वचन अने कायानी शुद्धिथी स्मरण करतो जे कोइ भव्यात्मा अत्र गिरिराज उपर शुभ निष्ठा राखी मोक्षफळनी इच्छाथी नवकारशी, पोरसी, पुरिमड्ढ, एकासणुं, आयंबिल अने उपवास करे छे, ते अनुक्रमे छट्ठ, अट्ठम, दसम (चार उपवास), दुवालस (पांच उपवास) अर्धमास अने एक मास उपवासनुं फळ मेळवी शके छे.

जे भव्यात्मा अन्न पाणी रहित (चोविहारो) छट्ठ करीने सात यात्रा (जयणा पूर्वक)करे छे ते त्रीजे भवे मोक्षपद पामी शके छे.

आज पण आ गिरिवरना पसायथी गमे तेवा आचार वगरना जीव पण अनशन आराधी सुखे स्वर्गे जइ शके छे.

आ गिरिराज उपर प्रभुभक्ति योग्य पूजोपगरण देवावडे भविष्यमां ते दाता उत्तम समृद्धि पामी शके छे.

आ तीर्थराज उपर ताजां अने उत्तम सुगंधि पुष्पोनी जयणाथी गुंथेली माळाओ चढाववा वडे मोटुं पुण्य बंधाय छे. (सोयवडे विंधेल्या फुलोनी माळा करतां छुटां सारां सारां फुल चढाववा वधारे श्रेयकारी छे. सोय घोंचवाथी फुलना जीवने केटली किलामना थती हशे ते आपणा पोताना ज दाखलाथी सहज समजी शकाय तेवुं छे. वधारे शक्ति होय तो श्रेष्ठ सुगंधि फुलोना पगर पण भरावी शकाय. आ बाबत चालतो अविधि दोष टाळवा दरेक भव्यजने खास लक्ष देवानी जरूर छे.)

आ गिरिराज उपर कृष्णागरु प्रमुखनो धूप करवाथी १५ उपवासनुं फळ मळे छे. अने उत्तम कपूरमिश्रित धूप करवाथी एक मास उपवासनुं फळ मळी शके छे. वळी साधु--मुनिराजने शुद्ध आहार पाणी वस्त्र पात्र औषध भेषज अने रहेवा स्थान विगेरे आपवाथी केटलाक मासना उपवासनुं फळ मळे छे.

अन्य तीर्थोमां सुवर्ण भूमि अने भूषणोनुं दान देवाथी जे पुन्य प्राप्त थाय ते आ गिरिराज उपर प्रभुनी पूजा अने स्नात्र मात्रथी प्राप्त थइ शके छे.

जे भव्यात्माओ श्री शत्रुंजय गिरिराजने सदाय पोताना हृदय कमळमां ध्याया करे छे तेओ सकळ महाभयोथी मुक्त थाय छे. जो के संख्या रहित तीर्थंकरादिकना चरण स्पर्शवडे तथा अनंत कोटा कोटी जनो अत्र सिद्ध (सर्वथा कर्म मुक्त) थवा वडे आ महातीर्थ सदाय पूजनीय छे तोपण भव्य जनोने विशेषे आलंबनभूत थाय एवा हेतुथी

इन्द्र महाराजनी प्रेरणा वडे भरत चक्रवर्तीए अत्र एक ऋषभ प्रभुनो प्रासाद बावीश जिनालय युक्त बनाव्यो. ते प्रथम उद्धार.

बीजो उद्धार सगर चक्रवर्तीए श्री अजितनाथ प्रभुना समये कराव्यो. ते वखते प्रथमनी रत्नमय प्रतिमा तेमणे पडतो काळ जाणी सुवर्ण गुफामां पधरावी दीधी.

ते सुवर्ण गुफामां विराजमान करेली रत्नमयी श्री ऋषभ प्रतिमाने कोइ धन्य कृतपुन्य भव्य आत्माज जोइ शके छे. तेने माटे बृहत् शत्रुंजय कल्पमां आवो अधिकार कहेलो छे के—चेलण तलावडी समीपे रहेली (देवाधिष्ठित) गुफामां पधरावेली भरत महाराजाए करावेली प्रभु प्रतिमाने भेटनार—नमन करनार महा पुरुष एकावतारी थाय छे. दधिफळ (कोठां) ना वृक्ष समीपे अलख्ख देवडीनी नजदीकना भागमां मोक्षना द्वार जेवुं ते सुवर्ण गुफानुं द्वार उघाडीने अठ्ठम तपना आराधनथी तुष्टमान थयेलो कपर्दी यक्ष ते गुफामां पधरावेली भरते भरावेली प्रभु प्रतिमाना दर्शन करावे छे. (ते महानुभाव भवि आत्मा एकावतारी थइ मोक्ष पामेछे). महाविदेह क्षेत्रमां विचरता (विहरमान) सीमंधर प्रभु पण त्यां रहेला भव्यजनो आगळ (द्वादश पर्षदा मध्ये) श्री शत्रुंजय महातीर्थना गुण गाय छे एवुं एनुं अदभुत माहात्म्य छे.

आ गिरिराज उपर असंख्य उद्धार, असंख्य जिनमंदिरो, अने असंख्य प्रतिमाओ पुन्यशाळी जीवोए करावेल छे. तेमां मोटा १६ उद्धारनी वात ९९ प्रकारनी पूजा विगेरेमां सुप्रसिद्ध छे.

तीर्थयात्रा करतां पाळवी जोइती छ री.

१ सचित परिहारी—काचुं पाणी, काचां धान्य, काची वनस्पति (फळ फुल वगेरे) ते बधां अपरिपक्व होय, सचेत होय, त्यांसुधी तेवां खानपाननो त्याग.

२ एकलआहारी—एक स्थाने बेसीने नियमीत एकज वखत निरवद्य-निर्दोष अन्न पाननुंज सेवन करवुं.

३ गुरु साथे पदचारी—गुरु महाराजने आगळ करी तेमनी पछवाडे विनयपूर्वक उघाडा पगे वाहन वगर चालवुं.

४ भूमिसंथारी—माचा, पलंग तजी केवळ भूमि उपर संथारवुं.

५ ब्रह्मचर्यधारी—यात्राना दिवसोमां स्त्री पुरुषोए विषय क्रिडानो संतोषवृत्तिथी त्याग करी निर्मळ शील पाळवुं.

६ आवश्यक दोयवारी—उभय टंक देवसी अने राइ प्रतिक्रमण करी लागेलां कंइ पण दूषण टाळवा खपी थवुं; अन्य स्थळे "आवश्यक दोयवारीना बदले शुद्ध सम्यक्त्वधारी" एम कहेलुं छे. एटले कोइ प्रकारना लौकिक के लोकोत्तर मिथ्यात्त्व सेवनथी सदंतर अलगाज रहेवा प्रयत्नशील थावुं.

नवाणुं यात्रा करनारे उक्त छरी उपरांत करवानी करणी.

१ एक लक्ष नवकार—महामंत्रनो जाप पुरो करवो. उक्त जाप स्थिर चित्तथी (मन वचन अने कायानी शुद्धिथी) गणवो उचित छे. जाप गणतां कोइ साथे वार्तालाप नज करवो. मार्गमां चालता

गणवा करतां स्थिर मुकामे गणवो सारो छे. केमके चालतां जीव जयणा पाळवानो खास खप करवो जोइए. जो हर हमेश (बांधी) १० नवकारवाळी गणी शकाय तो ९९ दिवसे ते जाप पुरो थइ शके. कारणसर कदाच न गणी शकाय तो ते आगळ पाछळ गणीने पण छेवटे पुरो लक्ष जाप गणी देवो.

२ प्रतिदिन तीर्थ जळादिकथी शुद्ध थइ शुद्ध वस्त्र अलंकार धारण करी जयणा सहित, बनी शके त्यां सुधी निरंतर एक एकज यात्रा आशातना टाळीने करवी.

३ हरहमेश बनी शके त्यां सुधी अष्ट प्रकारी पूजा करवी. तेमां वापरवानां द्रव्य पोतानां घरनां शुद्ध निर्दोष वापरवां.

४ जोके दरेक जिनमंदिरमां प्रभुनां दर्शन करतां ' नमो जिणाणं ' अथवा एकाद नमस्कार श्लोक प्रमुखथी सामान्य चैत्यवंदन तो करवुंज, परंतु मनहर पांचेक स्थळे विशेषे चैत्यवंदन प्रमुख करी भावनी वृद्धि थाय तेम करवुं.

५ मूळनायक श्री आदीश्वर भगवानना देरासर फरती त्रण प्रदक्षिणा (बनतां सुधी बीजां बधां चैत्योनां दर्शन साथे साथेज थइ जाय तेम) दरेक यात्रा वखते देवी.

६ श्री तीर्थराज आराधन अर्थे तेमना उत्तम गुणनुं स्मरण करीने प्रतिदिन ९ खमासमण देवां. तेमज नव लोगस्सनो काउस्सग विगेरे यथायोग्य करवुं.

७ ९९ यात्रानी पूर्णाहुति थतां एकी साथे मूळनायकजीना चैत्य फ-

रती ९९ प्रदक्षिणा तेमज १०८ खमासमण देवां. तेवीज रीते यथाशक्ति विशेष प्रकारे प्रभुनी पूजा (९९ प्रकारी विगेरे) भणाववी अने तेवे प्रसंगे यथाशक्ति द्रव्य भावथी भक्तिनी वृद्धि थाय तेम लक्ष राखवुं.

८ बधी पागोनी फरसना करवा उपरांत गिरिराजनी ६ गाउनी, १२ गाउनी विगेरे प्रदक्षिणा फरवा बनतो खप करवो. तेवे प्रसंगे यतनां सुधी खुल्ला पगे चाली जयणापूर्वक पूर्वोक्त मर्यादा सहित गिरिराजनी सेवा भक्ति करवी.

९ प्रतिदिन यात्रार्थे जतां मार्गमां प्रभुनी पादुकाओ तेमज सिद्ध थयेला महाशयोनी प्रतिमाओ आवे तेमने भाव सहित नमन पूजन विगेरे करवा लक्ष राखवुं. पासे थइने अनादर करी चाल्या जवुं नहि.

सात छठ्ठ अने बे अट्ठमनो तप करी श्री गिरिराजनुं ध्यान करतां यात्रादिकनो प्रमाद रहित लाभ लेवो.

साते छट्ठमां अनुक्रमे आवी रीते जाप जपतां २० नवकारवाळी गणवी. तेमज २१ लोगस्सनो काउस्सग्ग तथा २१ खमासमणां (गिरिराजना उत्तम २१ गुण गर्भित नामना दुहा बोलीने) देवां.	१ श्री आदीश्वर परमेष्ठिने नमः २ श्री आदीश्वर अर्हते नमः ३ श्री आदीश्वर नाथाय नमः ४ श्री आदीश्वर सर्वज्ञाय नमः ५ श्री आदीश्वर पारंगताय नमः ६ श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रपुंडरीकाय नमः ७ श्री सिद्धक्षेत्र पुंडरीक विमल-गिरिवराय नमः
बन्ने अट्ठममां....	....८-९ श्री सिद्धाद्रि शत्रुंजय सिद्धगिरिवराय नमः

खास अगत्यनी सूचना (लक्षमां राखवा योग्य.)

१. जयणा पूर्वक साते शुद्धि साचवीने यात्रार्थे जतां विकथादिक प्रमाद सेववो नहि. विकथाथी पोतानुं तथा परनुं पण बगडे छे. तेथी हृदयमां श्री गिरिराजना गुणनुं स्मरण करतां करतां वधता शुभ परिणामे उपर चढवुं.

२. धर्मनुं मूळ विनय होवाथी नम्रता राखी चालवुं. यात्रार्थे जतां देहनुं दमन करवुं. खास मोटी मांदगी विगेरे कारण वगर 'डोळी' करी तेमां बेसी जवा करतां खुल्ला पगे चालीनेज बीजा कोईने तकलीफ आप्या शिवाय यात्रा करवी. प्रभु पूजा चैत्यवंदनादिक वखते पण विनयगुण विसरी जवो नहि. सद्‌गुणी साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका विगेरेनुं यथायोग्य मान साचववा भूलवुं नहि.

३. तीर्थजळ पवित्र होवाथी तेने उष्ण करी के करावी स्नान करवा करतां ते शुद्ध जळथीज जयणा पूर्वक स्नान करी प्रभु पूजनमां प्रवृत्त थवुं युक्त छे.

४. यात्रा पूजादिकमां भाईओए तेमज व्हेनोए बरावर पोतपातानी मर्यादा साचववा संभाळ राखवी. एकज स्थळे पूजन विगेरे करतां मर्यादा जळवाय नहि तो बीजा स्थळे भाव सहित प्रभुभक्ति करी लेवी.

५. डुंगर पूजा करवा जतां मार्गमांज पगथीयां उपर पुष्पादिक चढाववा करतां खास नियमित स्थळोए के डुंगरमांनी कोई अलायदी शीला उपर पुष्पादिक चढाववा युक्त छे. तेवे प्रसंगे नजरे पडती

अशुचि विगेरे आशातना दूर करवा कराववा पूरतुं लक्ष राखवा चुकवुं नहि.

६ स्नान करती वखते पहेरवानुं वस्त्र पोतपोतानुं अलायदुंज राखवुं दुरस्त छे, तेमज तेज वस्त्रथी भीनुं अंग नहि लुछतां अलायदा अंगुछा विगेरेथीज शरीर साफ करवुं युक्त छे. एम करवाथी शरीरनी आरोग्यता जळवाशे अने अन्यथा थती आशातना पण दूर थइ शकशे. आ बाबत उपेक्षा करवी नहि.

७ प्रभु पासे धरवा माटे फळ, फूल विगेरे जे उत्तम द्रव्य लइ जवानां होय ते जेम तेम अनादरथी नहि लइ जतां आदर पूर्वक लइ जवां. मार्गमां जतां केटलाक मुग्ध यात्रालुओ श्रीफळने चोटीथी झाली लइ जता देखाय छे ते अनुचित छे. श्रीफळ आदिक आदर सहित बे हाथमां अथवा स्थाळ प्रमुखमां राखीनेज लइ जवुं उचित छे.

८ यात्रार्थे जतां उपर मार्गमां पण कोई पण प्रकारे अशुचि प्रमुख आशातना न थाय एवी संभाळ राखतां रहेवुं.

९ यथाशक्ति पोरसी प्रमुखनुं पच्चखाण करीनेज उपर चढवुं. केमके अत्रे करेलुं थोडुं पण पच्चखाण महान् लाभ आपे छे.

१० आ क्षेत्रमां हरेक रीते सीदाता साधर्मी भाईओने विवेक सहित सहाय आपी धर्ममार्गमां जोडवा प्रयत्न करवो.

११ देह उपरनी माया ओछी करी सुखशीलपणुं तजीने अत्रे स्वशक्ति अनुसारे दान, शील, तप अने भावरुप धर्मनुं सारी रीते

सेवन करवुं. आ पुण्यक्षेत्रमां विवेकथी करेली धर्मकरणी महालाभकारी थाय छे.

१२. प्रतिदिन बनतां सुधी जयणापूर्वक (जीवनी विराधना न थाय तेम) एकज यात्रा करवी. म्होटा पर्व दिवसे बीजी यात्रा करवा खास ईच्छा थाय तो ते बहु स्थिरता साथे जयणा पूर्वक विधि युक्त करवी.

१३ केटलाक अणसमजु भाइओ देरासर के देरी विगेरेनी भींतो उपर पेनसील के कोयला वती पोतानां नाम लखी के गमे तेवां चित्र काढीने भींतोने काळी करी आशातना करे छे. आवी रीते पोतानुं नाम अमर करवाने इच्छता मूढ जनो पोताना नाम उपर तीर्थनी आशातनारूप मशीनो कुचो दे छे माटे तेम समजु माणसोए जाते नहिं करतां करनारने समजाववा, वारंवार प्रयत्न करवो.

१४ केटलाक यात्रालुओ बहु अंधारामां यात्रार्थे जाय छे, तेम नहीं जतां सारी रीते अजवास थया बाद जयणा सहित पगे चाली यात्रा करवी युक्त छे.

१५. केटलाक यात्रालुओ खास कारण वगर डोळी करी यात्राओ करे छे तेथी तेमना निमित्ते डोळीवाळा उपर केटली जातनी आशातना करे छे ते संबंधी विचार करी समजु माणसोए तेवी अविधि आशातना तजीने ज बनतां सुधी यात्रानो लाभ लेवो जोइए.

१६ यात्रार्थे आवेला भाइ व्हेनोए प्रभुपूजा, गुरुवदंन, सत्त्वानुकंपा (प्राणी–दया), शुभपात्रदान, गुणानुराग अने शास्त्रश्रवणरुप पो-

तानां नित्यकृत्य विसारी नहि देतां ते नियमसर सेववां जोइए.

१७ अत्र सदा साधर्मिक जनोनी बनी शके तेटली सेवा भक्ति वडे आराधना करवी. परंतु तेनी कोई रीते विराधना तो करवी नहिंज.

१८ तीर्थभक्ति माटे जेटलुं तन, मन, धनथी कराय ते ओछुंज छे एम समजी जे कंइ यथाशक्ति करवामां आवे तेनो गर्व तो करवोज नहिं, पण पूर्व पुरुषोनुं दृष्टांत लई स्वलघुताज भाववी.

१९. अत्र प्रायः कोईपण जातना पापमां प्रवृत्ति न थाय तेवी काळजी राखवी. कोई पण नवली संगतिथी अळगा रहेवुं. सर्व जीवने आत्मा समान लेखी दयानी लागणी वधारवी अने परिणामनी शुद्धि करवी.

२० कोइने कर्कश—कठोर के मर्म वचन कहेवुं नहि. मिष्ट प्रिय वचन ज वदवुं. गमे तेवा प्रसंगमां पण असत्य अने कटुक वचन नज कहेवुं.

२१ आपणी वृत्ति देखी बीजा तेनी अनुमोदना करे अने तेनुं अनुकरण पण करे तेवी शांत–निर्मळ–प्रमाणिक–निष्कपट वृत्ति अत्र विशेषे राखवी. शासननी प्रभावनानो ए सरल रस्तो छे.

२२ कोइ प्रकारना दुर्व्यसनथी अत्र सदंतर दूर रहेवाज प्रयत्न करवो. आवा पवित्र स्थळे तो केवळ धर्म सेवननुंज व्यसन राखवुं.

२३ तीर्थ भक्तने छाजे तेवीज रहेणी कहेणी अत्र राखी रहेवुं.

२४ कोइ रीते अनीति के अन्यायने उत्तेजन मळे तेम नहि करतां, न्याय नीतिनेज उत्तेजन मळे तेम जाते करवुं, अने बीजा पासे कराववुं.

२५ आवा उत्तम तीर्थे आववानो शो हेतु छे? ते पार पडे छे के नहिं? तेमां कसुर थती होय तो तेने सुधारी लेवानी कायम काळजी राखी पोतामां जोतां रहेवुं.

२६ तीर्थंकर भगवान समान पवित्र आ तीर्थराजनी सेवा भक्तिनो लाभ आपणने अनेकवार मळे तेवी चीवट राखी प्रसंग पामी तेवो लाभ लेवा प्रमाद न करवो.

२७ कोइ पण प्रकारना कदाग्रहथी अत्र तद्दन दूरज रहेवुं.

श्री सिद्धगिरिना आश्रयथी उद्धार पामेला कंडूराजा.

पूर्वे कंडू नामे चंद्रपुरीनो राजा हतो. ते अनेक खोटां व्यसनोमां ग्रस्त महापापी अने यम जेवो क्रूर हतो. अनेक अन्यायाचरणथी प्रजा ने पीडतां तेने क्षयरोग उत्पन्न थयो, तेथी तेनो देह क्षीण थवा मांड्यो, एटले तेने मित्रनी जेम धर्मनुं स्मरण थयुं. मूढबुद्धिवाळा जीवो ज्यां सुधी सर्व रीते सुखी होय छे त्यांसुधी धर्मने किंचित् मात्र संभारता पण नथी. परंतु ज्यारे मृत्युनो भय लागे छे त्यारेज तेओ धर्मने याद करे छे.

एकदा ते कंडूराजा पोते करेलां अन्यायाचरणने संभारतां खिन्न चित्ते सभामां बेठो हतो, एवामां कल्पवृक्षना पत्र उपर लखेलो एक दिव्य श्लोक कोइए आकाशमांथी मूकेलो तेनी पासे आवी पड्यो. ते श्लोक तेना पुन्यशाळी पूर्वजोना पुन्यथी वश थयेली तेनी गोत्रदेवी

"अंबिकाए" तेने जाग्रत करवा नांखेलो हतो. तेनो भावार्थ ए हतो के "पूर्व भवमां करेलां सुकृतथी सघळी संपत्तिने पाम्या छतां जे महात्मा आ भवमां धर्मनेज विसारी देछे ते स्व स्वामीद्रोह करनार महापातकीनुं श्रेय शी रीते थइ शके ?" उक्त श्लोकनो भावार्थ मनमां विचारी पोते करेलां अनेक अन्यायाचरणने संभारी बहु खेद पामतो चिंतातुर थयेलो ते राजा रात्रीना वखते एकलो राज्य छोडी मरवाने माटे निश्चय करी चाली नीकळ्यो. जेवो ते नगर बहार नीकळ्यो के तरतज एक सुंदर गाय तेना जोवामां आवी. ते गाय राजानी साम धसी आवी तेने प्रहार करवा लागी. ते जोइ राजाए पण रीसथी खड्ग उगामीने ते गायना बे टूकडा करी नांख्या. तेमांथी एक हाथमां काती नचावती भयंकर स्त्री नीकळी. ते स्त्रीए आक्रोश करी तेने युद्ध करवा कह्युं. जेथी ते स्त्रीनां गर्वयुक्त वचन सांभळी जेवो तेनी साम खड्ग उगामवा जाय छे तेवामां ते स्त्रीनी कातीवडे पोताने बांधाइ गयेलो अने रुधिर झरतो जोइ कंडूराजा बहुज खेद पाम्यो, एटले ते स्त्रीए तेने पुनः युद्ध करवा जणाव्युं. तेथी ते शोकसागरमां डुबी गयो छतो विचारवा लाग्यो के—अहो ! दैव ज्यारे विपरीत थयुं त्यारे हुं एक स्त्रीथी पण पराभव पाम्यो. अहो ! हुं मरवा माटेज नीकळ्यो हतो ते भूली जइ में गौहत्यानुं महापाप कर्युं. हवे मारी शी गति थशे? हवे आपत्तिमां आवी पडेलो हुं शुं करुं ? अथवा "दव बळे त्यारे कूवो खोदवो शा कामनो ?"

आवी रीते ते शोकग्रस्त बनी विचार करतो हतो तेवामां तेने ते सुंदर युवती, जे अंबिका हती, तेणे कह्युं के हे मूढ ! हजी तारा चि-

त्तमां धर्म बुद्धि प्रगटी नथी. फक्त तुं दुःखाविष्ट थवाथी हवणां तेने संभारे छे. जोके मदांधपणे तें अनेक कुकृत्यो कर्यां छे, तोपण हवे तुं धर्मनो आश्रय ले. कारण के तेना जेवो कोइ उपगारी नथी. छेवटे पण जे तेनो आश्रय लेछे, तेने ते तारेछे. हुं "अंबिका" नामे तारी गोत्रदेवी छुं. तारी परीक्षा करवा माटे में आ बधी प्रवृत्ति करी छे. हजु तारामां धर्मनी योग्यता नथी, तेथी तुं देशाटन अने तीर्थाटन कर. क्षमायुक्त सर्व दुःख सहन कर. पछी ज्यारे तारामां योग्यता जोइश त्यारे फरी प्रगट थइ तने उचित मार्ग जरूर बतावीश. एम कही देवी अंतर्धान थइ गइ. कंडूराजा विचारे छे के हजु मारुं भाग्य जागतुं छे, के मारी गोत्र देवीए हित बुद्धिथी मने दर्शन दीधुं. हवे हुं प्रमादरहित एवो उद्यम करुं के जेथी थोडाज वखतमां धर्मने योग्य थइ आत्महित साधी शकुं. एम विचारी प्रभाते ते त्यांथी कोइ दिशा तरफ चाली नीकळ्यो. प्रसन्न चित्त थवाथी ते दुःख भूली गयो. पछी ते कोल्लाक गिरि उपर आवी रात्री वास रह्यो, पाछले प्रहरे कोइक वैरी यक्ष प्रगट थइ क्रोध युक्त वचनथी कह्युं के हे दुष्ट ! तें पूर्वे मने मारी, मारी स्त्रीनुं हरण कर्युंछे. ते तने सांभरे छे? हवे तारुं मरण नजदीक आव्युं छे माटे तारा इष्ट नुं स्मरण कर. एम कही तेणे तेनी बहु परे कदर्थना करी. छेवटे तेने कोइ एक गुफामां जीवतो मुकीने यक्ष अंतर्धान थइ गयो. आ वखते ते राजा पोते पूर्वे करेलां अन्यायाचरणने संभारी संभारी मनमां चिंतवे छे के आ दुःख ते शुं मात्र छे? शुं जाणुं तेनां केवां कटुक फळ आगळ भोगववां पडशे ?

एवी रीते पोतानां दुष्कृत्योनी निंदा करतो ते पापना क्षय माटे अहीं तहीं भमवा लाग्यो. एवामां तेनी गोत्रदेवी अंबिका प्रगट थइ बोली के हे वत्स ! हवे ज्यां त्यां फरवानी तने जरुर नथी. फक्त शत्रुंजयगिरिनुंज तुं सेवन कर. तें पूर्वे एवां दुष्कृत्यो कर्यां छे के ते गिरिराजनुं सेवन करवाथीज सर्व पापनो क्षय थइ शकशे ते वगर तेनो क्षय थइ शकशे नहि. एवी रीते गोत्रदेवीए कहेलां हितकारी वचनो सांभळी अने तेनांज मुखे ते गिरिराजनो प्रौढ महिमा श्रवण करी, अति उत्साहपूर्वक ते तीर्थराज तरफ चाली नीकळ्यो अने तेना दर्शन थाय त्यांसुधी तेणे खानपाननो त्याग कर्यो. अनुक्रमे गिरिराजनां अने एक शांत मुनिनां तेने दर्शन थयां. मुनिना सदुपदेशथी तेणे तेमनी पासे चारित्र अंगीकार कर्युं. चारित्र अंगीकार करी अनुक्रमे श्री तीर्थराजने शुद्ध भावथी भेटी, तीर्थाधिपति श्री आदिनाथनां वारंवार अनिमेषपणे दर्शन करी. ते महादुष्कर तप करवा लाग्यो. तेथी तेनां सकळ कर्म क्षीण थइ गयां अने शुद्ध ध्यान योगे ते शिवरमणीनो भोक्ता थयो. एवी रीते एक निष्ठाथी जे भव्यजनो श्रीशत्रुंजय तीर्थनुं तेमज श्री आदीश्वर प्रभुनुं सेवन करशे, ते पण कंडू नरपतिनी पेरे सर्व दुःखनो अंत करी अनुक्रमे परमपद पामशे. जितारी राजा पण ए तीर्थाधिराजना सेवनथी सर्व रीते सुखी थयो. शांतनु राजा पण पोताना पुत्रो सहित शत्रुंजय तीर्थ तथा श्री शत्रुंजयी नदीनुं सेवन करी पोतानां दुःखनो अंत करी सुख समृद्धि पाम्यो. पूर्व कर्मना योगथी कोढ रोगाविष्ट थयेलो महीपाल कुमार फक्त सूर्यकुंडना जळना स्पर्श मात्रथी रोग मुक्त थइ कांचन जेवी कायावाळो थयो.

एवी रीते तीर्थपतिनां सेवनथी कइक जीवोनां कल्याण थयां छे, थाय छे, अने भाविकाळे पण थशे.

जो के ए गिरिराज उपर काळनी अनंतताथी अनंत कोटि जीवो सिद्धिपद पाम्या छे, तोपण वर्तमान चोवीशी विगेरेमां सिद्धिपद वरेला जीवोनी अत्र टुंक नोंध आपवामां आवे छे.

कोण	केटली संख्या
श्री ऋषभदेव प्रभुना वंशजराजाओ	असंख्याता.
श्री पुंडरीक गणधर (ऋषभदेव स्वामीना प्रथम गणधर)	पांचक्रोडसाथे.
द्राविड वारिखिल्ल (ऋषभदेव प्रभुना पौत्रो)	दश क्रोड साथे.
आदित्यशा (आदिनाथना पौत्रो)	एक लाख साथे.
सोमयशा (आदिनाथना पुत्र)	तेर क्रोड साथे.
बाहुबलिना पुत्र	एक हजार ने आठ.
नमि विद्याधरनी पुत्री चर्चा प्रमुख	चोसट.
नमि विनमि विद्याधरो	बे क्रोड साथे.
सागरमुनि	एक क्रोड साथे,
भरतमुनि	पांच क्रोड साथे.
अजितसेन	सत्तर क्रोड साथे.
अजितनाथ प्रभुना साधुओ	दश हजार.
श्री सार मुनि	एक क्रोड साथे.
श्री शांतिनाथ प्रभुसाथे चतुर्मास रहेला	१५२५५७७७मुनिओ.
राम भरत (दशरथ पुत्रो)	त्रण क्रोड साथे.

पांच पांडवो	वीश क्रोड मुनिओ साथे.
वसुदेवनी स्त्रीओ	पांत्रीश हजार.
वैदर्भी	चुमाळीशसे (४४००)साथे.
नारद ऋषि	एकाणु लाख (साथे).
शांब प्रद्युम्न	साडीआठ क्रोड साथे,
दमितारि मुनि	चौद हजार साथे.
थावच्चा पुत्र	एक हजार साथे.
शुक परिव्राजक (शुकाचार्य)	एक हजार साथे.
सेलगाचार्य	पांचसे साधु साथे.
सुभद्रमुनि	सातसो साधु साथे.
कालिक मुनि	एक हजार साथे.
कदंब गणधर (गत चोविशीमां)	एक क्रोड साथे.
संप्रति जिनना थावच्चागणधर	एक हजार साथे.

आ शिवाय ऋषभसेनजिन प्रमुख असंख्याता, देवकीजीना छ पुत्रो, जाळी मयाळी ने उवयाळी (जादव), सुव्रत शेठ, मंडकमुनि, सुकोसळमुनि, तेमज अयमत्तामुनि विगेरे संख्या रहित महात्माओ अत्र सिद्धि पद वर्या छे.

अत्र थयेला १६ मोटा उद्धारोनी टुंक नोंध.

१ भरतचक्रवर्तीए श्रीनाभ गणधरनी साथे पधारी कराव्यो.

२ भरतचक्रवर्तीनी आठमी पाटे थयेला दंडवीर्य भूपाले कराव्यो.

३ सीमंधर स्वामीनो उपदेश श्रवण करी इशानेन्द्रे कराव्यो.

४ चोथा देवलोकना इन्द्र महेन्द्रे कराव्यो.

५ पांचमा देवलोकना स्वामी ब्रह्मेन्द्रे कराव्यो.

६ भुवनपतिना इन्द्र चमरेन्द्रे कराव्यो.

७ अजितनाथ स्वामीना बंधु सगर चक्रवर्तीए कराव्यो.

८ अभिनंदन स्वामीना उपदेशथी व्यंतरेन्द्रोए कराव्यो.

९ चंद्रप्रभुना शासनमां चंद्रशेखर मुनिना उपदेशथी तेमना पुत्र चंद्रयशाए कराव्यो.

१० श्री शांतिनाथजीना पुत्र चक्रायुधजीए देशना सांभळीने कराव्या.

११ श्री मुनिसुव्रत स्वामीना शासनमां रामचंद्रजीए कराव्यो.

१२ श्री नेमिनाथजीना उपदेशथी पांडवोए देव सहायथी कराव्यो.

१३ जावडशा शेठ वज्रस्वामीनी सहायथी संवत् १०८मां कराव्यो.

१४ श्री कुमारपाळ राजाना वखतमां वाहडमंत्रीए १२१३मां कराव्यो.

१५ समराशा ओशवाळे संवत १३७१ मां कराव्यो.

१६ करमाशा शेठ संवत् १५८३ मां कराव्यो.

आ मुख्य उद्धारोनीज वात छे. ते शिवाय शत्रुंजय कल्पमां कह्या मुजब अत्र असंख्य उद्धारो, असंख्य चैत्यो अने असंख्य प्रतिमाओ थएल छे. ए बधो आ उत्तम गिरिराजनो ज प्रभाव जाणवो.

"प्रतिदिन जाप (स्मरण) करवा योग्य आ तीर्थ-राजनां अनेक उत्तम नामोनी यादी"

१ शत्रुंजय, २ बाहुबली, ३ मरुदेव, ४ पुंडरीकगिरि, ५ रैवतगिरि, ६ विमलाचल, ७ सिद्धराज, ८ भगीरथ, ९ सिद्धक्षेत्र, १० सहस्रकमल, ११ मुक्तिनिलय, १२ सिद्धाचल, १३ शतकूटगिरि, १४ ढंक, १५ कोडी निवास, १६ कदंबगिरि, १७ लोहित्य १८ तालध्वज, १९ पुण्यराशि, २० महाबल अने २१ दृढ शक्ति, २२ शतपत्र, २३ विजयानंद, २४ भद्रंकर, २५ महापीठ. २६ सुरगिरि, २७ महागिरि, २८ महानंद, २९ कर्मसूडण, ३० कैलास, ३१ पुष्पदंत, ३२ जयंत, ३३ आनंद, ३४ श्रीपद, ३५ हस्तगिरि, ३६ शाश्वतगिरि, ३७ भव्यगिरि, ३८ सिद्धशेखर, ३९ महायश, ४० माल्यवंत, ४१ पृथ्वीपीठ, ४२ दुःखहर, ४३ मुक्तिराज, ४४ मणिकंत, ४५ मेरुमहीधर, ४६ कंचनगिरि, ४७ आनंदघर, ४८ पुण्यकंद, ४९ जयानंद, ५० पाताळमूल, ५१ विभास, ५२ विशाल, ५३ जगतारण, ५४ अकलंक, ५५ अकर्मक, ५६ महातीर्थ, ५७ हेमगिरि, ५८ अनंतशक्ति, ५९ पुरुषोत्तम, ६० पर्वतराजा, ६१ जयोतिरुप, ६२ विलासभद्र, ६३ सुभद्र, ६४ अजरामर, ६५ क्षेमंकर, ६६ अमरकेतु, ६७ गुणकंद, ६८ सहस्रपत्र, ६९ शिवंकर, ७० कर्मक्षय, ७१ तमोकंद, ७२ राजराजेश्वर, ७३ भवतारण, ७४ गजचंद्र, ७५ महोदय, ७६ सुरकांत, ७७ अचळ, ७८ अभिनंद, ७९ सुमति, ८० श्रेष्ठ, ८१ अभयकंद, ८२ उज्वळगिरि, ८३ महापद्म, ८४ विश्वानंद, ८५ वि-

जयभद्र, ८६ इन्द्रप्रकाश ८७ कपर्दीवास, ८८ मुक्तिनिकेतन, ८९ केवळदायक, ९० चर्चागिरि, ९१ अष्टोत्तर शतकूट, ९२ सौंदर्य, ९३ यशोधर, ९४ प्रीतिमंडन, ९५ कामुक काम 'कामदायी' ९६ सहजानंद, ९७ महेन्द्रध्वज, ९८ सर्वार्थसिद्ध, ९९ प्रियंकर.

आ नामो सिवाय श्री शत्रुंजय माहात्म्यमां ब्रह्मगिरि, नान्दिगिरि, श्रेयःपद, प्रभोःपद, सर्वकामद, क्षितिमंडळमंडन, सहस्राख्य, तापसगिरि, स्वर्गगिरि, उमाशंभुगिरि, स्वर्णगिरि, उदयगिरि अने अर्बुदगिरि, विगेरे नामो पण जणाय छे.

श्रीशत्रुंजय तीर्थ संबंधी एकवीश नामना गुण गर्भित एकवीश खमासमण आपवाना दोहा.

१ सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठ देश मोझार; मनुष्य जन्म पामी करी, वंदु वार हजार. १. [1]अंग [2]वसन [3]मन [4]भूमिका, [5]पूजोपगरण सार; [6]न्यायद्रव्य [7]विधि शुद्धता, शुद्धि सात प्रकार. २. कार्तिक शुदि पुनम दिने, दश कोटी परिवार; द्राविड वारिखिल्लजी, सिद्ध थया निरधार ३. तिणे कारण कार्तिक दिने, संघ सयल परिवार; आदि जिन सनमुख रही, खमासमण बहुवार ४. एकवीश नाम वरणव्यो, तिहां पहेलुं अभिधान; शत्रुंजय शुकरायथी, जनक वचन बहुमान ५. (अहींयां "सिद्धाचल समरुं सदा" ए दुहो प्रत्येक खमासमण दीठ कहेवो.) १.

---

१ शरीर शुद्धि, २ वस्त्र शुद्धि, ३ चित्त शुद्धि, ४ भूमि शुद्धि, ५ उपगरण शुद्धि, ६ द्रव्य शुद्धि, ७ यथार्थ विधिशुद्धि.

२ समोसर्या सिद्धाचले, पुंडरीक गणधार; लाखसवा माहात्यम कर्युं, सुरनर सभा मोझार. ६. चैत्री पुनमने दिने, करी अणसण एक मास; पांच कोडि मुनि साथशुं, मुक्तिनिलयमां वास. ७. तिणे कारण पुंडरीकगिरि, नाम थयुं विख्यात; मन वच काये वंदीये, उठी नित्य प्रभात. ८. सि० २

३ वीश कोडीशुं पांडवा, मोक्ष गया इणे ठाम; एम अनंत मुक्ते गया, सिद्धक्षेत्र तिणे नाम. ९. सि० ३

४ अडसठ तीरथ न्हावतां, अंगरंग घडी एक; तुंबीजळ स्नाने करी, जाग्यो चित्त विवेक. १०. चंद्रशेखर राजा प्रमुख, कर्म कठिन मलधाम; अचल पदे विमला थया, तिणे विमलाचल नाम. ११ सि० ४

५ पर्वतमां सुरगिरि वडो, जिन अभिषेक कराय; सिद्ध हुना स्नातक पदे, सुरगिरि नाम धराय. १२. अथवा चउदे क्षेत्रमां, ए समो तीरथ न एक; तिणे सुरगिरि नामे नमुं, जिहां सुरवास अनेक. १३ सि० ५

६ एंसी योजन पृथुल छे, उंचपणे छव्वीश; महिमाए मोटो गिरि, महागिरि नाम नमीश. १४ सि० ६

७ गणधर गुणवंता मुनि, विश्व मांहे वंदनीक; जेहवो तेहवो संयमी, विमळाचल (ए तीरथे) पूजनीक. १५. विप्रलोक विषधर समा, दुःखीया भूतळ मान; द्रव्यलिंगी कण क्षेत्र सम, मुनिवर छीप समान. १६. श्रावक मेघ समा कह्या, करता पुण्यनुं काम; पुण्यनी राशि वधे घणी, तेणे पुण्यराशि नाम. १७ सि० ७.

८ संयमधर मुनिवर घणा, तप तपता एक ध्यान; कर्म वियोगे

पामीया, केवळ लक्ष्मी निधान. १८. लाख एकाणुं शिव वर्या, नारदशुं अणगार; नाम नमो तेणे आठमुं, श्रीपदगिरि निरधार. १९. सि० ८

९. श्री सीमंधर स्वामीये, ए गिरि महिमा विलास; इंद्रनी आगे वर्णव्यो, तेणे ए इन्द्रप्रकाश. २०. सि० ९.

१० दश कोटि अणुव्रतधरा, भक्ते जमाडे सार, जैनतीर्थयात्रा करी, लाभ तणो नहीं पार. २१. तेह थकी सिद्धाचले, एक मुनिने दान; देतां लाभ घणो हुवे, महा तीरथ अभिधान. २२. सि० १०.

११ प्राये ए गिरि शाश्वतो, रहेशे काळ अनंत; शत्रुंजय माहात्म्य सुणी, नमो शाश्वतगिरि संत. २३. सि० ११.

१२ गौ नारी बालक मुनि, चउ हत्याकरनार; यात्रा करतां कार्तिकि, न रहे पाप लगार. २४. जे परदारा लंपटी, चोरीनां करनार; देव द्रव्य गुरु द्रव्यनां, जे वळी चोरणहार. २५. चैत्री कार्तिक पुनमे, करे यात्रा इणे ठाम; तप तपतां पातिक गळे, तिणे दृढशक्ति नाम. २६. सि० १२.

१३ भवभय पामी नीकळ्या, थावच्चा सुत जेह; सहस्स मुनिशुं शिव वर्या, मुक्तिनिलयगिरि तेह. २७ सि० १३.

१४ चंदा सूरज बिंहु जणा, उभा इणे गिरि श्रृंग; वधावियो वरणव करी, (करी वर्णव ने वधावीयो) पुष्पदंत गिरि रंग २८. सि० १४.

१५ कर्मकलण भवजळ तजी, इहां पाम्या शिवसद्म; प्राणी पद्म निरंजनी, वंदो गिरि महापद्म. २९. सि० १५.

१६ शिववहु विवाह उत्सवे, मंडप रचियो सार, मुनिवर वर बेठक भणी, पृथ्वीपीठ मनोहार. ३० सि० १६.

१७ श्री सुभद्रगिरि नमो, भद्र ते मंगळ रुप; जलतरुरज गिरिवर तणी, शिस चढावे भुप. ३१ सि० १७

१८ विद्याधर सुर अपच्छरा, नदी शत्रुंजी विलास; करता हरता पापने, भजीये भवि कैलास. ३२ सि० १८.

१९. बीजा निरवाणी प्रभु, गइ चोवीशी मोझार; तस गणधर मुनिमां वडा, नामे कदंब अणगार. ३३. प्रभु वचने अणसण करी, मुक्तिपुरिमां वास; नामे कदंबगिरि नमो, तो होय लील विलास. ३४ सि० १९.

२० पाताले जस मूल छे, उज्वल गिरिनुं सार; त्रीकरण योगे वंदता, अल्प होये संसार. ३५ सि० २०.

२१ तन मन धन सुत वल्लभा, स्वर्गादिक सुख भोग; जे वंछे ते संपजे, शिवरमणी संयोग. ३६. विमलाचल परमेष्टीनुं, ध्यान धरे खट मास; तेज अपूरव विस्तरे, पुरे सघळी आश. ३७. त्रीजे भव सिद्धि लहे, ए पण प्रायिक वाच; उत्कृष्टा परिणामथी, अंतर मुहूर्त साच. ३८. सर्व कामदायक नमो, नाम करी ओलखाण; श्री शुभवीरविजय प्रभु, नमतां कोड कल्याण. ३९. सिद्धा० २१.

श्री शत्रुंजय तीर्थनां उत्तम २१ नाम गर्भित चैत्यवंदन.

सिद्धाचळ शिखरे चढी, ध्यान धरो जगदीश;
मन वच काय एकाग्र शुं, नाम जपो एकवीश. १
१ शत्रुंजय गिरि वंदिये, २ बाहुबलि गुणधाम;
३ मरुदेव ने ४ पुंडरीकगिरि, ५ रेवतगिरि विशराम. २
६ विमलाचळ ७ सिद्धराजजी, नाम ८ भगीरथ सार;
९ सिद्धक्षेत्र ने १० सहस्र कमल, ११ मुक्ति निलय जयकार. ३
१२ सिद्धाचल १३ शतकूट गिरि, १४ढंक ने १५कोडिनिवास;
१६कदंबगिरि, १७लोहित्य नमो, १८तालध्वज १९पुण्यराश. ४
२०महाबल ने २१ दृढ शक्ति सही, एम एकवीश नाम;
साते शुद्धि समाचरी, करिये नित्य प्रणाम. ५
[1]दग्ध [2]शून्य ने [3]अविधि दोष, अति [4]प्रवृत्ति जेह;
चार दोष छंडी भजो, भक्ति भाव गुणगेह. ६
मनुष्य जन्म पामी करी, सद्गुरु तीरथ योग;
श्री शुभवीरने शासने, शिव रमणी संयोग. ७

---

१ धर्मकरणी करतां अन्य बाबतमां मनने क्षेप विक्षेप करवो.

२ उपयोग शून्य जडवत् समुर्छिमनी पेरे करणी करवी.

३ जे करणी जेम करवी कही होय ते उलटसुलट स्वमतिथी करवी.

४ स्वशक्ति तपास्या विना तेमज शास्त्र मर्यादा उलंघीने करणी करवी.

श्री गौतमाय नमः

अथ श्रीसिद्धगिरिस्तुतिः

दोहा—१०८

श्री आदीश्वर अजर अमर, अव्याबाध अहनीशः
परमातम परमेसरु, प्रणमुं परम मुनीश. १
जय जय जगपति ज्ञानभान, भासित लोकालोकः
शुद्धस्वरूप समाधिमय, नमित सुरासुरथोक. २
श्रीसिद्धाचल मंडणो, नाभिनरेसर नंद;
मिथ्यामति मन भंजणो, भविकुमुदाकर चंद. ३
पूर्व नवाणुं जस शिरे, समवसर्या जगनाथः
ते सिद्धाचल प्रणमिये, भक्ते जोडी हाथ. ४
अनंत जीव इण गिरिवरे, पाम्या भवनो पारः
ते सिद्धाचल प्रणमिये, लहिये मंगलमाल. ५
जस शिर मुकुट मनोहरु, मरुदेवीनो नंद;
ते सिद्धाचल प्रणमिये, ऋद्धि सदा सुखवृंद. ६
महिमा जेहनी दाखवा, सुरगुरु पण मतिमंदः
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, प्रगटे सहजानंद. ७
सत्ताधर्म समारवा, कारण जेह पडूर;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, नासे अघ सवि दूर. ८
कर्मकाट सवि टालवा, जेहनुं ध्यान हुताश;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पामीजे सुखवास. ९

परमानंद दशा लहे, जस ध्याने मुनिराय;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पातक दूर पलाय. १०
श्रद्धाभासन रमणता, रत्नत्रयीनुं हेतु;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, [1]भव मकराकर सेतु. ११
महापापी पण निस्तर्या, जेहनुं ध्यान सुहाय;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सुर नर जस गुण गाय. १२
पुंडरीक गणधर प्रमुख; सिद्धा साधु अनेक;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये आणी हृदय विवेक. १३
चंद्रशेखर स्वसापति, [2] जेहने संगे सिद्ध;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पामीजे निज ऋद्ध. १४
जलचर खेचर तिरिय सवे, पाम्या आतम भाव;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, भवजल तारण नाव. १५
संघयात्रा जेणे करी, कीधा जेणे उद्धार;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, छेदीजे गति चार. १६
पुष्टशुद्ध संवेग रस, जेहने ध्याने थाय;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, मिथ्यामति सवि जाय. १७
सुरतरु सुरमणि [3]सुरगवि, सुरघट सम जस ध्याव;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, प्रगटे शुद्ध स्वभाव. १८
सुरलोक सुरसुंदरी, मलि मलि थोके थोक;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, गावे जेहना [4]श्लोक. १९.

---

१ भवसागर तरवा सेतु समान. २ स्वभगिनीनो भोगी. ३ कामधेनु.
४ गुण--वर्णन.

योगीश्वर जस दर्शने, ध्यान समाधि लीन;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, हुआ अनुभव रस लीन. २०
मानुं गगने सूर्य शशी, दिये प्रदक्षिणा नित्य;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, महिमा देखण चित्त. २१
सुर असुर नर किन्नरा, रहे छे जेहनी पास;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पामे लीलविलास. २२
मंगलकारी जेहने, मृत्तिका हरिभेट;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, कुमति कदाग्रह मेट. २३
कुमति [1]कौशिक जेहने, देखी झांखा थाय;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सवि तस महिमा गाय. २४
सूरज कुंडना नीरथी, आधि व्याधि पलाय;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, जस महिमा न कहाय. २५
सुंदर टुंक सोहामणी, मेरुसम प्रासाद;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, दूर टले विखवाद. २६
द्रव्य भाव वैरी तणा, जिहां आवे होय शांत;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, जाये भवनी भ्रांत. २७
जगहितकारी जिनवरा, आव्या एणे ठाम;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, जस महिमा उद्दाम. २८
नदी शेत्रुंजी स्नानथी, मिथ्या मल धोवाय;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सवि जनने सुखदाय. २९
आठ कर्म जे सिद्धगिरे, न दाये तीव्र विपाक;

---

१ घूडो.

ते तीरथेश्वर प्रणमीये, जिहां नवि आवे काक. ३०
सिद्धशिला [1] तपनीयमय, रत्नस्फाटिक खाण;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पाम्या केवल नाण. ३१
सोवन रुपा रत्ननी, ओषधि जात अनेक;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, न रहे पातक एक. ३२
संयमधारी संयमे, पावन होय जिण खेत्र;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, देवा निर्मल नेत्र. ३३
श्रावक जिहां शुभ द्रव्यथी, उत्सव पूजा स्नात्र;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पोषे पात्र सुपात्र. ३४
साहामिवत्सल पुण्य जिहां, अनंतगुणुं कहेवाय;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सोवन फुल वधाय. ३५
सुंदर जात्रा जेहनी, देखी हरखे चित्त;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, त्रीभुवनमांहे विदित [2] ३६
पालीताणुं पुर भलुं, सरोवर सुंदर पाल;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, जाये सकल जंजाल. ३७
मनमोहन पागे चढे, पग पग कर्म खपाय;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, गुण गुणिभाव लखाय. ३८
जेणे गिरि रुंख सोहामणां, कुंडे निर्मल नीर;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, ऊतारे भवतीर. [3] ३९

---

१ सुवर्णमय. २ प्रसिद्ध–प्रख्यात. ३ भवपार.

मुक्तिमंदिर सोपान सम, सुंदर गिरिवर पाज;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, लहिये शिवपुर राज. ४०

कर्मकोटि अब विकटभट, देखी ध्रुजे अंग;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, दिन दिन चढते रंग. ४१

गौरी गिरिवर उपरे, गावे जिनवर गीत;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सुख शासनरीत. ४२

कवड यक्ष रखवाल जस, अहोनिश रहे हजुर;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, असुरां राखे दुर. ४३

चित्त चातुरी चक्केसरी, विघ्न विनासणहार;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, संघ तणी करे सार. ४४

सुरवरमां मघवा* यथा, ग्रहगणमां जिम चंद;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, तिम सवि तीरथ इंद. ४५

दीठे दुर्गति वारणो, समर्या सारे काज;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सवि तीरथ शिरताज. ४६

पुंडरीक पंच कोडीशुं, पाम्या केवल नाण;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, कर्म तणी होय हाण. ४७

मुनिवर कोडी दश सहित, द्राविड अने वारिखेण;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, चढिया शिव निश्रेण. ४८

नमि विनमि विद्याधरा, दोय कोडी मुनि साथ;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पाम्या शिवपुर आथ. ४९

---

* इन्द्र.

ऋषभवंशीय नरपति घणा, ईण गिरि पहोता मोक्ष;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, टाल्या घातिक दोष. ५०

राम भरत बिहुं बांधवा, त्रण कोडी मुनियुत्त;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, ईणेगिरि शिव संपत्त. ५१

नारद मुनिवर निर्मलो, साधु एकाणुं लाख;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, प्रवचन प्रगट ए भांख. ५२

सांब प्रद्युम्न ऋषि कह्या, साडी आठे कोडि;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पूर्वकर्म विछोडि. ५३

थावच्चासुत सहसशुं, अणसण रंगे कीध;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, वेगे शिवपद लीध. ५४

शुक परमाचारज वली, एक सहस अणगार;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पाम्या शिवपुर द्वार. ५५

शेलक सूरि मुनि पांचशे, सहित हुआ शिवनाह;[1]
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, अंगे धरी उत्साह. ५६

ईम बहु सिध्या इणे गिरे, कहेतां नावे पार;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, शास्त्रमांहे अधिकार. ५७

बीज ईहां समकित तणुं, रोपे आतम भोम;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, टाले पातक स्तोम.[2] ५८

ब्रह्म स्त्री भ्रुण[3] गोहत्या, पापे भारित जेह;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पहोता शिवपुर गेह. ५९

---

१ नाथ. २ समुदाय (समूह). ३ गर्भ.

जग जोतां तीरथ सवे, ए सम अवर न दीठ;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, तीर्थमांहे उक्किठ.[1] ६०
धन धन सोरठ देश जिहां, तीरथमांहि सार;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, [2] जनपदमां शिरदार. ६१
अहोनिश आवत ढुंकडा, ते पण जेहने संघ;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पाम्या शिव वधु रंग. ६२
विराधक जिनआणना, ते पण हुआ विशुद्ध;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पाम्या निर्मल बुद्ध. ६३
महाम्लेच्छ शासन रिपु, ते पण हुआ उपसंत;[3]
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, महिमा देखी अनंत. ६४
मंत्र योग अंजन सवे, सिद्ध हुवे जिण ठाम;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पातकहारी नाम. ६५
सुमति सुधारस वरसते, कर्मदावानल संत;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, उपशम तस उल्लसंत. ६६
श्रुतधर नितु नितु उपदिशे, तत्वातत्व विचार;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, ग्रहे गुणयुत श्रोतार.[4] ६७
प्रियमेलक गुणगण तणुं, कीरतिकमला सिंधु;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, कलिकाले जगबंधु. ६८
श्री शांति तारण तरण, जेहनी भक्ति विशाल;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, दिन दिन मंगलमाल. ६९

---

१ उत्कृष्ट. २ देश. ३ उपशान्त. ४ सांभळनार.

श्वेतध्वजा जस लहकती, भांखे भविने एम;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, भ्रमण करो छो केम ? ७०

साधक सिद्धदशा भणी, आराधे एक चित्त;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, साधन परम पवित्त. ७१

संघपति थई एहनी, जे करे भावे यात्र;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, तस होय निरमल गात्र. ७२

शुद्धातम गुण रमणता, प्रगटे जेहने संग;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, जेहनो जस अभंग. ७३

रायणवृक्ष सोहामणो जिहां जिनेश्वर पाय;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सेवे सुरनरराय. ७४

पगलां पूजी ऋषभनां, उपशम जेहने चंग;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, समता पावन अंग. ७५

विद्याधरज मले बहू, विचरे गिरिवर शृंग;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, चढते नवरस रंग. ७६

मालती मोघर केतकी, परिमल मोहे भृंग;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पूजो भावि एकंग. ७७

अजित जिनेसर जिहां रह्या, चोमासुं गुणगेह;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, आणी अविहड नेह. ७८

शांति जिनेसर सोलमा, सोल कषाय करी अंत;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, चतुर मास रहंत. ७९

नेमि विना जिनवर सवे, आव्या छे जिण ठाम;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, शुद्ध करे परिणाम. ८०

नमि नेमि जिन अंतरे, अजितशांतिस्तव कीध;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, नंदिषेण प्रसिद्ध. ८१

गणधर मुनि उवज्झाय तिम, लाभ लह्या केई लाख;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, ज्ञानअमृत रस चाख. ८२

नित्य घंटा टंकारवे, रणझणे जल्लरी नाद;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, दुंदुभि मादल वाद. ८३

जेणे गिरे भरत नरेश्वरे, कीधो प्रथम उद्धार;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, मणिमय मूरति सार. ८४

चौमुख चउगति दुख हरे, सोवनमय सुविहार;[1]
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, अक्षय सुख दातार. ८५

इत्यादिक महोटा कह्या, सोल उद्धार सफार;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, लघु असंख्य विचार. ८६

द्रव्यभाव वैरी तणो, जेहथी थाये अंत;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, शत्रुंजय समरंत. ८७

पुंडरीक गणधर हुआ, प्रथम सिद्ध ईणे ठाम;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पुंडरीक गिरि नाम. ८८

कांकरे कांकरे ईणे गिरि, सिद्ध हुआ सुपवित्त;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सिद्धखेत्र समचित्त. ८९

---

१ उत्तम प्रासाद.

मल द्रव्यभाव विशेषथी, जेहथी जाये दूर;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, विमलाचल सुखपूर. ९०

सुरवरा बहु जे गिरे, निवसे निरमल ठाण;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सुरगिरि नाम प्रमाण. ९१

परवत सहुमांहे वडो, महागिरि तेणे कहंत;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, दरशन लहे पुण्यवंत. ९२

पुण्य अनर्गल जेहथी, थाये पाप विनाश;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, नाम भलुं पुण्यराश. ९३

लक्ष्मीदेवी जे भण्यो, कुंडे कमल निवास;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पद्मनाम सुवास. ९४

सवि गिरिमां सुरपति समो, पातक पंक विलात;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पर्वत इंद्र विख्यात ९५

त्रिभुवनमां तीरथ सवे, तेमां मोटो एह;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, महातीरथ जस रेह. ९६

आदि अंत नहिं जेहनी, कोइ काले न विलाय;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, शाश्वतागिरि कहेवाय. ९७

भद्र भला जे गिरिवरे, आव्या होय अपार;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, नाम सुभद्र संभार. ९८

वीर्य वधे शुभ साधुने, पामी तीरथ भक्ति;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, नामे जे दृढशक्ति. ९९

शिवगति साधे जे गिरे, ते माटे अभिधान;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, मुक्तिनिलय गुणखाण. १००

चंद सूरज समकित धरी, सेव करे शुभ चित्त;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पुष्पदंत विदित, १०१

भिन्न रहे भवजल थकी, जे गिरि लहे निवास;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, महापद्म सुविलास. १०२

भूमि धरी जे गिरिवरे, उदधि न लोपे लीह[1]
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पृथिवीपीठ अनीह. १०३

मंगल सवि मलवा तणुं, पीठ एह अभिराम;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, भद्रपीठ जस नाम. १०४

मूल जस पातालमें, रत्नमय मनोहार;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पाताल मूल विचार, १०५

कर्म क्षय होये जिहां, होय सिद्ध सुखकेल;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, अकर्म करे मन मेल. १०६

कामित सवि पूरण होये, जेहनुं दरिसण पाम;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सर्वकाम मन ठाम. १०७

इत्यादिक एकवीश भलां, निरुपम नाम उदार;
जे समर्यां पातक हरे, आतम शक्ति अनुहार. १०८

---

१ मर्यादा.

कळश.

इम तीर्थ नायक, स्तवन लायक, संथुण्यो श्रीसिद्धगिरि; अठोतरसय गाह स्तवने, प्रेमभक्ते मनधरी; श्रीकल्याणसागर सूरि शिष्ये, शुभ जगीशे सुख करी; पुण्यमहोदय सकल मंगल, वेलि सुजसे जयसिरी. इति सिद्धगिरी स्तुति.

उक्त तीर्थना संबंधे केटलीक पवित्र वस्तुओनी ओळखाण अने तेनो अद्भूत महिमा.

राजादनी (रायण वृक्ष) अने तेनी नीचे रहेलां प्रभुनां चरण.

आ रायणनुं वृक्ष श्री ऋषभदेव भगवाननी पादुकावडे पवित्र गणाय छे. श्री ऋषभदेव भगवान अनेक वखत आवी ए रायण नीचे समवसर्या छे, तेथी ते पवित्र तीर्थनी परे वंदानिक छे. तेनां पत्र, फळ तथा शाखा उपर देवताओना वास होवाथी प्रमादवडे ते तोडवां के छेदवां नहिं. ज्यारे कोइ संघपति पूर्ण भक्तिभावथी तेनी प्रदक्षिणा दे छे त्यारे जो ते रायण तेना उपर हर्षथी दूध वर्षावे छे तो ते उभय लोकमां सुखी थाय छे. जो तेनी शुद्ध द्रव्यथी आदर

सहित पूजा करवामां आवे तो ते स्वप्नमां आवी सर्व शुभाशुभ कही दे छे. वळी तेनी आदर सहित पूजा करवाथी भूत, वेताळ, शाकिनी, राक्षस, प्रमुखनो वळगाड होय ते पण जतो रहे छे अने बीजा विकार पण थइ शकता नथी. ए उत्तम वृक्षना पत्र, पुष्प के शाखादिक सहेजे पडेलां होय तो तेने आदर सहित लइ आवी जीवनी जेम साचववां. एनां जळनुं सिंचन करवाथी सर्व विघ्ननी शांति थाय छे. ए पवित्र वृक्षने साक्षी राखी जे दोस्ती बांधे छे ते अत्र अत्यंत सुख अनुभवी छेवटे परम पद प्राप्त करे छे. ए रायणवृक्षथी पश्चिम दिशा तरफ एक दुर्लभ रसकुंपिका छे. जे आस्था सहित अट्ठम तपनुं आराधन करे तेवो कोइक भाग्यवान् पुरुष तेना प्रभावथी ते रसकुंपिकानो रस मेळवी शके छे. ते रसना गंध मात्रथी लोढुं सुवर्ण थइ जाय छे. एक राजादनीज जो प्रसन्न होय तो बीजी शानी जरुर छे ?

शत्रुंजया नदी.

सौराष्ट्र (सोरठ) देशमां अनंत महिमाथी पूर्ण अने अनंत सुकृतनुं स्थान एवुं शत्रुंजय नामे महातीर्थ छे. तेनां दर्शन, स्पर्शन, श्रवण अने स्तवनथी पण पापनो लोप थई जाय छे. ते क्षणवारमां प्राणीओने स्वर्गनां अने मोक्षनां सुख आपे छे. तेना जेवुं त्रण लोकने पावन करनारुं कोई पण बीजुं तीर्थ नथी. ते शत्रुंजय महातीर्थनी दक्षिण बाजुए प्रभाविक जळथी पूर्ण एक शत्रुंजया नामनी नदी छे. शत्रुंजय महातीर्थने स्पर्शी रहेली होवाथी ते नदी महा पवित्र छे अने गंगा सिंधुनां दिव्य जळथी पण अधिक फळदाता छे. तेमां (विवेक-

थी) स्नान करनारनुं सकळ पाप धोवाई जाय छे. शत्रुंजय महातीर्थनी ते जाणे वेणी होय तेवी शोभे छे. वळी ते गंगा नदीनी पेरे पूर्व दिशा तरफ वहेनारी, अपूर्व सुकृतनां स्थान रुप, अनेक उत्तम द्रहोवडे प्रभाववाळी अने अत्यंत आश्चर्य उत्पन्न करती छती शत्रुंजया, जान्हवी, पुंडरिकिणी, पापंकषा, तीर्थभूमि अने हंसा एवां अनेक नामथी प्रख्यात छे. तेमां कदंबगिरि अने पुंडरिकागिरि नामना शिखरनी मध्यमां ' कमळ ' नामनो एक महा प्रभाविक द्रह छे तेना जळवडे अने मृत्तिका (माटी) नो पिंड करी जो नेत्र उपर बांधवामां आवे तो ' रतांधळापणुं ' विगेरे अनेक प्रकारना नेत्र विकारनो नाश थई जाय छे. वळी ते जळना प्रभावथी बीजा पण भूत वेताळादिक जन्य दोषो दूर जाय छे. अने तेमां जीवनी उत्पत्ति थती नथी.

श्री आदीश्वर भगवाननुं भव्य मंदिर.

जेमां हाल मूळ नायक श्री आदीश्वर भगवान बिराजमान छे ते भव्य मंदिर संबंधी कुमारपाळ प्रबंधमां आवी हकीकत छे के एकदा कुमारपाळ राजाना 'उदयन' मंत्री सौराष्ट्र देशमां युद्ध प्रसंगे गया हता, ते वखते श्री आदीश्वर भगवाननां दर्शन करवानी इच्छाथी पोते शत्रुंजय गिरि उपर चढ्या. त्यां शुद्ध श्रद्धा सहित प्रभुनी पूजा आरति प्रमुख कृत्य करीने ज्यारे चैत्यवंदन करवा बेठा त्यारे कोई एक उंदर दीवानी वाट लइ काष्टमय मंदिरनी फाटमां पेसतो हतो तेने पूजारीओए वारतां जोयो. ते जोई काष्टमय प्रासादनो नाश थई जवानी संभावना विगेरेथी खेद पामी मंत्रीश्वर मनमां विचार क-

रवा लाग्या के मारी पासे सारी समृद्धि तथा अधिकार छतां आवा उत्तम तीर्थ उपरनां देरासरनो उद्धार कर्यो नथी त्यां सुधी मारी सघळी संपत्ति निरर्थकज छे. एम विचारी अभिग्रह लीधो के ज्यां सुधी आ जिनमंदिरनो जीर्णोद्धार न थाय त्यां सुधी मारे ब्रह्मचर्य पाळवुं, एकज वखत भोजन करवुं, भूमि उपर सूई रहेवुं अने तांबुलनो त्यागज करवो. आवी रीतनो अभिग्रह धारीने पाटण तरफ पाछा आवतां मार्गमांज मंत्रीश्वरनुं मरण थयुं. ते वखते पोते ग्रहण करेलो अभिग्रह सामंतोने जणावी कह्युं के आ मारो मनोरथ पूरो करवा मारा पुत्रने कहेवुं. मंत्रीश्वरे ग्रहण करेला अभिग्रह मुजब सामंतोना कहेवाथी तेना पुत्र वाग्भट (बाहड) मंत्रीए शुभ मुहूर्ते शत्रुंजय उपरना मुख्य देरासरना जीर्णोद्धारनुं काम आरंभ्युं. लगभग बे वर्षे जीर्णकाष्टमय चैत्यना स्थाने नवीन आरंभेलुं चैत्य तैयार थयुं. तेनी वधामणी लावनारने मंत्रीए सुवर्णनी बत्रीश जीभो बक्षीस आपी. एवामां बीजा कोई पुरुषे आवी ते चैत्यमां फाट पड्यानुं जणाव्युं, तेने मंत्रीए सुवर्णनी चोसठ जीभो आपी. कोईए तेनुं कारण पूछवाथी मंत्रीए जणाव्युं के अमारा जीवतां तेम थयुं ते ठीकज थयुं. केमके अमे जातेज तेनो फरी उद्धार करावीशुं. पछी ते फाट पडवानुं कारण शोधी कढावीने मांहे राखवामां आवेली भमती मजबूत पाषाणो वडे पूरावी नांखी. त्रण वर्षे जीर्णोद्धारनुं काम पुर्ण थयुं. ए शुभ कार्यमां मंत्रीए लगभग त्रण क्रोड द्रव्यनो व्यय कर्यो. विक्रम संवत १२११ (क्वचित् १२१३) श्री हेमचंद्र आचार्य

समक्ष महोत्सव सहित उक्त चैत्य उपर सुवर्णमय दंड, कळश, अने ध्वज चढाव्यां. त्यारबाद बीजा उद्धार करनाराओए मूळ देवळ फरीने बंधाव्युं जणातुं नथी, ए उपरथी मूळ नायकजीनुं वर्तमान भव्य देरासर वाहड मंत्रीश्वरनुं करावेलुं सिद्ध थाय छे. देरासरनो आसार जोतां पण प्रथम राखेली भमती पूरी नांखेली होय एम अनुमान थइ शके छे.

सुर्योद्यान तथा तेमां आवेलो सूर्यावर्त अथवा सूर्यकुंड.

श्री शत्रुंजय गिरिनी पूर्व दिशामां सूर्योद्यान नामनुं अति अद्भुत नंदन वन सरखुं उद्यान छे. आ उद्यानमां सर्व कार्यमां उपयोगी एवी अनेक दिव्य औषधीओ थाय छे. तेमां सूर्यावर्त नामनो कुंड निर्मळ जळथी भरेलो छे, ते सर्व रोग संबंधी पीडानो नाश करे छे. ए सूर्यकुंडना जळना एक बिंदु मात्रथी अढार प्रकारना कोढ दूर थइ जाय छे. चंद्रचूड नामना विद्याधर पोतानी प्रिया साथे चैत्री पूर्णिमानी यात्रा करीने विमानमां बेसी जतो हतो, त्यां शत्रुंजय गिरिनी नजदीकमां आ मनोहर उद्यान जोइ पोतानी प्रियानी प्रेरणाथी विमान नीचे उतारी उद्यानमां तथा तेमां आवेला सूर्यावर्त कुंडमां यथेच्छ क्रीडा करी पाछां निवर्ततां ते कुंडनुं प्रभाविक निर्मळ जळ साथे लइ विमानमां बेसी चाल्यां. मार्गमां चालतां नीचे दृष्टि

नाखतां महीपाळ राजानी चतुरंगी सेना तेमना जोवामां आवी. चारे तरफ घणां माणसोथी वींटायेला रोगार्त्त महीपाळ कुमारने जोइ करुणा लावी विद्याधर प्रत्ये तेनी प्रियाए कह्युं के–आपनी आज्ञा होय तो आपणी साथे राखेलुं सूर्यावर्त कुंडनुं जळ आ अति रोगार्त्त उपर सिंचुं. विद्याधरनी अनुमतिथी तेणीए महीपाळ कुमार उपर ते प्रभाविक जळना बिंदुओ क्षेपव्या के तरतज तेनुं शरीर रोगरहित–निरोगी बनी गयुं. जेम तापथी करमाइ गयेलुं वृक्ष वर्षायोगे नवपल्लव थइ जाय छे तेम ते प्रभाविक जळना प्रयोगथी महीपाळनुं शरीर पण नवपल्लव थयुं. कुष्ठादिक रोग मात्र दूर थवाथी तेनुं शरीर दिव्य कांतिवाळुं बन्युं. अद्यापि पण तेनो महिमा सुप्रसिद्ध छे.

चिल्लण तलावडी.

ज्यारे संघपति श्री भरतेश्वर श्री संघ सहित श्रीनाभ गणधरने आगळ करीने श्री शत्रुंजय महातीर्थनी यात्रार्थे उपर चढ्या त्यारे भरत महाराजा उत्तर तरफना मार्गे चढता हता अने बीजा सर्वे पोतपोतानी शक्ति मुजब जूदे जूदे रस्ते कोतक वडे चढता हता. श्री सुधर्मा गणधरना शिष्य श्री चिल्लण नामना तपस्वी मुनि अनेक यात्रिक लोकोथी विंटाइने पश्चिम मार्ग तरफथी चढता हता. उपर चढतां चढतां आगळ जतां यात्रिक लोकोने अत्यंत तृषा लागवाथी तेमणे चिल्लण मुनिने प्रार्थना करी के महाराज ! तृषावडे अमारां प्राण चाल्यां जाय छे. आ वात सांभळवाथी चिल्लण मुनिए कृपावडे तेमने पोतानुं जळपात्र बताव्युं. त्यारे तेमणे कह्युं के आटला जळ-

पात्रथी अमारा सहुनी तृषा शांत थइ शकशे नहिं माटे आप अमारी उपर कृपा करी लब्धिवडे एटलुं जळ बतावो के सहुने तृप्ति थइ शके. संघना लोकोनी ए प्रकारनी विनंतिथी चिल्लण मुनिए पोतानी पासेना प्राशुक [अचेत] जळनुं क्षेपन करवाथी तपोलब्धिवडे एक सुंदर सरोवर बनाव्युं. ते जळथी संघलोको पोतानी तृषा शांत करीने स्वस्थ थया अने चिल्लण मुनिए तेनुं निर्माण कर्याथी तेनुं चिल्लण सरोवर एवुं नाम प्रख्यात थयुं. ते सरोवरनुं जळ घणुं पवित्र गणाय छे.

तालध्वज गिरि उपर साचा देव.

प्रथम शत्रुंजय महातीर्थ यात्राविधिना प्रसंगे जणावेला ढंकादिक पांच कुटो पैकी तालध्वज, तलाजा बंदरनी नजदीकमां आवेल छे. आ गिरिवरमां अनेक विशाळ गुफाओ आवेली छे, तेमां पण केटलीक गुफाओ तो बहुज भव्य देखाववाळी अने जेमां संख्याबंध माणसो समाइ शके तेवी छे. प्रथम तेमां महात्मा पुरुषो ध्यानारूढ थइ रहेता हशे एम अनुमान थाय छे. गुफाओना मुख भागमां निर्मळ जळवाळां टांकां रहेलां छे, अत्यारे ते वधारे वपराशमां आवतां नथी. आ गिरिराजना परिसरमां तालध्वजी नामनी मोटी नदी आवेली छे. तेनो थोडेक दूर शत्रुंजयी नदी साथे संगम थाय छे अने ते बन्ने नदीओ पूर्व दिशामां समुद्रने जइ मळे छे. आ गिरिराज उंचाणमां बहु वधारे नथी. थोडेक उंचे चढतां साचादेवनी टूंक आवे छे. लोको तेमने सुमतिनाथना नामथी ओळखे छे परंतु प्रभुनुं लंछन जोतां ते कुंथुनाथजी संभवे छे. मूळ नायकना देरासर फरती केटलीक दिव्य

प्रतिमा युक्त देरीयो आवेली छे. थोडांक वर्ष पहेलां नीचे गाममांथी पार्श्वनाथभगवाननी मोटी प्रतिमा नीकळी आवेल छे ते हालमां गामना मंदिरमां बिराजे छे. भरत महाराजा पण अत्र पधार्या हता, तेमणे अहीं प्रभुप्रासाद निपजाव्यो हतो अने तालध्वज यक्षने अहींनो अधिष्ठायक स्थाप्यो हतो. आ स्थळ खरेखर रमणिक छे अने गिरिराजनी छेक उपर आवेला चउमुखना देरासर पासेथी कुदरती देखाव अत्यंत भव्य जणाय छे, जे देखवाथी आत्मार्थी जनोने कइक सद्विचारो स्फुरे छे अने वैराग्यनी वृद्धि थाय छे. तेथी शत्रुंजय तीर्थनी नजदीकमां आवेल आ तीर्थ पण भावथी भेटवा लायक ज छे निवृत्तिना अर्थी जनोने ते वधारे माफक आवे एम छे. वळी गाममां उतरवा विगेरेनी पण सोइ सारी छे.

महुवा (मधुमति नगरी)मां महावीर स्वामी.

श्री शत्रुंजय तीर्थनी यात्रा करी केटलाक भाविक जात्रिक भाइ व्हेनो तालध्वज गिरिने भेटी पछी महुवामां बिराजमान महावीर-स्वामीनी जात्रा करवा जाय छे. लोकोमां आ 'जीवित स्वामी'नी प्रतिमा तरीके ओळखाय छे. जेमणे शत्रुंजय तीर्थ उपर तेरमो उद्धार श्री वज्रस्वामीनी सहायथी वि. सं. १०८ मां कराव्यो छे ते जावडशा शेठने आ मधुमती नगरी इनाममां मळेली हती. पछी प्राप्त थयेला अनर्गळ धननो व्यय करीने पोते तेरमो उद्धार कराव्यो हतो. हालमां भावनगरना मोटा देरासरमां बिराजमान मूळ नायक श्री ऋषभदेव भगवाननी प्रतिमा तेरमा उद्धारनी छे एम एक स्तवन उपरथी जणाय छे. आकृति उपरथी पण आ प्रभु प्रतिमा पुरातनी समजाय छे.

रैवताचळ (गिरिनार) उपर नेमिनाथ भगवान.

पेहेलां गिरनारजी उपर श्रीनेमिनाथ भगवाननी लेपमयी प्रतिमा हती. एकदा 'रतनो' नामे संघपति संघ साथे यात्रार्थे आवेलो हतो. संघसहित श्रीनेमिनाथनो अभिषेक करतां ते लेपमयी प्रतिमा गळी गइ, तेथी संघपति 'रतनो' बहुज दिलगीर थयो. आवी रीते थयेली आशातना टाळवा पूर्वक तीर्थ भक्तिनो लाभ भव्य जनो कायम लइ शके एवी मतलबथी संघपति शासन देवी श्री अंबिकानुं स्मरण करी (एकाग्र चित्तथी) आहार पाणीनो त्याग करी बेठो. तेना दृढ निश्चयथी छेवटे अंबिकाए तुष्टमान थइ तेने कंचन गुफामां लइ जइ वज्ररत्नमयी श्री नेमिनाथ भगवाननी प्रतिमा मूळ नायक तरीके स्थापवा माटे आपी. ते प्रभु प्रतिमा प्रथम अनेक इंद्रोए पूजेली छे अने कालादिदोषथी तेनी कोइ हल्का लोको आशातना न करे एवी बुद्धिथी ते रत्नमयी प्रतिमानुं मूळ तेज देवमायावडे संहरी लीधुं छे तोपण तेनो प्रभाव तो जेवो ने तेवोज वर्ते छे, तेमज भविष्यकाळमां पण वर्तशे, तेथी ते प्रभुनी प्राचीन प्रतिमा अति आदरथी पूजवा-भेटवा लायक छे. रतन शेठ श्री नेमिनाथ भगवानना शासनमां थयेला समजवा अने आ प्रभु प्रतिमा, पहेलां ब्रह्मेन्द्रे पोतानुं भावि-कल्याण श्रीनेमिनाथ महाराजनाज सांनिध्यथी थवानुं गइ चोविशीना त्रीजा सागर नामना तीर्थंकर महाराजना अमोघ वचनथी जाणीने अत्यंत हर्ष सहित बनावी छे. त्यार बाद ते अनेक इंद्रादिक वडे आ-दर सहित पूजाइ छे, अने वळी भविष्यकाळमां पण सारी रीते पूजा-

ती रहेशे. हालमां विद्यमान विशाळ मंदिर सिद्धराज जयसिंहना वखतमां तेना मंत्रीश्वरे करावेलुं गणाय छे.

चंद्रप्रभास तीर्थ (प्रभासपाटण).

श्री नेमिनाथ भगवाननी यात्रा करी भाविक यात्राळुओ प्रभासपाटण यात्रार्थे जाय छे. आ पण प्राचीन तीर्थ छे. पहेलां अहीं चंद्रप्रभुजी पधारी काउस्सग्ग मुद्राए रहेला, त्यारे समुद्रना अधिष्ठायक देवे प्रभुनी अद्भुत भक्ति करी हती. आ स्थळ चंद्रप्रभुना पवित्र चरण न्यासथी वधारे प्रसिद्धिने पामेलुं छे. प्रथम अहीं धरणेन्द्रे चंद्रप्रभुनो महा निर्मळ प्रासाद कराव्यो हतो, तेमज सीता (रामपत्नी) ए पण नवीन प्रासाद करावी तेमां चंद्रप्रभुने स्थापित कर्या हता.

अजारापार्श्वनाथ (अजयपुर मंडन.)

'रत्नसागर' नामे एक महान श्रेष्ठि विविध किरियाणाथी वहाण भरीने जतो हतो, त्यां एकाएक भारे तोफान लाग्युं. प्राण पण बचवां मुश्केल जणायां. तेवामां तेणे आकाशवाणी सांभळी, के "हे भद्र! तुं मुझाइश नहीं. आ बधुं में कर्युं छे. हुं पद्मावती छुं. आ समुद्रमां कल्पवृक्षना संपुटमां रहेली भावी भगवान श्रीपार्श्वनाथजीनी मूर्ति छे. ते प्रभाविक प्रतिमाने धरणेंद्रादिके घणो वखत पूजेली छे, हमणा अजयराजाना पुन्यथी ते प्रतिमा अहीं आवेली छे. तेने समुद्रमांथी बहार काढीने अजय राजा (जे रघुपुत्र हमणां दिग्विजय करीने दीवबंदरमां आवी रहेलो छे ते) ने अर्पण करजे. ते प्रभाविक प्रभु प्रतिमाना दर्शन करतांज तेना १०७ रोग तत्काल नाश

पामी जशे." आ प्रमाणे आकाश वाणी सांभळीने तेणे तत्काळ नाविकोने समुद्रमां उतारी ते उत्तम प्रतिमा कढावी लीधी. एटले सघळुं तोफान शांत थइ गयुं अने वहाण अनुकूळ पवने दीव बंदरे आवी पहोंच्युं. राजाने तत्काळ कोइए जई वधामणी आपी एटले ते अश्वारूढ थइने सामो आव्यो. प्रतिमा युक्त संपुटने किनारे उतार्यो. मोटा आडंबरथी तेने नगर प्रवेश करावी, राजाए रमणिक सिंहासन उपर स्थापित करी तेने आदर सहित पूजा करी उघाड्यो, तो तेमां श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनी अद्‌भुत प्रतिमा जोवामां आवी. जोतां वेंतज हर्षभर राजाए प्रभुने पंचांग प्रणाम कर्यो. एटले आनंद अमृत शरीरमां संचरतां तेनो रोग तत्काळ दूर थइ गयो. पछी राजा रत्नसागरनी साथे भक्तिथी प्रभुनी पूजा करी सुखे राज्य भोगववा लाग्यो. पछी अजय नामनुं नवुं नगर वसावी तेमां पार्श्वनाथनो एक उत्तम प्रासाद करावी प्रभुने बिराजमान कर्या अने पोते त्यां जइ त्रिकाळ पूजा करवा लाग्यो. तेमज तेना कायम निर्वाहार्थे तेणे दश गाम सहित ते नगर अर्पण कर्युं. ते पवित्र बिंब अत्यारे अजारा पार्श्वनाथना नामथी ओळखाय छे. ए अति प्राचीन प्रभुप्रतिमाना दर्शननो अद्‌भूत लाभ लेवा इच्छनार धारे तो थोडा प्रयासे लइ शके एम छे. आ पवित्र अने पुरातन तीर्थ स्थळनी पासे उन्नतपुर (उना) अने दीव बंदरमां पण दर्शन करवा लायक जूनां जिन बिंबो छे. ते स्थळे सुप्रसिद्ध आचार्य श्री हीरसूरिजी पधारेला छे. तेमनो स्वर्गवास पण उनामां थयेलो होवाथी त्यां बगीचामां तेमनो स्तूभ पण बनेलो छे. विशाळ बगीचो जिन मंदिरोना

निर्वाहार्थे बादशाह तरफथी इनाम मळेलो गणाय छे. ते स्तंभ पण दर्शनीय छे. भव्यात्माओए प्रसंगोपात जणावेली उपरनी सघळी हकीकत लक्षमां राखी जेम स्वपरना हितमां अभिवृद्धि थाय तेम प्रवर्ती स्वमानव भवनी सफळता करी लेवी उचित छे.

अर्बुदाचळ (आबूगढ) उपर श्री आदिनाथ तथा नेमिनाथ भगवान.

श्री आबू (देलवाडा) गढ उपर विमळशा मंत्रीश्वरे तथा वस्तुपाळे अने तेजपाळे क्रोडो गमे द्रव्यनो व्यय करीने भव्य देरासरो बंधाव्यां छे. तेमां एवा प्रकारनी उत्तम कोरणी करवामां आवेली छे के दुनीयामां अत्यारे कोइ पण तेनी होड करी शके तेम नथी. पाश्चिमात्य लोको पण एके अवाजे तेनी तारीफ करे छे. उक्त स्थळ द्रव्यथी अने भावथी निवृत्तिजनक छे.

तारंगा (तारण गिरि) उपर श्री अजितनाथ स्वामी.

आ गिरि उपर श्री कुमारपाळ भूपाळनो बनावेलो अति उत्तुंग अने अद्भूत प्रासाद छे तेमां एवा प्रकारनुं काष्ट वापरवामां आवेलुं कहेवाय छे के ते अग्नि संयोगे बळवाने बदले तेमांथी पाणी छूटे छे. तेमां श्री अजितनाथ प्रभुनी अति मनोहर शांत मुद्रा बिराजे छे. आ उत्तम प्रासादनी आसपास चोमेर घणा उंचा अने महिमावाळा पहाडो छे तेमां एक स्थळे कोटि शिला छे, ज्यां एक क्रोड मुनिवरोए अनशन आराधेलुं कहेवाय छे. यात्राळुओने उतरवा वगेरेनी सोइ अहीं बहु सारी छे.

श्री पंचासरा पार्श्वनाथ (अणहिलपुर पाटणमां विराजमान).

शीलगुणसूरि पासे केळवायेला वनराज चावडानी राजधानीनुं शहेर पंचासर हतुं. तेमां जिनप्रासाद बंधावी विराजमान करेला पार्श्वनाथ भगवान पंचासरा कहेवाय छे. काळ दोषथी पंचासर हाल पडी भांग्युं छे. अने पंचासराजीने कुमारपाळ राजाना पायतख्त शहेर पाटणमां विराजमान करवामां आव्या छे. त्यां साथे वनराजनी पण मूर्ति छे. ए उपरांत सकळ कल्याणक भूमिओ तथा गई चोविशीमां थयेला दामोदर नामना तीर्थंकर भगवानना समयमां अषाढी श्रावके भरावेली श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ स्वामीनी अति अद्भूत प्रतिमा तथा प्रतिवासुदेव रावणना वख्तमां भरावेली अंतरिक्ष पार्श्वनाथ स्वामीनी प्रतिमा तथा जेना स्नात्राभिषेक जळथी श्रीपाळ प्रमुखनो कोढ रोग नष्ट थयो हतो, ते श्री ऋषभदेव (केशरीयाजी) तथा खंभात शहेरनां श्री पार्श्वनाथ प्रमुखनी प्राचीन अने प्रभाविक प्रतिमाओ प्रेम सहित वंदन-पूजन करवा लायक छे.

सात प्रकारनी शुद्धि साचववानी जरुर.

अंग वसन मन भूमिका, पूजोपगरण सार;
न्याय द्रव्य विधि शुद्धता, शुद्धि सात प्रकार.

१ अंग शुद्धि, २ वस्त्र शुद्धि, ३ चित्त शुद्धि, ४ भूमिकाशुद्धि, ५ पूजा उपगरण शुद्धि, ६ द्रव्यशुद्धि अने ७ विधि विधान शुद्धि;

५ सात प्रकारनी शुद्धि आत्मार्थी जनोए पवित्र यात्रा प्रसंग पण अवश्य आचरवा योग्य छे. कह्युं छे के " सात शुद्धि समाचरी, करीये नित्य प्रणाम " मतलब के उक्त सात शुद्धिनुं यथायोग्य सेवन करीनेज श्री तीर्थराजने प्रतिदिन प्रणाम करवो घटे छे.

प्रथम अंगशुद्धि–संसारीक कार्यमां रच्या पच्या रहेनार मली-नारंभी गृहस्थ जनोए परमपूज्य श्रीतीर्थपतिनी पूजा सेवामां प्रवर्तता देह शुद्धि विवेक पूर्वक करवी युक्त छे. श्रीमान हरिभद्र सूरिवरे अष्टकमां कह्युंज छे के " प्रायः जळ व्यतिरिक्त जीवोनी विराधना न थाय तेम जयणा सहित देवाधिदेव तीर्थंकर भगवाननी तेमज निस्पृही मुनिजनोनी सेवा भक्ति करवा निमित्ते गृहस्थ जनोने द्रव्य स्नान करवानी अनुमति छे. अने तेम करतां गृहस्थ जनोनो उद्देश उच्च होवाथी ते तेमने पापबंधभणी नहि. परंतु पुण्यपुष्टि निमित्ते थाय छे. सामान्य रीते तो शास्त्रमां कंइक उष्ण जळवडेज शरीर-शुद्धि करवा सूचव्युं छे. परंतु तीर्थजळ प्रस्तावे उष्ण जळनोज आग्रह घटतो नथी; स्वभाविक तीर्थजळनां रजकणोनोज विशेष महिमा ठेकाणे ठेकाणे शास्त्रमां तेमज लोकमां पण प्रसिद्ध छे. तेवां प्रभाविक तीर्थजळोने तपावी–उष्ण करी के करावीने तेवडे स्नान करवानी रुढि सुखशीलपणानेज पुष्टि आपनारी जणाय छे; ते बाबत पुरतो विचार करी हितकर मार्गज आदरवो युक्त छे. पवित्र जळथी देह शुद्धि थया बाद भींजेला मलीन वस्त्रथी शरीरने लूंछवाथी पुनः अंग अशुद्ध थइ जाय छे, माटे तेवे प्रसंगे अलायदा शुद्ध वस्त्रनोज उपयोग

करवो घटित छे. बनतां सुधी स्नान करती वखत पहेरवानुं वस्त्र पण मेलुं–दुर्गंधीवाळुं नहि वापरतां ते पण अलायदुंज राखवुं जोइए. एम करवाथी शरीरनुं आरोग्य पण सचवाइ शके छे. तेवे प्रसंगे नाहक अन्य एकेन्द्रिय प्रमुख जीवोनी विराधना थवा न पामे तेवी सावचेती राखवानी पण जरूरीयात छे. जळने सारी रीत गाळ्या बादज वपराशमां लेवाथी तेमज सूकी अने निर्जीव भूमिनुं यथायोग्य शोधन करीने स्नान करवाथी तेवी जीवयतना सुखे पळी शके छे. प्रभुआज्ञामांज धर्म रहेलो होवाथी अने आज्ञा विरुद्ध करेली के करवामां आवती धर्म करणी निष्फळप्रायः थती होवाथी सद्‌गृहस्थोए जीव जयणा माटे अवश्य काळजी राखवी घटेछे. अने एमज वर्ततां अनुक्रमे आत्मकल्याण साधी शकाय छे. माटे विवेकथी शरीरशुद्धि करवी घटे छे. वळी वायुप्रकोप, विशूचिका (अजीर्ण) प्रमुख रोग पेदा न थाय अने शरीर समधात बन्युं रहे तेवो शुद्ध सात्विक खोराक मितसर लेवाथीज स्वधर्म–कर्म सुखे साधी शकाय छे अने एथी उलटा चालवाथी शरीरनी अस्वस्थता थइ जतां धर्म करणी करवामां अंतराय पडेछे अने वखते देव गुरुनी के तीर्थनी सेवा भक्ति करवा जतां आशातना लागवानो पण प्रसंग आवी पडे छे, ते माटे जेम शरीर शुद्धि सारी रीते जळवाइ रहे तेम वखतोवखत खानपानादिक प्रसंगे पण बहुज काळजी राखवानी जरूर छे. एम करवाथी स्वहित साधनमां अधिक सरलता थइ शकशे. वळी वस्त्र संबंधी शुद्धि राखवानी पण जरूर छे.

बीजी वस्त्र शुद्धि–उत्तम देव गुरुनुं पूजन–अर्चन करवा प्रसंगे

तेमज पवित्र तीर्थराजनी सेवा भक्तिना प्रसंगे पण अंग शुद्धिनी पेरे वस्त्र शुद्धिनी तेटलीज जरूर छे. तेवा उत्तम प्रसंगे पहेरवा ओढवानां वस्त्र मेलां के फाटेलां तूटेलां नहि राखतां ते सारां साफ करेलां अखंडज राखवां जोइए. अने ते पण देव पूजामां छाजे एवां उमदां राखवां जोइए.

एक शाटक उत्तरासंग—देव गुरुने वंदन करवा जतां सांधासुंधी कर्या वगरनुं सळंग अखंड उत्तरासंग राखवानुं गृहस्थ—श्रावकने कहेलुं छे तेम अन्य उचित वस्त्र आश्री पण स्वतः समजी लेवानुं छे. जेम शरीर शुद्धिथी चित्तनी प्रसन्नता बनी रहे छे, तेम वस्त्र शुद्धिथी पण मन उपर सारी असर थइ शके छे; तेथी तेवी बाबतमां केवळ उपेक्षा के खोटी करकसर नहि करतां पोत पोताना गजा प्रमाणे तेवा उत्तम प्रसंगे तो जरूर वस्त्र शुद्धि माटे पण काळजी राखवी उचितज छे. जेओ साधन संपन्न होय (सारी स्थितिमां होय) तेमणे तो संसारिक कार्यमां वपरातां वस्त्रोथी जूदां जूदां धार्मिक कार्यो माटे खास करीने सारां शुद्ध वस्त्रो अलायदांज राखी ममतारहित तेनो यथायोग्य उपयोग करवोज जोइए. जेओ वस्त्र शुद्धिना नियमनो भंग करी जेवां तेवां मलीन वस्त्रो वडेज सर्व व्यवहार चलावे छे तेमने तेमनी गंभीर भूलने लीधे शरीरादिकना आरोग्य माटे पण वधारे सहन करवुं पडे छे. एम विचारी शाणा माणसो वस्त्रशुद्धि माटे पण वधारे काळजी राखे छे.

त्रीजी चित्त शुद्धि—प्रबळ राग द्वेष रूप कषाय, मिथ्यात्व अने अज्ञानता रूप मळने दूर करी देवाथी चित्त शुद्धि थइ शके छे. अथवा

भय, द्वेष अने खेदरूप दोषने दूर करवाथी पण चित्त शुद्धि थइ शके छे. परिणामनी चंचळता एज भय, सद्गुण के सद्गुणवाळी वस्तु उपर अरुचि आववी ते द्वेष अने कल्याणकारी क्रिया करतां थाकी जइए ते खेद; मतलब के जे जे अंतर विकारोवडे चित्तशुद्धि थती अटके छे, ते ते विकारोने विवेकवडे समजी दूर करवाथी चित्त शुद्धि सहेजे संपजे छे. राग द्वेष अने मोह प्रमुख महाविकारोथी सर्वथा मुक्त थयेला वीतराग परमात्माए बतावेलां सघळां आत्म साधननो मूळ हेतु अंतर शुद्धि करवानो ज छे. ते वात सहु कोइ आत्मार्थी भाइ व्हेनोए खास करीने लक्षमां राखवा योग्य छे. जो ए मुद्दानी वात लक्षमां राखी गमे ते आत्मसाधनना मार्गमां यथाशक्ति प्रवर्ते तो तेथी अज्ञान, मिथ्यात्व, कषाय प्रमुख अंतर विकारो उपशम्या वगर रहेता नथी. परंतु उपर जणावेली प्रभुआज्ञा तरफ दुर्लक्ष राखी, जो आपमतिथी के गतानुगतिकताथी क्रिया करवामां आवे तो तेवी अज्ञान क्रियाथी राग द्वेषादिक अंतर विकारो दूर थवाने बदले उलटा वधवानोज संभव वधारे रहे छे. जेम लाभनो अर्थी व्यापारी गमे ते व्यापार करतां परिणामे पोताने नुकशान नहिं थतां थोडो घणो पण चोख्खो लाभज थाय तेवोज व्यापार करे छे तेम आत्मार्थी जनोए पण हरेक धर्म करणी करतां पोताना राग द्वेष मोह मिथ्यात्वादिक अंतर विकारो दूर थता जाय अने चित्त शुद्धि प्रमुख उत्तम लाभ मळतो जाय तेवीज रीते प्रवर्तवुं उचित छे. कोइ प्रकारे विकारनी वृद्धि तो थवा न ज पामे तेवी पूरती काळजी हरेक प्रसंगे राखवी जोइए.

चोथी भूमिका शुद्धि—बे प्रकारनी भूमिका शुद्धि कहेवाय छे. एक द्रव्य भूमिकाशुद्धि अने बीजी भाव भूमिकाशुद्धि. देव गुरुने जुहारवा जतां जयणा सहित विधि पूर्वक चैत्यद्वारमां के उपाश्रयमां पेसी दूरथी पण देव गुरुनुं दर्शन थतां ज अंजलिबद्ध नमन करी प्रदक्षिणा दइ नजरे पडती आशातना टाळी देव गुरु सन्मुख अति नम्रपणे आवी पंचांग प्रणाम करती वखते उत्तरासंग प्रमुख वडे यथायोग्य भूमि प्रमार्जन करीनेज शुद्ध देव गुरुनी पूजा भक्ति के स्तुति करवी उचित छे. आ प्रमाणे विधि साचववानो हेतु पोतानी भाव भूमिका—हृदयशुद्धि करवी एज छे. पूर्वोक्त भय, द्वेष अने खेद दोषने दूर करवाथी भाव भूमिकानी शुद्धि थइ शके छे. जेम जिन चैत्यादिकनुं निर्माण करतां भूमिका शुद्धि करवा माटे भूमिमां रहेलां शल्यादिक दूर करी देवामां आवे छे, तेम हृदय भूमिमां रहेलां राग द्वेषादिक (कषाय) शल्य, मिथ्यात्व शल्य, तेमज पूर्वोक्त भयादिक शल्यो अवश्य दूर करवां ज जोइए, त्यारेज यथार्थ अंतर शुद्धि थयेली गणाय छे. जेम शल्य रहित शुद्ध भूमिका उपर चणावेला प्रासादमां सुखे निवास करी शकाय छे तेम जेमां अंतर शल्य दूर थयां छे एवी हृदय शुद्धिवाळा सज्जनो ज सहजानंदमां निमग्न रही शके छे. खरेखरूं सुख हृदय शुद्धिमां ज छे. तेथी जेम सत्वर हृदय शुद्धि थाय तेम पवित्र लक्ष सहितज हरेक प्रसंगे आत्मार्थी जनोए प्रवर्तवानुं छे. गाडरिया प्रवाहे प्रवर्तवाथी कशुं आत्महित सधातु नथी. तेथी जेवी रीते हृदय शुद्धि थवा पामे तेवा अंतर लक्ष—उपयोग सहितज सकळ धर्म करणी करवी हितकर छे. बाकी लोक रंजनार्थे के अंध परंपराए

वर्त्तवामां कंइ पण अधिक हित नथी ज.

पांचमी पूजा उपगरण शुद्धि—श्री तीर्थराजने भेटती वखते शुद्ध देवगुरुनी सेवा भक्तिना प्रसंगे जे कंई उपगरणो—पूजा सामग्रीनी जरूर पडे, ते अति उदार दीलथी सारी संभाळपूर्वक उत्तम प्रकारनी मंगळिक द्रव्यो वडे निपजावेल होय तो चित्तनी प्रसन्नता साथे भाव उल्लासना वृद्धि निमित्त बने छे. पूर्व महा पुरुषोए प्रभु भक्ति प्रसंगे जे मर्यादा अंकित करेली छे तेने अनुसरी यथाशक्ति प्रमाद रहित आपणे पण आत्म कल्याणार्थे लाभ लेवो उचित छे.

स्वस्व शक्ति—साधन प्रमाणे अनेक प्रकारे प्रभु पूजा थई शके छे, तेमां अष्ट प्रकारी पूजा प्रतिदिन लक्ष पूर्वक करवा दरेक श्रद्धाळु भाई व्हेनोए उजमाळ रहेवुं जोईए.

अष्ट प्रकारी पूजा जेम अंतर लक्ष सहित करवामां आवे तेमज अधिक आत्महित रूप होवाथी ते बाबत अत्र प्रसंगोपात संक्षेपथी ब्यान करीए छीए.

१ जळपूजा—शुद्ध करेलां पवित्र कुंभादिकमां जयणा सहित गाळीने आणेलां तीर्थजळादिकवडे स्नात्र अभिषेक (प्रक्षालन) करतां हृदयमां भाववुं के प्रभु अभिषेकना प्रभावे अमारा अनादि कर्म—कश्मल दूर थई जाय. शुचि—पवित्र जळथी जयणासहित स्नान करी इन्द्रनी पेरे उत्तम वस्त्रालंकार धारण करी निर्मळ नीरनी धाराथी अंतर लक्षपूर्वक श्री जिनेश्वर प्रभुने न्हवरावतां उत्तम भावना योगे पोतेज पोताना आत्माने कर्म मळ रहित करी शके छे.

प्रभुने अभिषेक करी रह्या बाद घणांज सुंवाळां बारीक वस्त्रथी प्रभुना पवित्र गात्रने आदर सहित लुंछी लेवुं, त्यारपछी अनुक्रमे उत्तम चंदनादिकवडे पूजा करवी उचित छे.

२ चंदन पूजा—प्रभुना आखा अंगे उत्तम चंदन प्रमुख शीतळ पदार्थो एकठा मेळवी विलेपन करवुं जोइए. आजकाल केटलाक मुग्ध भाई व्हेनो उपर मुजब अंग विलेपन करवुं मुकी दई प्रभुना अंगे पुष्कळ केशर चढावे छे. जो के चोख्खुं केशर मळे तो तेवडे प्रभुना अंगे तिलक प्रमुख करवा निषेध नथी परंतु खास करीने चंदननोज मोटो भाग वापरवानो छे. अंतर लक्षथी चंदन प्रमुखना शीतल रसवडे प्रभुने विलेपन करतां भाविक आत्मा पोतानेज कषाय तापथी मुक्त करी शीतळ करी शके छे. प्रभुना आलंबनथी पोतेज शीतळ बनेछे एटले राग द्वेष रूप कषाय तापथी मुकाइ शांत थायछे.

३ कुसुम (पुष्प) पूजा—उत्तम प्रकारनां ताजां खुशबोदार खीलेलां अखंड फुलोवडे प्रभु पूजा करनार प्रभुना आलंबने चित्तनी प्रसन्नता प्राप्त करी शके छे. काची कळीओ के नहिं उघडेलां तेमज वासी अने जीवाकुल पुष्पो प्रभुने चढाववां योग्य नथी. थोडां के घणां उत्तम जातनां फुलवडेज प्रभु पूजा करवी उचित छे. शास्त्र नीति अनुसारे फुलने किलामना न उपजे तेम पुष्प माळाओ, पुष्पगृह के पुष्पना पगर भरवादिक वडे पण प्रभु पूजा कराय छे. केटलाक भोळा लोको शास्त्र नीतिने बाजु मुकी फुलने सोयथी घोंचीने पुष्पमाळा तैयार करावी ले छे, ते व्याजबी जणातुं नथी. काचा

मुतरना दोरावडे शिथिल गांठ दईने उत्तम सुगंधी पुष्पोनी जे माळा जयणाथी करवामां आवी होय तेवडे प्रभु पूजा करवी उचित गणाय छे.

४ धूप पूजा—उत्तम द्वादशांग, कृष्णागरु, कर्पूर प्रमुख द्रव्योथी, बनावेल धूपनी घटा उखेवतां जेम धूप घटा उंची चढे छे अने दुर्गंधने दूर करी सुवासना विस्तारे छे तेम धूप पूजा करनार आत्मा प्रभु आलंबने अनादि मिथ्यात्वरुप कुवासनाने टाळी सुश्रद्धान रुप सुवासनाने विस्तारी उंची गति पामवानो अधिकारी थई शके छे.

लघु कल्पमां कह्युं छे के सामान्य धूप पूजा करवाथी पंदर उपवासनुं फळ मळे छे अने उत्तम कर्पूरादिक मिश्र धूप पूजा करवाथी एक मास उपवासनुं फळ मळे छे. तेथी उक्त पूजामां अधिक प्रीति जोडवी उचित छे.

५ दीप पूजा—गायना उत्तम सुगंधी घी वडे दीपक पूजा करनार पोतानो अनादि अज्ञान अंधकार दूर करी उत्तम ज्ञान प्रकाश मेळवी शके छे. परंतु ते प्रसंगे दीपकमां पतंगादिक जीवो जंपलाई पडी विनाश न पामे तेवी जयणा खातर फानस विगेरेनो उपयोग राखवो जरुरनो छे. जिन मंदिर प्रमुखमां कोई पण दीपक प्रगटावतां जयणाने विसरी जवी जोईए नहिं. जेटलुं काम जयणा सहित बने तेटलुंज कल्याणकारी छे, हांडी, झुंमर विगेरेमां पण दीपको प्रगटी राखतां जरुर जयणा राखवी जोईए.

६ अक्षत—अखंड (अर्णाशुद्ध) तांदुलवडे आत्माने स्वस्ति—क-

ल्याणकारी स्वस्तिक रचनार आत्मा उत्तम भावना योगे रत्नत्रयी-रूप प्रभुना मार्गने पामी चार गतिने छेदी, अंते सिद्धि गतिने पामी शके छे. स्वस्तिक (साथियो) रचतां प्रभु समीपे उपर जणावेलीज प्रार्थना शुभ भावना सहित करवी जोईए.

७ नैवेद्य—अनादि देहाध्यास (देह ममता) योगे जीवने जातजातनां खान पानमां रति लागली छे तेथी विरक्त थवाने प्रभु समीपे विध विध जातनां पकवान्न, रसोई ढोकी एवीज प्रभु प्रार्थना करवानी छे के हे प्रभु! अनादि पुद्गलानंदीपणुं तजावी अमने अणाहारी पद प्राप्त करावो.

८ फळ—सरस उत्तम जातिनां विध विध फळ प्रभु पासे ढोकी एवी प्रार्थना करवानी छे के हे जगदीश! आप अमारां अनादि जन्म जरा मरण संबंधी अनंतां दुःख निवारी अमने अक्षय सुखमय मोक्ष सुखनी बक्षीस आपो! आवी रीते संक्षेपथी हेतु सहित समजावेली अष्ट प्रकारी पूजा हरेक श्रद्धालु भाई ब्हेनोए प्रतिदिन करवा खेप करवो जोईए. उक्त द्रव्य पूजा कर्या बाद चैत्यवंदन प्रमुख वडे प्रभुना गुणग्राम करी आत्माने तल्लीन करवो युक्त छे.

छठ्ठी द्रव्य शुद्धि—प्रभु पूजादिक निमित्ते जोईतां बधां पूजोपगरण न्याय युक्त द्रव्यथी मेळववा प्रयत्न करवो जोईए. मतलब के श्रद्धावंत गृहस्थे प्रथम तो अनीति के अन्यायनो मार्ग तजी नीति-न्यायना धोरणनेज अवलंबी रहेवुं जोईए. नीतिथी व्यापारादिक करतां द्रव्य न मळे एवी मान्यता केवळ मुर्खाइ भरेलीज जाणवी.

शास्त्रकार तो द्रव्य उपार्जन माटे खरो उपायज नीतिनो बतावे छे, नीतिथी द्रव्य मळे छे एटलुंज नहिं पण मळेलुं द्रव्य सुखे भोगवी शकाय छे अने स्थिर टकी रहेवाथी वंश परंपरा सुधी चाल्या करे छे. वळी नीतिना द्रव्यथी सद्बुद्धि सुजे छे, तेनो सद्व्यय थाय छे अने परिणामे ते महा लाभदायी नीवडे छे. वळी अनीतिना मार्गे उपार्जेला धनना भोगवटाथी बुद्धि बगडे छे, ते भोगवतां कइक विघ्नो आवे छे, अने थोडा वखतमां तेनो नाश पण थइ जाय छे. सळेलां धान्यनी पेरे अनीतिनुं द्रव्य फळदायी थइ शकतुं नथी. तेथीज ज्ञानी पुरुषो पोकारी पोकारी नीतिनोज मार्ग आदरवा आग्रह करे छे. ते मार्गे चालनार प्रभुनी आज्ञानुं पालन करनार लेखाय छे अने ते सद्गतिनो भागी थइ अंते परम पद—मोक्ष सुखनो भोक्ता थइ शके छे.

सातमी यथायोग्य विधि शुद्धि—तीर्थ यात्रा करवा जतां आपणा आत्मानुं एकांत हित सधाय तेवी रीत जयणा सहित जावुं. मार्गमां कोइ प्रकारनी विकथा करवी नहिं. कोइ साथे क्लेशमां उतरवुं नहि. कोइने अप्रिय लागे अने अहितरूप थाय तेवुं वचन नज कहेवुं. शांत वृत्तिथी चित्तमां शुभ भावना भावतां भावतां अळवाणां(उघाडे)पगे संभाळ राखी राखीने चालवुं. विना कारण कोइने बोजारूप न थावुं. पवित्र तीर्थराजनो योग पामी सुखशीलपणुं ओछुं करवुं. पोताना मन वचन कायाने बनी शके तेटलां नियममां राखवां. कोइना वचन उपर खीजवाइ जइ पोताना मननी शांति खोइ देवी नहिं. एवी रीते काळजी राखीने विधि सहित तीर्थ स्पर्शना करवी. तेवा प्रसंगे कृप-

णतादिक दोषो दूर करी उदार वृत्ति आचरवी. तीर्थपति श्री-अरिहंत महाराजने भेटी भाव सहित, चढता परिणामे प्रभुनी पूजा अर्चा (सेवा—भक्ति) करवी. आपणी समज प्रमाणे प्रभुनी स्तुति करवी. सामान्य रीते सघळां चैत्यो आदरपूर्वक जुहारवां. अति नम्र-पणे प्रभु मुद्राओने निहाळी निहाळी नमन करतां जवुं. अने विशिष्ट स्थळोए स्थिरताथी चैत्यवंदन प्रमुख करवा पण लक्ष राखवुं. प्रद-क्षिणा देतां क्यांय कोइ प्रकारनी आशातना थती के थयेली नजरे पडे तो ते निवारवा—दूर करवा खास चीवट राखवी. पोतानाथी जे थइ नज शके एवुं होय ते करवा अन्य योग्य जनने भलामण करी देवी. पण तेवी बाबतमां छेक उपेक्षा तो नज करवी. आशातना टाळवी ते पण भक्तिनुंज अंग गणाय छे. मार्गमां चालतां के तीर्थ उपर चढतां प्रभु आज्ञानां स्वपी एटले पवित्र शासन रागी जे कोइ साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका मळे तेमनो उचित विनय साचववो. बनी शके तेटलो तेमनी सेवा भक्तिवडे आराधना करवी, परंतु विराधना तो कदापि पण करवीज नहिं. उपर के नीचे जिन चैत्या-दिकमां चैत्यवंदन करतां आपणाथी जे ज्ञानादिक गुणमां अधिक होय तेवा वडील जनोनो अधिक विनय साचववो. तेओ चैत्यवंदना-दिक करता होय तो आपणे ते नम्र वृत्तिथी श्रवण करवुं. परंतु तेमनाथी जूदुं करीने सामुं डोळी नांखवुं नहिं. तेम छतां जूदुं करवा जेवोज प्रसंग होय, तोपण एवा मंद स्वरथी करवुं के जेथी बीजानी भक्तिमां कोइ पण प्रकारे व्याघात पडे नहिं. जिन मंदिरमां पेसतां के नीकळतां घंटादिक वगाडतां पण एवो ख्याल अवश्य राखवो.

मतलब के जे कंइ करणी आपणे करीये ते एवा अंतर लक्षथी करवी के तेथी आपणुं एकांत हित थवा उपरांत बीजा पण आत्मार्थी जनो तेनुं अनुमोदन तेमज अनुकरण करे. स्थिर चित्तथी करेली धर्म करणी लेखे थाय छे, तेथी आपणी स्थिरता टकी रहे तेवी अने तेटली करणी प्रसन्नचित्तथी करवी. दुनियाना सर्व जीवो साथे तेमां पण आपणा साधर्मी भाइओ तथा व्हेनो साथे विशेष करीने मैत्री भाव राखवो. धर्मचुस्त सद्‌गुणी जनोमां प्रगटी नीकळेला सद्‌गुणो निहाळी निहाळीने दीलमां बहुज राजी थावुं. तेमनामांथी बनी शके तेटला सद्‌गुण ग्रहण करीनेज कृतार्थ थावुं. द्वेष ईर्षा अदेखाइ प्रमुख दुर्गुणोने तो देशवटोज देवो. दोष दृष्टिथी गुण ग्रहण करी शकातोज नथी परंतु उलटा आपणामां दोषनीज वृद्धि थाय छे. जे बापडा नवीन–शिखाउ होय एटले धर्म अभ्यासमां पश्चात् होय तेमना उपर अनुकंपा लावी जेम तेओ पण अभ्यासमां आगळ वधी आपणी बराबर थाय तेम इच्छवुं अने करवुं, पण नाहक तेमनी उपेक्षा के अवगणना करवी नहिंज. गमे तेवा पापी तथा देव गुरुना निंदक होय तोपण तेमनी उपर द्वेष करवामां पोताने तेमज तेमने कशो फायदो थतो नथी, तेथी द्वेष तो नज करवो. तेमज तेवा निर्दय प्राणीओ साथे राग पण करवामां कशुं स्वहित के परहित सधातुं नथी तेथी राग पण न करवो. तेमनाथी तो तद्दन उदासीनज रहेवुं हितकारी छे. उपर संक्षेप मात्रथी कहेली मैत्री, मुदिता, करुणा अने माध्यस्थ्य भावनाथी सदाय आपणा आत्माने सुवासित राखवो. वळी विधिना प्रस्तावे शास्त्रकारे कहेलुं छे के:–

" दग्ध शून्य ने अविधि दोष, अति प्रवृत्ति जेह,
चार दोष छंडी भजो, भक्ति भाव गुण गेह."

मतलब के विधि रसिक जनोए दग्धदोष, शून्यतादोष, अविधि दोष अने अतिप्रवृत्तिदोष; ए चार दोषोने अवश्य तजवा जोइए. उक्त चार दोष रहितपणे देव गुरु के तीर्थ संबंधी सेवा भक्ति बहु गुणकारी—अत्यंत लाभदायी थई शके छे, माटे ते चारे दोषनुं स्वरूप समजवा अने समजीने निर्दोष करणी करवा प्रयत्न करवो घटे छे.

१ दग्धदोष—कोइएक धर्मकरणी करतां बीजी बीजी करणी करवा मन दोराय, मन मुकाम नहि रहेतां, चालती क्रियानो लाभ नहि लेतां अन्य अन्य स्थाने भटके, तेथी चालु करणी निष्फळप्राय थई जाय. चालु क्रियामां अंगारानी वृष्टिवत् लेखी शकाय.

२ शून्यतादोष—जे कंई धर्मकरणी करवामां आवे ते संमूर्छिमनी पेरे उपयोग शून्यपणे समज वगर अथवा शब्द, अर्थ के तदुभयना लक्ष वगरज कराय अथवा तो हुं शुं करूं छुं? में शुं कर्युं? तेमज हवे मारे शुं करवानुं छे? तेनुं जेमां कशुंज भान न होय, एवी शून्य करणीथी शो लाभ थई शके? कशोज नहिं. भाव वगरनी करणीमां शो रस?

३ अविधि दोष—जे धर्मकरणीनो जेवो क्रम (मर्यादा) जणावेल होय तेथी विपरीत—उलटपालट आपमतिथी करे के ज्ञानीने पूछी यथार्थ समज मेळव्या वगरज जेम फावे तेम गाडरीया प्रवाहे करे या तो अधिक ओछी करे अथवा आगळ पाछळ करे तेथी स्वहित भाग्येज थाय, अविधिथी तो पण उलटुं अहित पण थाय.

४ अति प्रवृत्ति दोष—दिगंबरनी पेरे देश, काळ, भावने तपास्या

वगर गजा उपरांतनी क्रिया करवानो खोटो आग्रह कहो के कदाग्रह करे तेथी पण लाभने बदले हानिज थाय.

उक्त चारे दोषोनुं स्वरूप गुरु गम्यथी विशेषे जाणी जेम बने तेम निर्दोष–दोषरहित धर्मकरणी करवा खप करवो तेमज जेओ विधि रसिक होई सेववामां आवती धर्मकरणीनुं रहस्य गुरुगम्य मेळवी ते प्रमाणे आदर सहित आचरण करता होय तेवा उत्तम पुरुषोनो समागम मेळवी तेमनी शुद्ध निर्दोष धर्मकरणी निहाळी पोतानी धर्म करणीमां चलावी लेवानी भलो सुधारवाना खपी थवुं बहु जरूरनुं छे.

जे भाग्यवंत जनो यथार्थ विधि युक्त धर्मकरणी करे छे, तेओ धन्य कृत पुन्य छे. तेमज जेओ पोते यथाशक्ति निर्दोष धर्मकरणी करवा उपरांत अन्य योग्य जनोने तेमां सहाय करे छे, निर्दोष करणीनी अनुमोदना करे छे–तेनी मुक्त कंठथी प्रशंसा करे छे. यावत् तेनी प्राणांते निंदा तो कदापि करताज नथी, तेओ पण धन्य छे. निर्दोष धर्मकरणीनी तेमज निर्दोष करणी करनारनी निंदा करनारने निकाचित कर्म बंध थाय छे जेथी तेने बहुज संसार परिभ्रमण करवुं पडे छे; तेथी तेवी निंदा तो सर्वथा वर्जवा योग्यज छे.

जेमने शरुआतमां धर्मकरणी करतां सहज स्खलनारुप अविधि दोष लागे छे, परंतु तेनो यथार्थ विधि जाणवा अने आदरवा जे खप करे छे तेओ पण शुभ भावना योगे सारो लाभ मेळवी शके छे. जेओ कहे छे के अविधिथी करवा करतां नहिज करवुं सारुं, ते तेमनुं कहेवुं विपरीत–शास्त्र विरुद्धज छे. आत्मार्थी भाई व्हेनोए प्रमाद तजी विधिना खपी तो थवुंज जोइए.

"श्री अष्टापद [1]कल्प–सारांशः"

श्रेष्ठ धर्म [2]कीर्ति युक्त, सत ज्ञान अने आनंदे करी सहित तथा देवेन्द्रोथी वंदित एवा श्री आदिनाथ प्रभुए जेने पावन करेल छे, ते अष्टापद गिरिराज जयवंत वर्ते छे. १.

जे अष्टापद पर्वतपर द्यूत (जुगार) प्रमुख लाखो गमे दोषोने हरनार तथा सुवर्ण सदृश कांतिवाळा श्री ऋषभदेव भगवान थया छे (निर्वाण पाम्या छे) ते अष्टापद गिरिराज जयवंत वर्ते छे. २

मुनिओने विषे श्रेष्ठ एवा श्री ऋषभदेव प्रभुना बाहुबलि प्रमुख ९९ पुत्रो ज्यां अक्षय सुखने पाम्या छे ते श्री अष्टापद गिरिराज० ३

१ अष्टापदादिक मूळ कल्प प्रशमरति साथे तेमज धनपाळ पंचाशिका साथे प्रसिद्ध थयेला छे त्यांथी जोइ लेवा.

२ आ कल्पना प्रथम श्लोकमां दर्शावेला गर्भित नामोवडे करीने एना कर्ता श्रीमद्देवेंद्रसूरि शिष्य श्रीमद् धर्मघोषसूरि छे एम चोकस जणाय छे. धर्मघोषसूरिने प्रथम गणिपद मळ्युं ते वखते तेमनुं नाम धर्मकीर्ति हतुं अने विद्यानंद मुनि तेमना वडील गुरु भाई हता. तेथी पहेला पादमां धर्मकीर्ति; बीजा पादमां विद्यानंद अने त्रीजा पादमां देवेंद्रसूरि एम त्रण नाम सूचव्या छे. धर्मकीर्ति नाम दर्शाव्युं छे तेथी आ कल्प तेमणे गणि अवस्थामां रच्यो छे एम निर्णय थाय छे.

जाणे प्रभुना वियोगथी भय पाम्या होय तेम प्रभुनी साथेज दशहजार मुनिवरो ज्यां मोक्षपदने पाम्या छे, ते अष्टापद गिरि० ४

ज्यां ऋषभदेव प्रभुनी साथे एकज समये तेमना नवाणु पुत्रो अने आठ पौत्रो समकाळे शिवसुखने पाम्या छे. ते अष्टापद० ५

तीर्थंकरनी, गणधरनी अने शेष मुनिजनोनी—एम त्रण चिताने स्थाने जाणे साक्षात् रत्नत्रयीज होय तेवा त्रण स्तूपो ज्यां इंद्रे स्थापन कर्या (रच्या) छे, ते अष्टापद० ६

शाश्वत जिन मंदिर (सिद्धायतन) जेवुं सिंहनिषद्या (सिंह बेठो होय तेवा आकारनुं) नामनुं सुशोभित चार द्वारवाळुं जिन चैत्य ज्यां भरते निर्माण कराव्युं, ते श्री अष्टापद० ७

एक योजन लांबुं, तेथी अर्धु (बे कोस) पहोळुं अने त्रण कोस उंचुं एवुं जिनचैत्य ज्यां उंचे प्रकारे (झळझळाट करतुं) विराजे छे, ते श्री अष्टापद० ८

ज्यां भरतचक्रीए पोतानी प्रतिमा सहित पोताना नवाणु भाईओनी प्रतिमाओ अने चोवीश तीर्थंकरनी प्रतिमाओ निर्माण करी, ते श्री अष्टापद० ९

पोत पोतानी आकृति (शरीर) प्रमाण, वर्ण अने लांछन संयुक्त वर्तमान २४ जिनेश्वरोना बिंबो ज्यां (सिंहनिषद्या चैत्यमां) भरत चक्रीए पधराव्यां, ते श्री अष्टापद० १०

ज्यां प्रतिमा सहित नवाणुं बंधुओना नवाणुं स्तूपो तथा एक प्रभुनो स्तूप भरत चक्रीए निर्माण कर्यो, ते श्री अष्टापद० ११

मोहरूप सिंहने हणवाने समर्थ अष्टापद (आठ पगवाळा जानवर) जेवा जेना (योजन प्रमाण) आठ पगथीयां भरते कराव्यां, तथा ते जेथी आठ योजन उंचो शोभे छे, ते श्री अष्टापद० १२

भरतचक्री प्रमुख अनेक कोटी मुनिवरो ज्यां सिद्धिपदने वर्या, ते श्री अष्टापद० १३

ज्यां अनशन करी सर्वार्थसिद्ध विमानमां अने मोक्षमां गयेला भरतवंशना (असंख्य) राजर्षिओनी वात सुबुद्धि प्रधाने सगरचक्रीना पुत्रोने कही, ते श्री अष्टापद० १४

(तेथी) सागर जेवा गंभीर आशयवाला ते सगरचक्रीना पुत्रोए जे गिरिनी चोमेर (फरती) रक्षा करवा माटे सागरना जेवी (उंडी अने विशाळ) खाइ खोदी–नीपजावी, ते श्री अष्टापद० १५

सदा उंचा प्रकारे नाचता चपळ तरंगो रूपी पोताना सुशोभित हस्तोवडे जाणे पोतानुं पाप क्षालन करवा इच्छती होय तेवी गंगानदीए श्री जिनेश्वर संबंधी जे गिरिराजनो चोमेरथी आश्रय कर्यो, ते श्री अष्टापद० १६

ज्यां (चोवीशे) जिनेश्वरने (मणिमय) तिलक चडाववाथी दमयंती तेना यथार्थ फळ तरीके पोतानाज ललाटमां अकृत्रिम एटले स्वाभाविक तिलकने पामी. मतलब के तेणीनुं कपाळज सूर्य जेवुं प्रकाशमान थयुं, ते श्री अष्टापद० १७

जे गिरिने कोपथी समुद्रमां फेंकी देवा इच्छता रावणने वाली नामना मुनिए पोताना पादवडे (पर्वतसाथे) दबाववाने तत्काळ राववराव्यो, ते श्री अष्टापद० १८

भुजानी नसथी, त्रुटेली तांत सांधी लीधेली वीणावडे प्रभुनी भक्ति करतो रावण ज्यां धरणेन्द्र पासेथी विजय आपनारी अमोघविजया शक्तिने पाम्यो, ते श्री अष्टापद० १९

वसुदेवनी जेम जे तीर्थउपर वसता शत्रुने प्रहार करतो विद्याधर पण विद्याहीन थई जाय छे, ते श्री अष्टापद० २०

स्वशक्तिवडे आ गिरिवर उपर आवीने जे जिनोने वांदे, ते अवश्य अचळ उदय (मोक्षने) पामे, एवी रीते श्री वीरे जेने वखाण्यो छे, ते श्री अष्टापद० २१

दक्षिणादिक चार दिशाओमां स्थापेला ४. ८, १० अने २ मळीने चोवीशे जिनबिंबोने चतुर गणधर श्री गौतमस्वामीए ज्यां वंदना करी छे. ते श्री अष्टापद० २२

जे पर्वत उपर गौतमस्वामीए उपदेशेल पुंडरीक अध्ययननुं पठन करवाथी (सांभळवाथी) तिर्यगजृंभकदेव दशपूर्वधरमां प्रधान एवा दशमा पट्टधर (वज्रर्षि नामे) थया, ते श्री अष्टापद० २३

जेमणे जिनेश्वर प्रभुने स्तव्या छे, एवा श्री गौतम गणधरे ज्यां पंदरसो तापसोने दीक्षा आपी, ते श्री अष्टापद० २४

आठ पगथीयांवाळा अने चिरकाळ स्थायी रहेवावाळा श्रीअष्टापद पर्वतनी जेवा सुवर्णमय अने निश्चल वृत्तिवाळा जे सर्वज्ञ प्रभुए आ महातीर्थनुं वर्णन कर्युं छे, ते श्री अष्टापदगिरि अथवा अष्टापदगिरिना नायक श्री आदिदेवप्रभु जयवंत वर्ते छे. २५

। इति श्री अष्टापदकल्पसारांशः ।

गिरनारकल्पसारांश:*

ज्यां विशेषे करीने नम्या छे इंद्रो जेमने एवा, प्रवर धर्म, कीर्ति, ज्ञान अने आनंदथी भरपूर तथा कल्याणनी लक्ष्मीथी युक्त एवा श्री नेमिनाथ प्रभु विराजे छे, ते गिरनार गिरीश्वर जयवंत वर्ते छे. १

यादवोनी उपेक्षा करीने तेमज राजीमतीनो त्याग करीने नेमिप्रभुए मोक्ष मेळववा माटे जेनो आश्रय कर्यो, ते गिरनार० २

छत्र शिलाना अंत भागे (उपर) दीक्षा ग्रहण करीने जेना उंचा शिखर पर रही स्वामी श्री नेमिनाथे स्वस्वरुपनुं अवलोकन कर्युं, ते गिरनार० ३

ज्यां सहस्राम्रवनमां केवळज्ञान पामीने लक्षाराममां (समवसरणमां बेसी) प्रभुए धर्म उपदिश्यो ते गिरनार० ४

जेना उच्च प्रदेश उपर रहीने यादवतिलक श्रीनेमिप्रभु निवृत्ति रुपी स्त्रीना श्रेष्ठ नितंबनुं सुख पाम्या, ते गिरनार० ५

ज्यां नेमिप्रभुना (दीक्षा, केवळ अने निर्वाणरुप) त्रण कल्याण जाणीने कृष्ण वासुदेवे रुपानां, सुवर्णनां अने मणिनां बिंबमय त्रण चैत्यो कराव्यां, ते गिरनार० ६

---

*आ कल्पमां पण अष्टापद कल्पनी पेठे धर्मकीर्ति, विद्यानंद अने देवेंद्र ए त्रण नामो पहेला श्लोकमां सूचव्यां छे तेथी आ कल्पना कर्ता पण श्रीमद् धर्मघोष सूरि छे एम निर्णय थाय छे.

जे गिरिनां मध्यमां इंद्रे वज्रवडे विवर करीने कांचन बलानक-मय रजत चैत्य बनाव्युं, ते गिरनार० ७

ए चैत्यना मध्यमां श्री नेमि प्रभुनी रत्नमयी मूर्त्ति प्रभुना देह-मान अने वर्ण प्रमाणे इंद्रे स्थापन करी, ते श्री गिरनार० ८

स्वकृत आ बिंब युक्त बीजां त्रण बिंबने इंद्रे देवताओ पासे जे चैत्यना मध्यमां समवसरणमां स्थापन कराव्या, ते गिरनार० ९

जेना चैत्यमां अवलोकन वाळा (खुल्ला) उपरना रंग मंडपमां अंबानी मूर्त्ति छे. अने बलानकमां शांबनी मूर्ति छे, ते गिरनार० १०

चिंतित अर्थनी सिद्धि करनार सिद्धि विनायक देव ज्यां प्रद्यु-म्ननी आगळ प्रतिहार रुपे रहेल छे. ते गिरनार० ११

प्रभुना निर्वाण स्थाने पूर्व सन्मुख तेनीज जेवुं बीजुं चैत्य ज्यां इंद्रे निर्माण कर्युं, ते गिरनार० १२

जे तीर्थे (भगवंतना) अत्यंत स्मरणथी कालमेघ प्रमुख सात यादवो क्षेत्र अधिष्ठायक (यक्ष)पणाने पाम्या, ते गिरनार० १३

ज्यां इंद्रे चोबारुं बलानक कर्युं छे, अने तेमां रहीने मेघघोष देव ज्यां प्रभुनुं अर्चन करे छे, ते गिरनार० १४

ज्यां सहस्राम्रवनमां चोवीश रमणीय सुवर्ण चैत्यो छे, ते गिरनार० १५

ज्यां लक्षाराम (लाख वृक्षवाळा बागिचा)नी अंदर गुफामां वर्त-मान चोवीशी सहित (त्रण चोवीशीना) बहोंतेर जिनोना बिंबो छे, ते गिरनार० १६

नेमीश्वर प्रभुनी लेप्यमयी प्रतिमा ज्यां बे हजार वर्षसुधी (टकी) रही, ते गिरनार० १७

लेपमय मूर्त्तिनो नाश थये सते अंबादेवीना आदेशथी रतन नामना श्रावके ज्यां पश्चिम सामुं (नवुं) चैत्य स्थाप्युं, ते गिरनार० १८

कांचन बलानकनी अंदरना समवसरणमांथी रतन श्रावके काचा सूत्रना तांतणावडे खेंचीने आ (आज काले विद्यमान) बिंब अहीं आण्युं, ते गिरनार० १९

ज्यां नेमिनाथ प्रभुने नमस्कार करवामां (यात्रा करवामां) बौद्धवडे निषेध करायेला श्री संघ (सहायने माटे) मंत्रबळथी आकाश मार्गे गमन करी शकनार जयचंद्र मुनिने त्यां आववा फरमाव्युं, ते गिरनार० २०

नाग देवीने वश करीने बौद्धोने परास्त करी, जयचंद्र मुनिए ज्यां श्री संघने प्रभुनां दर्शन कराव्यां(प्रभु भेटाव्या), ते गिर०२१.

राजा समक्ष कुमारीना मुखमांथी नीकळेली गाथावडे (सिद्ध करी आपीने) अंबादेवीए दिगंबरीओ पासेथी जे तीर्थ (श्वेतांबर) संघने सदाने माटे सोंपाव्युं, ते गिरनार० २२.

त्यारथी मांडी निरंतर समस्त संघ नित्य अनुष्ठानमां जे १गाथा नो हमेशां पाठ करे छे, ते गिरनार० २३.

दीक्षा, ज्ञान, ध्यान, व्याख्यान (उपदेश) अने मोक्षावलोकनने

१ उज्जिंतसेलसिहरे दीक्खानाणंनिसिहीआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥

(निर्वाणने) स्थाने जे प्रभुचैत्यथी पवित्र छे, ते गिरनार० २४.

राजीमतिनी गुफा. चंद्र गुफा, गजेंद्रपद कुंड अने नागझरी प्रमुख स्थळे जे प्रभुप्रतिमाथी युक्त छे, ते गिरनार० २५.

ज्यां मनोहर अने कल्याणकारक छत्राक्षर, घंटांजनबिंदु अने ²शिवशिलादिक (पवित्र स्थळो) रहेला छे, ते गिरनार० २६.

याकुडी अमात्य अने सज्जन दंडेश प्रमुख अनेक उत्तम जनोए ज्यां नेमीश्वर प्रभुना चैत्यनो उद्धार कर्यो छे, ते श्री गिरनार० २७

जेनी मेखला (कंदोरा) ने स्थाने तेजपाळ मंत्रीश्वरे त्रण कल्याणक संबंधी चैत्य कराव्युं, ते गिरनार० २८.

अने वस्तुपाळे शत्रुंजय, संमेतशिखर अने अष्टापद तीर्थोनी ज्यां रचना करी, ते श्री गिरनार० २९.

(अवसर्पिणी काळना) छ आरामां जे अनुक्रमे छवीश, वीश, सोळ, दश अने बे योजन तथा सो अस्त्र ((धनुष) प्रमाण उंचो वर्ते छे, ते गिरनार० ३०.

अद्यापि ज्यां गीत नृत्यादिकने करता सावधान देवो संभळाय छे, ते गिरनार० ३१.

विद्या प्राभृत (शास्त्र) थकी उद्धरेला पादलिप्तसूरिकृत उज्जयंत कल्प विगेरे उपरथी आ प्रमाणे जेनुं में वर्णन कर्युं छे, ते श्री गिरनार गिरीश्वर जयवंत वर्ते छे. ३२.

॥ इति श्रीगिरनारकल्पसारांशः ॥

---

२ सिद्धि शिलादिक.

अथ श्रीसंमेतशिखरकल्प सारांश:

आ भरत भूमिरूपी स्त्रीना विशाल ललाटस्थळना तिलक तुल्य संमेतशिखर तीर्थ के जे संसार समुद्रना तीर्थ एटले किनारा समान छे, तेने हुं स्तवुं छुं. १

जिनेश्वर अने मुनिजनोना चरण कमलने लागेली रजना समूह वडे जेनो सुंदर प्रदेश शोभी रह्यो छे, अने किन्नर गणो जेनो यश गाइ रह्या छे, ते संमेतशिखर गिरिराज जयवंत वर्ते छे. २

ज्यां अजितादिक वीश जिनो अनेक मुनिओ साथे पधारी कर्ममळ रहित थइ मोक्ष प्रत्ये पाम्या छे, ते संमेत० ३

आने तीर्थ जाणीने शीलसन्नाह नामे मुनींद्र ज्यां अनशन करी कर्म रहित थइने मोक्ष पदने पाम्या, ते संमेत० ४

बीजा पण बहु मुनिओए ज्यां आवीने सुखे मोक्षपद साध्युं, एवो जेनो अपार महिमा छे, ते संमेत० ५

ज्यां अनेक अरिहंत अने मुनिओनो मनोहर मोक्ष महिमा इंद्राए करेलो छे, एवो जगतजनोने आनंदित करनार श्री संमेत० ६.

उत्तम ध्याननें अचळपणे गवेषता मुनिवरोए अचळपणावडे करीने ध्यानना मित्ररुप जे गिरिवरनो आश्रय लीधेलो छे, ते संमेत० ७

ज्यां जिनेश्वरो निर्वाण पाम्या, ते स्थाने देवोए कीर्तिस्तंभ जेवो (अचळ) उत्तम मणिमय स्तूपसमूह निर्माण करेलो छे, ते संमेत. ८

स्तूपगत चैत्योमां अजितादिक जिनपतिनी रमणिक प्रतिमाओ ज्यां सुर अने असुरोवडे पूजाय छे, ते संमेत० ९.

अजितनाथथी पहेलां पण त्यां आवेला आदीश्वर प्रभु अने तेमना शिष्योवडे जेनां शिखर पावन थयेलां होवाथी जे तीर्थपणे प्रसिद्ध थयेल छे, ते संमेत० १०.

अद्यापि जे भव्यजनोने पृथ्वीपरथी स्वर्गे अने मोक्षे चढवाना सोपान (पगथीयां)नी समानताने धारण करतो जणाय छे, ते संमेत० ११

कुंडना जळमां प्रतिबिंबित थती चैत्यश्रेणीने ज्यां संघ समूह पुष्प प्रक्षेपवावडे पूजे छे, ते संमेत० १२.

अत्र जिन समवसरण. अत्र जिन देशना अने अत्र जिन मुक्ति थयेल छे. एवी रीते जिनेश्वरना चरणथी पवित्र थयेला ज्यांना प्रदेशो रमणीय लागे छे, ते संमेत० १३.

साधु संगथी उछरता अभंग संवेग रंगथी रंगायेला हरिणादिक पशुओ पण ज्यां देवगतिने पाम्या छे, ते संमेत० १४.

ज्यां अल्प मात्र करेल तप, जिनपूजा अने अनशनादि तीर्थना प्रभावथी अनल्प (विशाळ) फळने आपे छे, ते संमेत० १५

देवेंद्रो अने मुनींद्रोवडे वंदित अने प्रसिद्ध एवा संमेतशिखर तीर्थने जे भक्तिथी स्तवे छे, ते सकळ आपदा रहित अविचळ मोक्षपदने पामे छे. १६.

॥ इति श्रीसंमेतशिखरकल्पसारांशः ॥

अथ चैत्यवंदनानि.

श्री तीर्थवंदनाख्यं चैत्यवंदनं [१]

सद् भक्त्या देवलोके रविशशिभवने व्यंतराणां निकाये,
नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने:
पाताले पन्नगेंद्रे स्फूटमणिकिरणध्वस्तसांद्रांधकारे,
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥१॥

वैताढ्ये मेरुश्रृंगे रुचकनगवरे कुंडले हस्तिदंते,
वक्षारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते;
चित्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥श्रीमत्तीर्थ.॥२॥

श्रीशैले विंध्यश्रृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा,
संमेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले;
सह्याद्रौ चोज्जयन्ते विपुलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥श्रीमत्तीर्थ॥३॥

आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे,
लाटे नाटे च घाटे विटपि घनतटे देवकूटे विराटे;
कर्णाटे हेमकूटे विकटतरुकटे चित्रकूटे च भोटे ॥श्रीमत्तीर्थ॥४॥

श्री माले मालवे वा मलय निखिले मेखले पीच्छले वा,
नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले मेखले वा;
डाहाले कौशले वा विगलितसलिले जंगले वा तमाले ॥श्रीमत्तीर्थ॥५

अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलिंगे,
गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उड्डीयाणे च पुंद्रे;
आद्रे माद्रे पुलींद्रे द्रविडकुवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे ॥श्रीमत्तीर्थ॥६॥
चंपायां चंद्रमुख्यां गजपुर मथुरापत्तने चोज्जयिन्यां,
कौशांब्यां कोशलायां कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्यां;
नाशिक्ये राजगेहे दशपुरनगरे भद्दिले तामलिप्त्यां ॥श्रीमत्तीर्थ॥७॥
स्वर्गे मर्त्येंतरिक्षे गिरि शिखर हृदे स्वर्नदीनीरतीरे,
शैलाग्रे नागलोके जलनिधि पुलिने भूरुहाणां निकुंजे;
ग्रामेऽरण्ये वने वा जलस्थलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्ये ॥श्रीमत्तीर्थ॥८
श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे ;
वृक्षाग्रे चैत्यवृक्षे रतिकररुचके कुंडले मानुषांगे;
इक्षुकारे जिनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरे स्वर्गलोके ॥श्रीमत्तीर्थ॥९॥
इत्थं श्री जैनचैत्यस्तवमिममनिशं भक्ति भाजास्त्रिसंध्यं,
प्रोद्यत् कल्याणहेतुं कलिमलहरणं ये पठंति विशिष्टाः;
तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां,
कार्ये सिद्धिस्तथोच्चैः प्रभवति सततं चित्तमानंदकारि. ॥१०॥

इति श्रीतीर्थवंदनाख्यं चैत्यवंदनं समाप्तं.

अथ श्री सिद्धाचल चैत्यवंदनानि.

[२]

[1] विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हितकरं;
सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं. १
विमल गिरिवर श्रृंग मंडण, प्रवर गुण गण भूधरं;
सुर असुर किन्नर कोडी सेवित, नमो आदि जिनेश्वरं. २
करती नाटक किन्नरीगण, गाय जिन गुण मनहरं;
निर्जरावली नमे अहनिश, नमो आदि जिनेश्वरं. ३
पुंडरीक गणपति सिद्धि साधी, कोडि पण [2] मुनि मनहरं;
श्री विमल गिरिवर श्रृंग [3] सिध्या, नमो आदि जिनेश्वरं ४
निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडिनंत [4] ए गिरिवरं;
मुक्ति रमणी [5] वर्या रंग, नमो आदि जिनेश्वरं. ५
पाताल नर सुरलोक मांहि, विमल गिरिवरतो परं; [6]
नहीं अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो आदि जिनेश्वरं. ६
इम विमल गिरिवर शिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्याईए;
निज शुद्ध सत्ता साधनार्थं, परम ज्योति निपाईए. ७
जित मोह कोह विछोह निद्रा, परम पदस्थिति जयकरं;
गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं. ८

---

१ निर्मल, २ पांच, ३ शिखर, ४ अनंत क्रोडो, ५ स्त्री, ६ गिरिराजथी अधिक

[३]

आदीश्वर जिनरायनो. गणधर गुणवंत;
प्रगटनाम पुंडरीक जाम. महीमांहे महंत. १
पंचक्रोड मुणिंद साथ. अणसण जीहां कीध;
शुक्लध्यान ध्यातां अमूल. केवल तीहां लीध. २
चैत्री पूनमने दिने ए. पाम्या पद महानंद;
ते दिनथी पुंडरीकगिरि, नाम दान सुखकंद. ३

---

[४]

श्री शत्रुंजय माहात्म्यनी. रचना कीधी सार;
पुंडरगिरिना स्थापनार. प्रथम जिन गणधार. १
एक दिन वाणी जिननी. श्रवणी थयो आनंद;
आव्या शत्रुंजयगिरि, पंचक्रोड सह रंग. २
चैत्री पूनमने दिने ए. शिव शुं कीयो योग;
नमिए गिरिने गणधरुं. अधिक नहीं त्रिलोक.

---

[५]

आदि देव अरिहंत नमुं. धनुष पांचशें काया;
नहीं काम नहि क्रोध मान. मृषा नहीं माया. १
नहीं राग नहीं द्वेष, नाम निरंजन ताहरुं;
वदन दीठुं विशाल तीहां, सवि पाप गयुं माहरुं. २

नामे हुं निर्मल थयो, जपुं जाप जिनवर तणोः
कवि ऋषभ एम उच्चरे, आदि देव महिमा घणो. ३

[६]

जय जय नाभिनरिंदनंद, सिद्धाचल मंडणः
जय जय प्रथम जिणंदचंद, भवदुःखविहंडण. १
जय जय साधु सुरिंद वृंद, वंदिअ परमेसरः
जय जय जगदानंदकंद, श्री ऋषभ जिणेसर. २
अमृतसम जिनधर्मनो ए, दायक जगमां जाणः
तुजपदपंकज प्रीत धर, निशदिन नमत कल्याण. ३

[७]

परमेश्वर परमातमा, पावन परमिट्ठः
जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणे में दिट्ठ. १
अचल अकल अविकार सार, करुणा रस सिंधुः
जगति जन आधार एक, निष्कारण बंधु. २
गुण अनंत प्रभु ताहरा, किमहि कह्या न जायः
राम प्रभु जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय. ३

अथ श्री सिद्धाचल स्तवनानि ॥

(१)

वीरजी आयारे विमलाचलके मेदान,
सुरपति आयारे समवसरण मंडाण. ए आंकणी.
देशना देवे वीरजी स्वाम. शत्रुंजय महिमा वरणवे ताम;
भाख्यां आठ उपर सो नाम, तेहमां भाख्युंरे पुंडरगारे अभिधान;
सोहम इंद्रारे तव पूछे बहुमान. किम थयुं स्वामीरे,
भाखो तास निदान. वीरजी० १
प्रभुजी भाखे सांभळे इंद्र. प्रथम जे हुवा ऋषभ जिणंद;
तेहना पुत्र ते भरत नरिंद. भरतना हुआरे ऋषभसेन पुंडरीक;
ऋषभजी पासरे देशना सुणी तहकीक,
दीक्षा लीधीरे त्रिपदी ज्ञान अधिक. वीरजी. २
गणधर पदवी पाम्या जाम, द्वादशांगी गुंथी अभिराम;
विचरे महीयलमां गुण धाम. अनुक्रमे आव्यारे श्री सिद्धाचल सार;
मुनिवर कोडिरे पंचनणे परिवार. अनशन कीधुंरे. निज आतमने
उद्धार. वीरजी० ३
चैत्री पुनम दिवसे एह. पाम्या केवळज्ञान अछेह;
शिवसुख वरिया अमर अदेह, पूर्णानंदीरे अगुरु लघु अवगाह;
अज अविनाशीरे निज गुणभोगी अबाह,
निज गुण करतारे पर पुद्गल नहि चाह. वीरजी० ४
तेणे प्रगट्युं पुंडरिक गिरि नाम, सांभळो सोहम देवलोक स्वाम;

एहनो महिमा अतिहि उद्दाम, इणे दिन कीजेरे, तप जप पूजाने दान;
व्रत वळी पोसोरे जेह करे अनिदान, फल तस पामेरे, पंचकोडी गुणुं
मान. वीरजी ५

भक्ते भव्य जीव जे होय, पंचम भव मुक्ति लहे सोय;
तेहमां बाधक छे नहि कोय, व्यवहार केरीरे, मध्यम फलनी ए वात;
उत्कृष्ट योगरे अंतरमुहूर्त विख्यात, शिवसुख साधेरे, निज आतम
अवदात. वीरजी ६

चैत्री पुनम महिमा देख, पूजा पंच प्रकारी विशेष;
तेहमां नहि उणिम कांई रेख, इणीपेरे भाखेरे, जिनवर उत्तम वाण;
सांभळी बुझयारे, केइक भविक सुजाण, इणीपेरे गायोरे,
पद्मविजय सुप्रमाण. वीरजी ७

---

(२)

प्रणमो प्रेमे पुंडरीक गिरि राजीयो, गाजीयो जगमां रे एह सोभागी,
यात्राए जातां पगे पगे निर्जरे, बहु भवसंचित खेह सोभागी. प्र. १
पाप होय वज्रलेप समोवडे, ते पण जायरे दूर सोभागी;
जो एहरे गिरिनुं दरशन कीजीए, भावभक्ति भरपूर सोभागी. प्र० २
गौहत्यादिक हत्या पंच छे, कारक तेहनो जे होय सोभागी;
ते पण ए गिरि दरशन जो करे, पामे शिवगति सोय सोभागी. प्र० ३
श्रीशुकराज नृपति पण इणगिरि, करतो जीनवर ध्यान सोभागी;
षट्मासे रिपु विलय गया सवे, वाध्यो अधिक तस वान सोभागी. प्र.४

चंद्रशेखर निज भगिनी भोगवी, कीधुं पाप महंत सोभागी;
ते पण ए तीरथ आराधतां, पाम्यो शुभगति संत सोभागी. प्र० ५
मोर सर्प वाघण प्रमुख बहु, जीव छे जे विकराल सोभागी.
ते पण ए गिरि दरशन पुण्यथी, पामे सुगति विशाल सोभागी. प्र० ६
एवो महिमा ए तीरथ तणो, चैत्री पुनम विशेष सोभागी;
श्री विजयराज सूरिश्वर शिष्यने, दान गयां दुःखक्लेश सोभागी. प्र० ७

(३)

बापल्डां रे पातीकडां, तमे शुं करशो हवे रहीने रे ॥
श्री सिद्धाचल नयणे निरख्यो, दूर जाओ तुमे वहीने रे ॥१॥
॥ बापलडां रे० ॥
काल अनादि लगे तुम साथे, प्रीत करी निरवहीने रे ॥
आज थकी प्रभु चरणे रहीशुं, एम शिखवीधुं मननेरे ॥ २ ॥
॥ बापल्डां रे० ॥
दुषमकाले एणे भरते, मुक्ति नहीं संघयणनेरे ॥
पण तुज भक्ति मुक्तिने खेंचे. चमक उपल जेम लोहनेरे ॥३॥
॥ बापलडां रे० ॥
शुद्ध सुवासन चूरण आप्युं, मिथ्या पंक शोधननेरे ॥
आतम भाव थयो जब निरमल, आणंदमय तुज भजनेरे ॥४॥
॥ बापल्डां रे० ॥

अखय निधान तुम समकित पामी, कोण वंछे चल धननेरे ॥
शांतसुधारस कनककचोले, सींचो सेवक तननेरे ॥ ५ ॥
॥ बापलडां रे० ॥

बाह्य अभ्यंतर शत्रु केरो, भय न होवे मुज मननेरे ॥
सेवक सुखीयो सुजस विलासी, ते महिमा प्रभु तुजनेरे ॥६॥
॥ बापलडां रे० ॥

नाम मंत्र तुमारो साध्यो, ते थयो जग मोहननेरे ॥
तुज मुख मुद्रा देखी हरखुं, जीम चातक जलधरनेरे ॥ ७ ॥
॥ बापलडां रे० ॥

तुम विण अवर देव नहीं जाचुं, ध्यावुं फरि फरि आ मननेरे ॥
ज्ञानविमल कहे भवजल तारो, सेवक बांह्य ग्रहीनेरे ॥ ८ ॥
॥ बापलडां रे० ॥

(४)

नीलुडी[1] रायण तरु तळे, सुण सुंदरी ॥
पीलुडा[2] प्रभुना पायरे, गुणमंजरी ॥
उज्वल ध्याने ध्याईए ॥ सुण० ॥ एहीज मुक्ति उपायरे ॥ गुण० ॥ १
शितळ छायाए बेशीए ॥ सुण० ॥ रातडो[3] करी मनरंगरे ॥ गुण० ॥
पूजीए सोवन फूलडे ॥ सुण० ॥ जेम होय पावन अंगरे ॥ गुण० ॥ २
खीर झरे जेह उपरे ॥ सुण० ॥ नेह धरीने एहरे ॥ गुण० ॥
त्रीजे भवे ते शिव लहे ॥ सुण० ॥ थाये निरमळ देहरे ॥ गुण० ॥ ३

१ नीलवर्णा० २ पळिा—सुवर्णवर्णा. ३ चोलमजीठ जेवो.

प्रीत धरी प्रदक्षिणा॥ सुण० ॥ दीए एहने जे साररे ॥ गुण० ॥
अभंग प्रीति होय जेहने ॥सुण०॥ भव भव तुम आधाररे ॥गुण०॥४
कुसुम पत्र फळ मंजरे[1] ॥ सुण०॥ शाखा थड ने मूळरे ॥गुण०॥
देव तणा वासाअ छे ॥ सुण० ॥ तीरथने अनुकूळरे[2] ॥गुण॥ ५
तीरथ ध्यान धरो मुदा[3] ॥सुण०॥ सेवो एहनी छांयरे ॥ गुण० ॥
ज्ञान विमळ गुण भाखियो ॥सुण०॥ शत्रुंजय माहातम मांयरे॥गुण०॥६
॥ इति ॥

---

(५)

सुरपति आगळ एम जंपे श्री वीर जिनेश्वरू, गिरिराज.
ए तो सकल तीरथमांहि सार शत्रुंजय सुखकरू; गिरिराज.॥१॥
सिध्या इहां साधु अनंत, अनंत केवळ धरा. गिरिराज.
जिनवर इहां आव्या अनेक जाणीने पावनधराः गिरिराज.॥२॥
रायण तळे ऋषभ जिणंद गुणाकर गेल शुं, गिरिराज.
व्हाल्हो पुर्व नवाणुं वार पधार्या प्रेम शुं; गिरिराज.॥३॥
एनो मोक्ष वधु वरवानी पीठ वखाणिये, गिरिराज.
त्रिभुवन तारण एह तीरथ जगमांहि जाणिये; गिरिराज.॥४॥
दीठे करे दुरगति दूर ए दुषम काळमां, गिरिराज.
चाहीनेरे जइए सिद्धक्षेत्र रहिये एनी चाळमां, गिरिराज.॥५॥

१ मांजर उपर. २ तीर्थ भक्त देवताओनो वासा छे. ३ हर्षभेर.

(६)

सिद्धाचल गिरि भेटयांरे, धन्य भाग्य हमारां;
विमलाचल गिरि भेटयांरे, धन्य भाग्य हमारां.
ए गिरिवरनो महिमा मोटो, कहेतां नावे पार;
रायण रूख समोसर्या स्वामी, पुग्व नवाणुं वार रे, ध. १
मुल नायक श्री आदि जिनेश्वर, चौमुख प्रतिमा चार;
अष्टद्रव्यशुं पूजो भावे, समकित मुल आधार रे. ध. २
भाव भक्तिशुं प्रभु गुण गावे, आपणा जनम सुधार्या;
यात्रा करी भविजन शुभ भावे, निरय तिर्यच गति वार्या रे. ध. ३
दुर देशांतरथी हुं आव्यो, श्रवण सुणी गुण तारा;
पतित उद्धारण बिरुद तुमारुं, ए तीरथ जग सारा रे. ध. ४
संवत अढार त्याशी मास अषाढे, वदि आठम भोमवारा;
प्रभुजीके चरण प्रतापके संघमें क्षमारतन प्रभु प्यारा रे. ध. ५

---

(७)

मनना मनोरथ सवि फळ्याए, सिध्या वंछीत काज;
पुजो गिरिराजने ए, प्राये ए गिरि शास्वतो ए.
भवजळ तरवा झाज, पूजो गिरिराजने ए;
मणि माणेक मुगताफळेए, रजत कनकनां फुल. पू०
केशर चंदन घशी घणांए, बीजी वस्तु अमुल्य. पू०

१ पांच क्रोड.

छठ्ठे अंगे दाखीयोए, आठमे अंगे भाख. पू०
स्थिरावली पयन्ने वरणव्योए, ए आगमनी शाख. पू०
विमळ करे भवि लोकने ए, तेणे विमळाचळ जाण. पू०
शुक राजाथी विस्तर्यो ए, शत्रुंजय गुण खाण. पू०
पुंडरीक गणधरथी थयोए, पुंडरीक गिरि गुण धाम. पू०
सुरनर कृत एम जाणीएए, उत्तम एकवीश नाम. पू०
ए गिरविरनां गुण घणांए, नाणीए नवी कहेवाय. पू०
जाणे पण कही नवि शके ए, मुगद घुडने न्याय. पू०
गिरिवर फरशन नवि कर्यो ए, ते रह्यो गरभावास. पू०
नमन दरशन फरशन कर्यो ए, पुरे ग्रन्नी आश. प०
आज महोदय में लह्यो ए, पाम्यो प्रमोद रसाळ. पू०
मणी उद्योत गिरि सेवतां ए, घेर घेर मंगळ माळ. पू०

---

(८)

चालो चालो विमळगिरि जइएरे, भवजळ तरवाने;
तुमे जयणाए धरजो पायरे, पार उतरवाने. ए आंकणी,
बाळ काळनी चेष्टा टाळी, हुं तो धर्म योवन हवे पायोरे. भव०
भूल अनादिनी दूर निवारी, हुं तो अनुभव मनमां लायोरे.
पार० चालो० १
भव तरषा सवी दूर निवारी, मारी जिनचरणे लय लागीरे, भव०
संवर भावमां दिल हवे ठरीयुं, मारी भवनी भावठ भांगीरे.
पार० चालो० २

सचित सरवनो त्यागकरीने, नित्य एकासणां तपकारीरे; भव०
पडिक्कमणां दोय टंकना करश्युं, भली अमृतक्रिया दिलधारीरे.
पार० चालो० ३
व्रत उच्चरशुं गुरुनी पासे, हुं तो यथाशक्ति अनुसारेरे. भव०
गुरुसाथे चडशुं गिरि पाजे, जे भवोदधि बूडतां तारेरे.
पार० चालो० ४
भव तारक ए तीरथ फरसी, हुं तो सूरज कुंडमां नाहोरे. भव०
अष्टप्रकारी ऋषभजिणंदनी, हुं तो पूजा करीश लय लावीरे;
पार० चालो० ५
तीर्थपतिने तीर्थसेवा, ए तो साचा मोक्षना मेवारे. भव०
सात छठ्ठ दोय अठ्ठम करीने, मने स्वामी वच्छलनी हेवारे;
पार० चालो० ६
प्रभुपदपद्म रायण तले पूजी, हुं तो पामीश हरख अपाररे. भव०
रूपविजय प्रभु ध्यान पसाए, ए तो पामे सुख श्रीकाररे;
पार० चालो० ७

---

(१)

सिद्धाचल वंदोरे नर नारी. २
नाभिराया मरुदेवा नंदन, ऋषभदेव सुखकारी. सिद्धा० ॥१॥
पुंडरीक पमुहा मुनिवर सिद्धा, आतम तत्त्व विचारी. सिद्धा० ॥२॥
शिव सुख कारण भवदुःखवारण, त्रिभुवन जन हितकारी. सि० ॥३॥

समकित शुद्ध करण ए तीरथ, मोह मिथ्यात्व निवारी. सिद्धा०॥४॥
ज्ञान उद्योत प्रभु केवळ धारी, भक्ति करुं एकतारी. सिद्धा० ॥५॥

---

(१०)

प्रभु तुंहि तुंहि तुंहि तुंहि तुंहि धरतां ध्यानरे. ए देशी.

विमल गिरिवर शिखर सुंदर, सकळ तीरथ साररे;
नाभि नंदन त्रिजग वंदन, ऋषभ जिन सुखकाररे. विमल. १
चैत्यतळे वर रुख रायण, सोहे अति मनोहाररे;
नाभि नंदन तणां पगलां, भेटतां भव पाररे. विमल० २
समवसरिया आदि जिनवर, जाणी लाभ अनंतरे;
अजित शांति चउमास रहिया, इम अनेक महंतरे. विमल० ३
साधु सिध्या जिहां अनंता, पुंडरीक गणधाररे;
शाम्ब ने प्रद्युम्न पांडव, प्रमुख बहु अणगाररे. विमल० ४
नेमि जिनना शिष्य थावच्चा, सहस्स परिवाररे;
अंतगडजी सूत्रमांही, ज्ञातासूत्र मझाररे. विमल० ५
भाव सहित भवी जे फरशे, सिद्धक्षेत्र सुठामरे;
नरक तिर्यग् दो निवारे, जपे लाख जिन नामरे. विमल० ६
रयणमय जे ऋषभ प्रतिमा, पंचसय धनु मानरे;
नित्य प्रत्ये जिहां इंद्र पूजे, दुषम समय प्रमाणरे. विमल० ७
त्रीजे भवे जे मुक्ति पहोंचे, भविक भेटे तेहरे;
देव सांनिध्य सकळ वंछित, पुरवे ससनेहरे. विमल० ८

एणी पेरे जेहनो सबळ महिमा, कह्यो शास्त्र मझाररे;
ज्ञानविमल गिरिध्यान धरतां, आवागमन निवाररे. विमल० ९

(११)

श्री सिद्धाचळ भेटवा, मुज मन अधिक उमाह्यो;
ऋषभदेव पूजा करी, लीजे भवतणो लाहो. श्रीरे०
मणिमय मूरत श्रीऋखभनी, निपाइ अभिराम;
भुवन करायो कनकमय, राख्यो भरतजी नाम. श्रीरे०
नेम विना त्रेवीश जिन, आव्या सिध्धक्षेत्र जाणी;
शेतरुंजा सम तीरथ नही, बोल्या सिमंधर वाणी. श्रीरे०
पुरव नवाणुं समोसर्या, स्वामी ऋषभ जिणंदा;
राम पांडव सौ ह्यां रह्या, पाम्या परमानंदा. श्रीरे०
पुरव पुन्य पसाउले, पुंडरीक गिरी पायो;
कांति विजय हरखे करी, श्रीसिद्धाचल गायो. श्रीरे०

अथ स्तुतयः

(१)

श्री शत्रुंजय तीरथ सार, गिरीवरमां जेम मेरु उदार;
ठाकोर रामापार.
मंत्र मांही नवकारज जाणुं, तारामां जेम चंद्र वखाणुं;
जळधर जळमां जाणुं.

पंखीमां उत्तम जेम हंस, कुळमांही जेम ऋषभनो वंश;
नाभि तणो ए अंश.
क्षमावंतमां श्री अरिहंत, तपशूरा मुनिवर महंत;
शत्रुंजय गिरि गुणवंत ॥१॥

(२)

श्री सिद्धाचल मंडण, ऋषभ जिणंद दयाल;
मरुदेवा नंदन, वंदन करुं त्रण काल.
ए तीरथ जाणी, पूर्व नवाणु वार;
आदीश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार. ॥ १ ॥

(३)

पुंडरीक मंडण पाय प्रणमीजे, आदीश्वर जिन चंदाजी;
नेमि विना त्रेवीश तीर्थंकर, गिरि चढिया आणंदाजी.
आगममांहे पुंडरीक महिमा, भाख्यो ज्ञान दिणंदाजी;
चैत्री पूनम दिन देवी चक्केसरी, सौभाग्य द्यो सुखकंदाजी ॥१॥

(४)

पुंडर गिरि महिमा आगममां प्रसिद्ध,
विमलाचल भेटी लहिए अविचल ऋद्ध;

पंचम गति पहोत्या मुनिवर कोडा कोड,
एणे तीरथे आवी कर्म विपाक विछोड.

---

(५)

आदि जिनवर राया जास सोवन्न काया,
मरुदेवी माया धोरी लंछन पाया;
जगत स्थिति निपाया शुद्ध चारित्र पाया,
केवळ सिरी राया मोक्ष नगरे सिधाया.

तपनो प्रभाव तथा तपकरवानी आवश्यकता.

" समता सहित करवामां आवता तपथी निकाचित कर्मनो पण क्षय थइ शके छे. " तो पछी बीजां कर्मोनुं कहेवुंज शुं ?

" प्रदीप्त करेला तप–अग्निवडे अशुद्ध एवुं जीव–सुवर्ण विशुद्ध थइ शके छे. " एटले के तीव्र तप सेवनथी आत्मा उज्वल थाय छे.

" तीर्थंकरोए पोते पण तप सेव्यो छे अने तथी अद्भुत लाभ जाणी भव्य जनोना हितमाटे तीर्थंकरोएज तपनुं सेवन करवा फरमान करेलुं छे. तपथी द्रव्य भाव लक्ष्मीनी प्राप्ति थाय छे, भवसंततिनो क्षय थाय छे, रोगनुं निर्मूलन थाय छे, कर्मनो अंत थाय छे, विघ्नो विसराळ थइ जाय छे, इंद्रियोनुं दमन थाय छे, मंगळमाळा विस्तरे छे, इष्ट अर्थ सिद्ध थाय छे, देवतानुं आकर्षण

थाय छे, तेमज तेथी कामविकार नष्ट थाय छे; माटे मोक्षना अर्थी जनोए तपनुं सेवन अवश्य करवुं जोइए."

१ ऋषभदेव भगवान एक वर्ष पर्यंत अने वर्धमान स्वामी छ मास पर्यंत अशनादिक आहार रहित उपोषितपणे विचर्या अने प्रमाद रहित संयम मार्गने पाळता ध्यानमां झकझोळ रह्या हता. एम उपदेशमालादिक शास्त्रथकी जाणी आत्मार्थी जनोए ए रीते तपनुं यथाशक्ति सेवन करवामां अधिक आदर राखवो युक्त छे.

२ दुष्कर तपवडे सघळा घनघातिक कर्मोनो क्षय करी निर्मळ केवळ ज्ञान प्राप्त करी तीर्थकरोए भव्य जीवोना हित माटे द्वादश विध (बार प्रकारना) तपनुं प्रतिपादन कर्युं. तेमां १ अनशन २ उणोदरी. ३ वृत्तिसंक्षेप, ४ रसत्याग. ५ कायक्लेश (देह-दमन) अने ६ कूर्मवत् कायसंलीनता,[१] ए छ प्रकारना बाह्यतप अने १ प्रायश्चित्त, २ विनय. ३ वैयावच्च. ४ स्वाध्याय. ५ ध्यान अने ६ कायोत्सर्ग, ए छ प्रकारनो अभ्यंतर तप करवो प्रकाशेल छे. बाह्यतप सेवन करवानुं अभ्यंतर तपनी पुष्टिमाटे भगवाने कहेलुं छे. तेथी जेम विनयादिक तपोगुणनी वृद्धि थवा पामे तेम लक्ष पूर्वक ते बाह्यतपनुं सेवन करवुं घटे छे अने त्यारे ज तेनी सार्थकता छे. अभ्यंतर तपथी एकांत हित संपजे छे.

३ तपवडे सुवर्ण पुरुषादिक सिद्धियो प्राप्त थाय छे, तेमज

---

१ काचबानी पेरे शरीरना अंगोपांग संकोचीने राखवा.

तपवडे चिल्लातिपुत्रादिकनी पेरे [1] भवसंततिनो पण क्षय थाय छे. जुओ ! चिल्लातिपुत्रे उपशम, विवेक अने संवर ए त्रणज पदोना श्रवण, मनन अने निदिध्यासनरूप वज्रवडे पापपर्वतनुं विदारण करी पोताना आत्मानो उद्धार कर्यो एटले एथी भवांतरमां कर्ममात्रनो क्षय करी मोक्ष वरमाळा पण वरशे; माटे ठीक ज कह्युं छे के "जे कंई दूर, दुराराध्य अने देवताओने पण दुर्लभ छे ते सघळुं तपवडे साध्य थाय छे. तपनो प्रभाव खरेखर अचिन्त्य छे."

४ श्री सिद्धचक्रनुं आराधन करतां आंबिल तपवडे श्रीपाळ राजानो कुष्ठरोग (कोढ) शान्त थयो अने तेनी काया कंचनवर्णी थइ. ए रीते बीजा सातसें कुष्टीओनो रोग पण दूर गयो.

५ ब्रह्म–स्त्री बाळ–गौहत्यादिक दुष्कर्म करनार दृढप्रहारी तपवडे कठण कर्मनो क्षय करी सद्गति पाम्या.

६ द्वारिकानगरीमां द्वैपायनदेवकृत उपसर्गो. आंबिल तपना प्रभावथी द्वादश वर्ष पर्यंत अटकी शक्या. ज्यारे लोको तप करवामां मंद–शिथिल परिणामी थया त्यारेज उपसर्गो प्रगट थया.

७ "इन्द्रियो रुप विवरवडे वांच्छारुप पवननुं भक्षण करी चित्तरुपी करंडीयामां स्थिति करनारा रागादिक दोषरूप भुजंगो

---

१ जन्म मरणनी परंपरा.

२ श्री तीर्थंकर पदवी प्राप्त करवा पहेलाना त्रीजा भवमां अरिहंतादिक वीशस्थानक पैकी एक, बे यावत् वीश स्थानकोनुं यथाविधि आराधन करीनेज कोइ विरल महाशयो श्री तीर्थंकर नाम कर्मने निकाचे छे. जेना परिणामे तेओ त्रिभुवनने पूजवा लायक बनेछे.

अति भयंकर बने छे परंतु जो तेमने सर्वथा भूख्या राखवामां आवे छे तो खरेखर थोडाज वखतमां तेओ नाश पामे छे अने पछी पूर्वे नहि अनुभवेलुं अति अद्भुत सुख प्रगटे छे." एवी रीते तपवडे इंद्रियदमन अने रागादि दोषोनो पण निग्रह थाय छे.

८ कुग्रह पीडा अने दुर्निमित्तादिकनो क्षय करनार अने सुखसंपदाने मेळवी आपनार तप खरेखर मंगळकारी छे.

९. अष्टमतपना प्रभाववडे मागध, वरदाम, गंगा, सिंधु अने प्रभासाधिप देवोनो पण मनमाननो जय चक्रवर्तीओ करी शके छे.

१० तपवडे हरिकेशीबल मुनिनी पेरे देवनुं आकर्षण थाय छे एटले तपना प्रभावे देवता पण दास थइ तपस्वी जनोनी सेवा भक्तिमां हाजर रहे छे.

११ "एक रसनेंद्रियद्वारा ज्यांसुधी अन्न जळ नियम वगर मळ्यां करे छे त्यांसुधी प्राणीओना उदग्र[1] कर्म, देह–दुर्गने[2] तर्जाने जता नथी." ए रीते तो रागादिक उल्टा मजबूतज बने छे. आ हेतुथी ज अनशन, उनोदरी प्रमुख बाह्यतपनुं निर्माण करेल छे, अने सरस–मादक आहार तेमज अतिघणो (जरूर करतां वधारे) नीरस आहार पण ब्रह्मचारी जनोने अवश्य वर्जवो कह्यो छे. इत्यादिक अनेकानेक हेतुओवडे तपनो प्रभाव अने तप करवानी आवश्यकता सहज सिद्ध थाय छे. इति शम्.

---

१ आकरां. २ किल्ला.

वीशस्थानकपदनुं टुंक विवेचन.

(ए तपनुं आराधन करवा इच्छनारने खास उपयोगी.)

१. श्री अरिहंतपद—' सर्वी जीव करुं शासन रसी ' एवी उत्तम भावनारुप भावदयाना परिणामपूर्वक निर्मळ आचार विचारवडे तीर्थंकर नाम उपार्जन करी प्रायः उत्तम प्रकारना देवलोकमां उपजी, त्यांथी च्यवी उत्तम कुळमां त्रण ज्ञानसहित मनुष्यपणे अवतरी, अनुक्रमे सकळ भोग सामग्री तजी, परम वैराग्य पामी, वरसीदानवडे दीन—दुःखी जनोनो उद्धार करी, सहु स्वजन वर्ग प्रमुखने संतोषी. जे अप्रमत्त भावे दीक्षा ग्रही, दुष्कर तपवडे घनघाति कर्मने खपावीने केवळज्ञानादिक अनंत आत्म—संपदा पामे छे, अने सकळ इंद्रोवडे अर्चित सता, देवनिर्मित समवसरणमां स्थापित करेला सिंहासन उपर बिराजमान थइने, भव्य जनोने अमृतसमान हित—उपदेश अग्लानपणे आपे छे ते अरिहंत—तीर्थंकर पद(पदवी) सहु करतां श्रेष्ठ उपकारक होवाथी अवश्य आराधवा योग्य छे. ए वळी अरिहंत पद पंच परमेष्ठीमां प्रधान छे अने नाम स्थापनादिक चारे निक्षेपे सदाय ध्यान करवा योग्य छे.

२. श्री सिद्धपद—सकळ कर्म उपाधि सर्वथा निवारीने आत्मानुं सहज निरुपाधिक शाश्वत् सुख आपवा समर्थ श्री जिनेश्वर भगवान्ना सनातन मार्गने अनुसरी सम्यग् दर्शन, ज्ञान अने चारित्ररुप रत्नत्रयीनुं यथार्थ आराधन करी आत्मानी अनंत शक्ति—अनंत सुख समृद्धिने आवरनारां सकळ कर्मबंधनने तोडी नाखी, जेओ

जन्म जरा मरणादिक दुःखथी रहित, अक्षय–अविनाशी शिव संपदाने वरे छे ते सघळा सिद्ध परमात्माओनुं आराधन आ सिद्धपदथी थइ शके छे. ते पद परम निर्मळ छे.

३. श्री प्रवचनपद—तीर्थंकर भगवाननां प्रकृष्ट वचन–आज्ञा-प्रमाणे वर्तनारा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारुप चतुर्विध संघने तीर्थंकरनी पेरे परम प्रेमभावथी सेववो योग्य छे. श्री तीर्थंकर महाराज पण देशनाना आरंभमां 'नमो तित्थस्स' कहे छे एटले श्री संघने नमस्कार करे छे, तो पछी तीर्थंकर भगवाने मान्य करेला श्री संघने कोण न माने? अपि तु सहु कोइ शासन रागी जनोए श्री संघनो विशेष आदर करवो जोइए. श्री संघ अनेक सद्गुणी आत्माओना समुदायरुप होवाथी तेने अनंत गुण–रत्नोनो निधान मानी सदाय सेववो योग्य ज छे. श्री संघनी शुभ दृष्टि प्राणीयोना रागद्वेपादिक भाव रोगोने टाळवा अमृत समान उपयोगी छे. कोइ धन्य–कृतपुन्य जनो श्री संघनुं यथाविधि आराधन करे छे–करी शके छे.

४. श्री आचार्यपद–पांच इंद्रियोनुं दमन, नवविध ब्रह्मचर्यनुं पालन, चार कषायनो जय, पांच महाव्रतनुं पालन, पंचाचारनुं संसेवन, तेमज पांच समति अने त्रण गुप्तिनुं पालन; ए ३६ गुणो अथवा एवा अनेक गुणोना समुदाय जेमनामां झळहळी रह्या होय, जेओ संयम व्रतमां शिरोमणि होय, तेमज सकळ शास्त्रमां पण पारगामी होय, ते आचार्य भगवंतो जैन शासनने अत्यंत उपकारक होवाथी सदाय सेववा योग्य छे.

५. श्री स्थविरपद–निर्मळ ज्ञान, दर्शन अने चारित्रादिक गुणो-

नुं संसेवन करवाथी जेओए पोताना आत्माने स्थिर—शान्त करेलो छे अने उत्तम प्रकारनी क्षमा, मृदुता अने सरलतादिक सद्गुणोवडे जेओ अन्य साधु जनोने यथाअवसर जरूर पूरती सहाय आपी संयम मार्गमां स्थिर करे छे, ते स्थविर साधुओ जैनशासनने दीपावनार होवाथी, तेमज नवीन अने शिथिल थयेला साधुओने आलंबनभूत होवाथी सदाय सेववा योग्य छे.

६. श्री उपाध्याय पद—निर्मळ शास्त्र बोधसहित शुद्ध चारित्र पाळवामां सदाय सावधान रही, केवळ उपकार दृष्टिथी साधुसमुदायने अनेक प्रकारे सहाय अर्पी जेओ पथ्थर जेवा जड बुद्धिवाळा शिष्योने पण सुशिक्षित करे छे अने उत्तम रहेणी—करणीवडे शिष्योने सुविनीत बनावे छे, ते आचार्यने, गच्छने, यावत् श्रीसंघने सहायक श्रीउपाध्याय भगवंतो सहु कोई आत्मार्थी जनोए सदाय सेववा योग्य छे.

७. श्री साधुपद—सांसारिक सुखनी असारता जोईने तथा जन्म मरणनां अनंत दुःखथी त्रास पामीने संसारनो फेरो टाळवा अने शाश्वत् सुखमां ठरवा माटे आत्मिक शक्ति अजमावी, अनुक्रमे सांसारिक बंधनोने कापी, उज्वळ रत्नत्रयीनुं पालन करता सद्गुरुनुं शरण लही, प्रमादरहित केवळ आत्मामांज लक्ष राखी, जे संयममार्गने सारी रीते पाळे छे अने अन्य आत्मार्थी जनोने पण यथाशक्ति सहाय आपी सन्मार्गे चढावे छे, ते साधु जनो स्वपर उपकारक होवाथी सदाय सेववा योग्य छे.

८. श्री ज्ञानपद–जेथी स्व परने, जड चेतनने, गुण दोषने, हित अहितने, भक्ष्याभक्ष्यने, यावत् कर्तव्याकर्तव्यने ओळखी शकाय अने अनादि अज्ञान–अविद्या–जडता टाळी शकाय, जेथी स्वघटमां विवेक दीपक प्रगट थतां आत्मप्रकाश थाय, अध्यात्म स्वरूप झळके, ते ज्ञान अत्यंत उपकारक होवाथी आत्मकल्याणने इच्छता सहुकोइ भाई बहेनोए अवश्य अभ्यासवुं योग्य छे.

९. श्री दर्शनपद–जेवडे सर्वज्ञ भगवाने भाखेला जीव अजीव पुन्य पाप, आश्रव संवर, बंध मोक्ष अने निर्जरारूप नव तत्त्व तथा षड्* द्रव्य, सप्तभंगी,[1] सप्तनय[2], चार निक्षेपा प्रमुख सर्व भावोने सत्य प्रमाणिक लेखी अवधारी शकाय, जे संयमादिक सकळ गुणना पायारूप छे--जेम एकडावगरना मींडा नकामा छे तेम जेना वगर करेली क्रिया क्लेशरूप थाय छे, पण कल्याणरूप थती नथी, ते दर्शनपद सदा सेववा योग्य छे. चिंतामणि रत्न समान सुखदायी सम्यक्त्वने पामवा अने अभ्यासवडे भाग्ययोगे पामी तेनी रक्षा अने पुष्टि करवा अन्य स्थळे विस्तारथी कहेला तेना दूषण भूषण प्रमुख ६७ बोलो सारी रीते समजी तेमां विवेक धारवो जोइए.(जूओ "श्रद्धाशुद्धिउपाय.")

---

* १ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय ४ पुद्‌गलास्तिकाय, ५ जीवास्तिकाय, अने ६ काल. १–१ स्यात् अस्ति, २ स्यात् नास्ति, ३ स्यात् अस्ति नास्ति ४ स्यात् अवक्तव्य, ५ स्यात् अस्ति अवक्तव्य, ६ स्यात् नास्ति अवक्तव्य, ७ स्यात् अस्ति-नास्ति युगपत् अवक्तव्य. २–१ नैगम, २ संग्रह, ३ व्यवहार प्रमुख (जूओ "जैन–तत्त्वप्रवेशिका.")

१० श्री विनय पद–जेवडे राग द्वेषादिक दुश्मन मात्र मूळथी दूर थइ जाय ते विनय कहेवाय छे. गुण–गुणी प्रत्ये मृदुता राखी आत्मामां उत्तम गुण प्रगट करवा माटे सदगुणीने देखीने के सांभळीने मनमां प्रमुदित थावुं; तथा तेवा सदगुणी सज्जनोनी यथाशक्ति भक्ति, बहुमान, गुणस्तुति करी आपणे पण तेवा सदगुणी थवा इच्छा राखवी, एटलुंज नहिं पण तेवा सदगुणोनो वारंवार परिचय राखवो, संत सुसाधु जनोना नजीवा अवगुण उघाडा पाडी तेमनी कोई रीते विगोवणा करवी नहिं, तेमज तेमनी अवज्ञा–आशातनादिक करवारूप विराधनाथी तो सदंतर दूरज रहेवुं अने अरिहंतादिक पज्य पदो प्रत्ये पूर्ण प्रेम प्रगटावी यथायोग्य विनय करवो. विनयवडेज विद्या, विज्ञान अने चारित्र धर्मनी अनुक्रमे प्राप्ति थतां छेवटे मोक्षपद प्राप्त थाय छे. ते माटे सकळ गुणमां साररुप विनय अवश्य सेववो योग्य छे.

११. श्री चारित्र पद–जेथी अनादिसंचित कर्ममळथी मुक्त थइ शकाय अने शुद्ध स्फटिक रत्नसमान निर्मळ–निष्कपाय आत्माना स्वाभाविक स्वरुपने पामी शकाय, ते चारित्र पदने इन्द्रादिक देवो पण सदाय नमस्कार करे छे. अनंतानुबंधी आदि कषायोनो क्षय, उपशम के क्षयोपशम थवाथी आ चारित्र गुण प्रगटे छे. उत्तम प्रकारनी क्षमा–समता राखवी ए चारित्रनुं खरुं रहस्य छे. एथी चारित्रवंत सज्जनो शीघ्र स्वहित साधी शके छे, माटे ते सदाय सेववा योग्य छे.

१२. श्री ब्रह्मचर्य पद—जेथी स्वरुपचर्या—स्वरुप रमणता अथवा शुद्ध चारित्रनो लाभ थाय, अनेक प्रकारनी विषयासक्ति दूर थई जाय अने आत्माना स्वाभाविक सुखनो अनुभव थाय ते ब्रह्मचर्य पद विश्ववंदित छे. यथार्थ ब्रह्मचर्यनुं पालन करनार महासुकृती छे. गमे तेवा अन्य सुकृत करनार प्राणी यथाविधि ब्रह्मचर्य पाळनारनी होडे आवी शकताज नथी, जेने माटे विजय शेठ अने विजया शेठाणी, सुदर्शन, जंबूस्वामी अने स्थूलभद्रादिकनां दृष्टांत सुप्रसिद्ध छे. यथार्थ ब्रह्मचर्यनुं पालन ए परम संतोषनुं परिणाम होवाथी अंते अक्षय सुख मेळवी आपे छे, तेथी सहु कोई कल्याणार्थी भाई बहेनोए पूर्ण प्रेमथी तेनुं पालन करवुं उचितज छे.

१३. श्री क्रिया पद—क्रिया—आचरणवगरनुं एकलुं ज्ञान पांगळुं छे, अने ज्ञानवगरनी एकली क्रिया पण आंधळी छे. परंतु परमार्थ—समज सहित करवामां आवती सघळी शुभ करणी लेखे थाय छे. सर्वज्ञ देशित सत् क्रिया तरफ शुभ रुचि प्रगट थवी ए ज्ञाननुंज शुभ परिणाम सूचवे छे. तेथी जेमने अत्यंत क्रियारुचिपणुं तेमज क्रियामार्गमां आदर होय छे, तेमने ज्ञानदशा पण आकरी (तीक्ष्ण) होवी घटे छे. वळी क्रियारुचि शुक्लपक्षी एटले अल्पकाळमां संसारनो अंत करी मोक्षमां सधावनार होइ शके छे अने जेने हजु क्रियारुचि प्रगटीज नथी ते कृष्णपक्षी एटले संसारचक्रमां वधारे लांबो वखत परिभ्रमण करनार होइ शके छे. रहेणी—करणीवगरनी लूखी कहेणी केवळ क्लेशरुप थायछे. रसोईनुं नाम लेवा मात्रथीज

कंइ भूख भांगती नथी. पण तेनुं सेवन–आस्वादन करवाथीज भूख जाय छे. अने गति–क्रिया करवाथीज आपणे धारेला मुकामे पहोंची शकीए छीए. एम समजी सत् क्रियामार्गमां अधिक रुचि धारवी योग्य छे.

१४. श्री तप पद–जेम अग्निनो अधिक ताप आपवाथी सोनामां रहेलो मेल बळी जइ ते शुद्ध कांचन–कुंदन थाय छे, तेम शास्त्रमां कहेला अनेक प्रकारना बाह्य–अभ्यंतर तप क्षमासहित सेवन करवाथी आत्मामां रहेलां चिकणां–निकाचित कर्म पण क्षय पामी जाय छे अने आत्मानुं शुद्ध स्वाभाविक स्वरूप प्रगटी नीकळे छे. एवो ए तपनो प्रभाव जाणी तीर्थंकर गणधर जेवा तद्भवे मोक्ष जनार पण तेनुं भावथी सेवन करे छे. माटे ते तप सर्वथा सेव्यज छे.

१५. श्री गौतम पद–छठ छठ तपे पारणुं करनार, चार ज्ञानना धारक अने अठ्ठावीश महालब्धीना धणी श्री इन्द्रभूति, श्री वीर प्रभुना मुख्य गणधर हता. तेमनुं गोत्र 'गौतम' होवाथी अने महालब्धी पात्र होवाथी तेओ 'गौतम' नामथी ज विख्यात थया छे. तेमनुं पवित्र नाम लेतां चोवीशे प्रभुना सघळा १४५२ गणधरोनुं स्मरण कर्युं जाणवुं. श्री वीर प्रभु प्रत्येनो तेमनो प्रेम अकृत्रिम अने अनहद हतो. ते जाणीने सहु कोई सज्जनोए स्वगुरु प्रत्ये तेवोज अकृत्रिम अने अपार प्रेम धारतां शीखवुं जोईए. परम विनय उपर श्री गौतम स्वामीनुं दृष्टांत अपाय छे. तेथी ए पद अत्यंत प्रेमथी आराधवुं योग्य छे. वळी तीर्थंकर गणधर जेवा परम पुरुषो रत्नपात्रतुल्य ग-

णाय छे. त्यारे सामान्य साधुजनो कांचन पात्रतुल्य, विरतिवंत श्रावको रजत (रुपाना) पात्रतुल्य, समकितवंत श्रावको त्रांबाना पात्र तुल्य अने बीजा अविरतिवंत मिथ्यात्वी जनो लोढा अने माटीना पात्रतुल्य कह्या छे. ए वचन अनुसारे पण जोतां श्री गौतमपद अति महत्वनुं जणाय छे.

१६. श्रीजिन पद–क्रोधादिक प्रसिद्ध अढार दोषोनो क्षय करी नाखवाथी जेमने वीतरागता अने सर्वज्ञतादिक आत्मानी अनंत गुण समृद्धि प्रगट थयेली छे ते जिनपद विश्वप्रकाशक होवाथी अत्यंत उपकारक छे. प्रथम अरिहंतपदमां केवळ तीर्थंकर भगवाननोज समावेश थाय छे, त्यारे आ पदमां तो उक्त अरिहंत भगवानना उपदेश अनुसारे उज्वळ रत्नत्रयीनुं आराधन करी जे कोई घाति कर्मनो क्षय करी केवळ ज्ञानादिक आत्म ऋद्धि प्रगट करे छे ते सर्व कोईनो समावेश थई जाय छे. एटले जेमने जेमने केवळ ज्ञानादिक अनंत आत्म संपत्ति प्राप्त थयेल छे ते सर्व कोई सर्वज्ञने आ पदथी आराधवामां आवे छे.

१७. संयम पद–विषय सुखनी आशंसा तजी, क्रोधादिक कपायने जीती, हिंसादिक सकळ आश्रवद्वार छंडी जे कोई आत्मार्थी जनो मन, वचन, कायानी शुद्धि करे छे–आत्मनिग्रह करे छे, ते संयमी जरुर आत्मकल्याण साधी शके छे. सर्वसंयमी मुनिजनो छे, त्यारे देशसंयमी श्रावक होइ शके छे. दृढ अभ्यासवडे भवभीरु आत्मार्थी श्रावक पण अनुक्रमे सर्व संयमी थई शके छे. तेनुं समाधि

सुख अपार छे. माटे संयमपदनुं सेवन-आराधन शास्त्र नीति मुजब करवुं बहु जरूरनुं छे.

१८. श्री अभिनव ज्ञान पद-बुद्धिना आठ गुण पामी पोत पोतानी योग्यता प्रमाणे नवां नवां धर्मशास्त्र गुरुगम मेळवी वांचवा, विचारवा अने ते प्रमाणे प्रमादरहित वर्तन करवा रूप करवो. ए आ उत्तमपद आराधवानुं अनंतर फळ समजवानुं छे. बाह्य-खोटो आडंबर तजी, समजीने शक्य क्रियामां प्रवर्ती स्वश्रेय साधी लेवुं एज ज्ञाननुं फळ छे.

१९. श्री श्रुत पद-सूत्र, आगम, सिद्धान्त, ग्रंथ अने प्रकरणो तेमज ते उपर भाष्य, चूर्णि, निर्युक्ति अने वृत्ति (टीका-वार्तिक प्रमुख) ए सर्व आप्त पुरुषोए करेला होवाथी प्रमाण छे. सूत्रथी रचना प्रायः गणधरो, श्रुतकेवली-चौद पूर्वी होय ते करे छे, त्यारे अर्थथी तो तीर्थंकर भगवान तेनो प्रकाश करे छे. सूत्रनो परमार्थ भाष्य, टीका प्रमुखथीज समजाय छे; माटे सूत्रनी पेरे ते सर्व प्रमाणिक वाक्यो मान्य करवां योग्य ज छे. विनय, बहुमान, योग-उपधान प्रमुख उचित आचार पाळी. श्रुतपदनुं आराधन करवुं बहु जरूरनुं छे.

२०. श्री तीर्थ पद-जेथी आ भवसागर तरी शकिए ते तीर्थ, जंगम अने स्थावर बे प्रकारनुं छे. वर्तमान काळे विचरता-विहरमान वीश तीर्थंकरो, तेमना गणधरो तथा केवळी प्रमुख साधुओनी संपदा तेमज सामान्य रीते शासनने शोभावनार सहु कोई आत्मार्थी

साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध संघ ए जंगम महा-तीर्थरूप छे. त्यारे श्री शत्रुंजय, गिरिनार, अने समेतशिखर प्रमुख स्थावर तीर्थो छे. लौकिक ६८ तीर्थो तजी उक्त लोकोत्तर तीर्थनी यथायोग्य द्रव्यभावथी आराधन करी पूर्वे पण अनंत आत्माओ मुक्ति पद पाम्या छे. एम समजी प्रमादरहित विवेकसहित सहु भाई बहेनोए तेनो लाभ लई स्वमानव भव सफळ करी लेवो उचित छे.

इतिशम्.

श्री वीशस्थानक तपनुं आराधन करवा इच्छनारे यथास्थाने प्रत्येकपदे खमाममण दई उपयोगसहित बोलवाना दुहा.

प्रथम-	परम पंच परमेष्ठीमां, परमेश्वर भगवान;	
अरिहंत पद.	चार निक्षेप ध्याइए, नमो नमो जिनभाण.	१
बीजुं-	गुण अनंत निर्मळ थया, सहज स्वरूप उजास;	
सिद्धपद.	अष्ट कर्ममळ क्षय करी, भये सिद्ध नमो तास.	२
त्रीजुं-	भावामय औषध समी, प्रवचन अमृत वृष्टि;	
प्रवचनपद.	त्रिभुवन जीवने सुखकरी, जय जय प्रवचन दृष्टि.	३
चोथुं-	छत्रीश छत्रीशी गुणे, युग प्रधान मुणींद;	
आचार्यपद.	जिनमत परमत जाणता, नमो नमो ते सूरींद.	४

पांचमुं- तजी परपरिणति रमणता, लहे निजभाव स्वरूप;
थिविरपद. स्थिर करता भविलोकने, जय जय थिविर अनूप. ५
छठ्ठुं- बोध सूक्ष्म विणु जीवने, न होय तत्त्व प्रतीत;
उपाध्यायपद. भणे भणावे सूत्रने, जय जय पाठक गीत. ६
सातमुं- स्याद्वाद गुण परिणम्यो, रमता समता संग;
साधुपद. साधे शुद्धानंदता, नमो साधु शुभरंग. ७
आठमुं- अध्यातम ज्ञाने करी, विघटे भवभ्रम भीति;
ज्ञानपद. सत्यधर्म ते ज्ञान छे, नमो नमो ज्ञाननी रीति. ८
नवमुं- लोकालोकना भाव जे, केवलिभाषित जेह;
दर्शनपद. सत्य करी अवधारतो, नमो नमो दर्शन तेह. ९
दशमुं- शौच मूळथी महा गुणी, सर्व धर्मनो सार;
विनयपद. गुण अनंतनो कंद ए, नमो विनय आचार. १०
अग्यारमुं- रत्नत्रयी विणु साधना, निष्फळ कही सदीव;
चारित्रपद. भाव रयणनुं निधान छे, जय जय संयम जीव. ११
बारमुं- जिन प्रतिमा जिन मंदिरां, कंचनना करे जेह;
ब्रह्मचर्य पद. ब्रह्मव्रतथी बहु फळ लहे, नमो नमो शीयल सुदेह. १२
तेरमुं- आत्मबोध विण जे क्रिया, ते तो बालक चाल;
क्रियापद. तत्त्वारथथी धारीए, नमो क्रिया सुविशाल. १३
चौदमुं. कर्म खपावे चीकणां, भावमंगल तप जाण;
तप पद. पच्चास लब्धि उपजे, जय जय तप गुण खाण. १४
पंदरमुं- छठ्ठ छठ्ठ तप करे पारणुं, चउनाणी गुणधाम;
गोयम पद. ए सम शुभ पात्र को नहिं, नमो नमो गोयम स्वाम. १५

सोळमुं-	दोष अढार क्षय गया, उपन्या गुण जस अंग;
जिन पद.	वैयावच्च करीए मुदा, नमो नमो जिन पद संग १६
सत्तरमुं-	शुद्धातम गुणमें रमे, तजी इंद्रिय आशंस;
संयम पद.	थिर समाधि संतोषमां, जय जय संयम वंश. १७
अढारमुं-	ज्ञान वृक्ष सेवो भविक, चारित्र समकित मूळ;
अभिनवज्ञान	अजर अगमपद फल लहो, जिनवर पदवी फूल. १८
ओगणीशमुं-	वक्ता श्रोता योगथी, श्रुत अनुभव रस पीन;
श्रुत पद.	ध्याता ध्येयनी एकता, जय जय श्रुत सुखलीन. १९
वीशमुं-	तीर्थयात्रा प्रभाव छे, शासन उन्नति काज;
तीर्थ पद.	परमानंद विलासतां जय जय तीर्थ झहाज.

दरेक पदनी वीश नवकारवाळी गणतां मणकादीठ गणवानुं पद तथा काउस्सग्ग.

१ नमो अरिहंताणं.	२४ लोगस्स	२ नमो सिद्धाणं.	१५ लोगस्स.
३ नमो पवयणस्स.	४५ ,,	४ नमो आयरियाणं.	३६ ,,
५ नमो थेराणं.	१० ,,	६ नमो उवज्झायाणं.	२५ ,,
७ नमो लोए सव्व साहूणं	२७ ,,	८ नमो नाणस्स.	५ ,,
९ नमो दंसणस्स.	६७ ,,	१० नमो विणयस्स.	१० ,,
११ नमो चरित्तस्स.	७० ,,	१२ नमो बंभवयधारिणं.	९ ,,
१३ नमो किरियाणं.	२५ ,,	१४ नमो तवस्स.	१२ ,,
१५ नमो गोयमस्स.	२८ ,,	१६ नमो जिणाणं	२० ,,
१७ नमो संयमधारिणं.	१७ ,,	१८ नमो अभिनवनाणस्स.	५१ ,,
१९ नमो सुयस्स.	१२ ,,	२० नमो तित्थस्स.	५ ,,

काउस्सग्ग जेटलां खमासमण देवा तथा प्रदक्षिणा देवी.

अथ नवपदनमस्कारकाव्यानि ।

उप्पन्नसन्नाण महोमयाणं, सपाडिहेरासणसंठियाणं ॥
सद्देसणाणंदिअसज्जणाणं, नमोनमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥

जेमनामां उत्पन्न थयेला उत्तम–केवळज्ञाननी ज्योति झळहळी रही छे, अशोकवृक्षादिक प्रातिहार्य युक्त सिंहासन उपर जेओ विराजमान थई रह्या छे, अने अमृत समान उत्तम देशनावडे जेमणे सज्जनोने आनंदित कर्या छे, ते जिनेश्वर देवोने सदाय अमारो वारंवार नमस्कार हो ! १

सिद्धाणमाणंदरमालयाणं, नमो नमोणंतचउक्कयाणं ॥
सम्मग्गकम्मक्खयकारगाणं, जम्मजरादुक्खनिवारगाणं ॥ २ ॥

सहजानंदवाळा सिद्धिस्थानमां जेमणे स्थिति करेली छे, जेओ अनंत (ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने शक्तिरूप) चतुष्टये करी संयुक्त थयेला छे, जेमणे ज्ञानावरणीय प्रमुख समग्र कर्मनो क्षय करेलो छे अने जन्म, जरा, मरणना समस्त दुःख निवार्यां छे ते सिद्ध भगवानोने अमारो वारंवार नमस्कार हो ! २

सूरीण दूरीकयकुग्गहाणं, नमो नमो सूरसमप्पभाणं ॥
सद्देसणादाणसमायराणं, अखंडछत्तीसगुणायराणं ॥ ३ ॥

जेमणे कुमति–कदाग्रहने दूर करेला छे, जेओ सूर्यना जेवा प्रभाशाली छे, भव्यात्माओने एकान्त हितकारी देशना देवाने जेओ सावधानपणे प्रवर्ते छे तेमज जेओ पंचेंद्रियनिग्रह, नव ब्रह्मगुप्ति, कषाय चतुष्कजय, पंच महाव्रतपालन, पंचाचारसेवन तथा पंच समिति अने त्रण गुप्तिरूप अखंड ३६ गुणना निधान छे, एवा भाव आचार्य भगवानोने अमारो वारंवार नमस्कार हो ! ३

सुत्तत्थवित्थारणतप्पराणं, नमो नमो वायगकुंजराणं ॥
गणस्स संधारणसायराणं, सव्वप्पणावज्जियमच्छराणं ॥ ४ ॥

शिष्य संप्रदायने सूत्रार्थ शीखववामां जेओ सावधान रहे छे, साधु समुदायना संभाळ (निर्वाह) करवामां जेओ सागर जेवी गंभीरता राखे छे अने इर्ष्या--अदेखाइने तो जेमणे सर्वथा तजी दीधी होय छे एवा श्रेष्ठ वाचक या उपाध्याय भगवानने अमारो वारंवार नमस्कार हो ! ४

साहूण संसाहिअसंजमाणं, नमो नमो सुद्धदयादमाणं ।
तिगुत्तिगुत्ताण समाहियाणं, मुणिंदमाणंदपयट्ठियाणं ॥ ५ ॥

संयममार्गमां सम्यग रीत्या प्रवृत्त थयेला, मुख्यवृत्त्या मन, वचन अने काया सारी रीते काबुमां राखी रहेला, समता--समाधिमां स्थित थयेला, मुनींद्रयोग्य सहजानंदमां मस्त रहेनारा अने शुद्ध--निर्दोष दया, दमननुं सेवन करनारा विश्ववर्ती समस्त साधु समुदायने अमारो वारंवार नमस्कार हो ! ५

जिणुत्ततत्ते रुइलक्खणस्स, नमो नमो निम्मलदंसणस्स ॥
मिच्छत्तनासाइसमुग्गमस्स, मूलस्स सद्धम्ममहादुमस्स ॥ ६ ॥

सर्वज्ञ--वीतराग कथित जीवाजीवादिक नव तत्त्वमां अथवा शुद्ध देवादिक त्रण तत्त्वमां रुचि--श्रद्धान, ए जेनुं लक्षण छे, वळी मिथ्यात्व कषाय प्रमुखने टाळवाथी जेनो आविर्भाव (देखाव) थइ शके छे अने जे ज्ञान--चारित्ररुप महाधर्मनुं मूळ छे ते निर्मळ सम्यक्त्वने अमारो वारंवार नमस्कार हो ! ६

अन्नाणसंमोहतमोहरस्स, नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥
पंचप्पयारस्सुवगारगस्स, सत्ताण सव्वथ्थपयासगस्स ॥ ७ ॥

जे अज्ञान अने महा मोहरूपी अंधकारने दूर करी नांखे छे, वळी मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यव अने केवळ ए पांच जेना प्रकार छे, जे अनेक रीते जीवोने उपकार करे छे अने जे भव्य जीवोने सर्व पदार्थ संबंधी बोध समर्पे छे, ते ज्ञान दिवाकरने अमारो वारंवार नमस्कार हो ! ७

आराहिआखंडियसक्कियस्स, नमो नमो संजमवीरियस्स ।
सब्भावणासंगविवड्ढियस्स, निव्वाणदाणाइसमुज्जयस्स ॥ ८ ॥

जे अखंडित शक्ति (प्रमाद रहित सतत पुरुषार्थ) वडे प्राप्त थइ शके छे. सद्भावनायोगे जेनी वृद्धि थइ शके छे अने जे शाश्वत सुखादिक आपवा समर्थ छे, ते संयम वीर्यने अमारो वारंवार नमस्कार हो! ८

कम्मद्दुमुम्मूलणकुंजरस्स, नमो नमो तिव्वतवोभरस्स ॥
अणेगलद्धीण निबंधणस्स, दुस्सज्झअत्थाण य साहणस्स ॥ ९ ॥

जेना प्रभावे गौतमस्वामीनी जेवी अनेक उत्तम लब्धिओ उत्पन्न थाय छे, तेमज दुःसाध्य (महा मुशीबते मेळवी शकाय एवा) अर्थ पण जेना वडे सुसाध्य (सुखे मेळवी शकाय एवा) थइ शके छे तथा जे समर्थ हाथीनी पेरे कर्मरूपी वृक्षने समूळगुं उखेडी नांखे छे ते तीव्र तपोभर (आंबिल वर्धमानादिक अनेक प्रकारना आकरा बाह्य अने अभ्यंतर तपसमुदाय) ने अमारो वारंवार नमस्कार हो ! ९

इय नवपयसिद्धं, लद्धिविज्झासमिद्धं । पयडिअसरवग्गं,
ह्रींतिरेहासमग्गं । दिसिवइ सुरसारं, खोणिपीढावयारं ॥
तिजयविजयचक्कं, सिद्धचक्कं नमामि ॥१०॥ इतिशम् ॥

अथ नवपदस्वरुपगर्भित अरिहंतादिक आराधनउपदेश.

जियंतरंगारिजणे सुनाणे, सुपाडिहेराइ सयप्पहाणे ॥
संदेहसंदोहरयं हरंते, झाएह निच्चंपि जिणेरिहंते ॥ १ ॥

जेमणे राग, द्वेष अने मोहादिक अंतरंग शत्रुवगन जीती लीधो छे जेथी उत्तम केवळज्ञान प्रमुख आत्म–समृद्धि जेमने प्रगट–प्राप्त थयेली छे, तेमज उत्तम प्रातिहार्यादिक अतिशयोवडे जे देवाधिदेवनी पदवीने पामेला छे, अने जे पोतानी सातिशय वाणीवडे अनेक जीवोना संदेहरुपी रज समूहने समीर (पवन)नी पेरे झाटकी काढे छे, ते जिन–अरिहंत भगवानने हे भव्यजनो ! तमे सदाय दीलमां ध्यावो ! १

दुट्ठट्ठकम्मावरणप्पमुक्के, अणंतनाणाइसिरीचउक्के ॥
समग्गलोगग्गपयप्पसिद्धे, झाएह निच्चंपि मणंमि सिद्धे ॥२॥

विविध प्रकारे जीवोने विडंबना करनारां ज्ञानावरणीय प्रमुख दुष्ट अष्ट कर्मनां आवरणोथी जेओ मुक्त थयेला छे, तेथी अनंत ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने अनंत शक्ति प्रमुख आत्म–लक्ष्मी जेमने प्रगट थयेली छे, तेमज जेओ समग्र लोकना अग्रपदने पामेला छे एटले निरुपाधिक सिद्धि गति अथवा मोक्ष नामना प्रसिद्ध स्थानने प्राप्त थयेला छे ते सिद्ध भगवानने हे भव्यजनो ! तमे तमारा दीलमां सदाय ध्यावो ! २

न तं सुहं देइ पिया न माया, जं दिंति जीवाणिह सूरिपाया ॥
तम्हा हु ते चेव सया महेह, जं मुक्खसुक्खाइं लहुं लहेह ॥३॥

अखंड छत्रीश गुणगणथी अलंकृत भाव–आचार्यनी चरण सेवा जीवोने जे सत्य स्वाभाविक सुख समर्पे छे तेवुं सुख मातपिता-

दिक स्वजन संबंधीओ आपी शकता नथी तेटला माटे हे भव्यजनो ! तमे तेवा भावाचार्यनां चरण कमळ सदाय सेवो-पूजो के जेथी मोक्ष सुखादिक वेगे वरी शको ! ३

सुत्तत्थसंवेगमयस्सुएणं, संनीरखीरामयविस्सुएणं ॥

पीणंति जं ते उवज्झायराए, झाएह निच्चंपि कयप्पसाए ॥४॥

सुस्वादिष्ट जळ, क्षीर अने अमृत समान अनुक्रमे हितकारी श्रुत, अर्थ अने स्वानुभव ज्ञानवडे स्वशिष्यवर्गने जेओ प्रसन्न करे छे तेवा सुप्रसन्न कृपाळु वर वाचक उपाध्यायजी महाराजने हे भव्यजनो ! तमे सदाय दीलमां ध्यावो ! ४

खंते य दंते य सुगुत्तिगुत्ते, मुत्ते पसंते गुणजोगजुत्ते ॥

गयप्पमाए हयमोहमाए, झाएह निच्चं मुणिरायपाए ॥५॥

क्षांत (क्षमाशील-क्षमाळु), दान्त (दमनशील-इंद्रियजित) सुगुप्ति गुप्त (मन, वचन अने कायाने सुनिग्रहित करी राखनार), मुक्त (निर्लेप-निःस्पृही), प्रशान्त (जेमणे कषाय मात्रने सारी रीते शोषवी दीधा छे एवा वैराग्य रसमां झीलनार), मूळ-उत्तर साधु योग्य गुणने धारण करनार (पांच महाव्रतादिक साधु योग्य २७ गुण अलंकृत), विकथादिक प्रमाद वर्जित अने मोह मायाथी मूकायेला (हुं अने मारुं जेमने नथी, अथवा अहंता अने ममताने जेमणे मारी काढी छे) एवा मुनिराजनां चरण कमळने तमे सदाय ध्यावो ! ५

जं दव्वछक्काइसुसद्दहाणं, तं दंसणं सव्वगुणप्पहाणं ॥

कुग्गाहवाहीउ वयंति जेण, जहा विसुद्धेण रसायणेण ॥६॥

सर्वज्ञ कथित षट (छ) द्रव्य (धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने काळ),

जीवाजीवादिक नव तत्त्व (जीव, अजीव, पुन्य, पाप. आश्रव. संवर, निर्जरा, बंध अने मोक्ष), सप्त नय (नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द. समभिरूढ. अने एवंभुत), सप्तभंगी (स्यात् अस्ति, स्यात् नास्ति, स्यात् अस्तिनास्ति. स्यात् अवक्तव्य. स्यात् अस्ति अवक्तव्य, स्यात् नास्ति अवक्तव्य, अने स्यात् अस्तिनास्ति युगपत् अवक्तव्य), चार निक्षेपा (नाम. स्थापना, द्रव्य अने भाव), पांच भाव (औदयिक, उपशमिक, क्षायोपशमिक, क्षायिक अने पारिणामिक) तेमज बे प्रमाण (प्रत्यक्ष अने परोक्ष सविकल्प) विगेरे सर्वज्ञ भाषित वचनमां सुश्रद्धान (दृढ प्रतीति) लक्षणवाळा सम्यकत्वने सर्व गुणोमां प्रधान एटला माटे गणवामां आवेल छे के जेम विशुद्ध रसायणवडे गमे तेवी कष्ट साध्य व्याधिओ पण दूर थाय छे तेम आ (सम्यकत्व) गुण वडे अन्य गुण प्रतिबंधक कदाग्रह प्रमुख अनेक प्रकारना आंतर व्याधिओ उपशमी जाय छे. एम समजीने हे भव्यात्माओ ! उक्त सम्यकत्वनुं तमे यथाविध आराधन करो ! जेथी तमारी सघळी धर्म करणी मोक्षदायी नीवडे. ६

नाणं पहाणं नयचक्कसिद्धं. तत्तावबोहिक्कमयं पसिद्धं ॥
धरेह चित्तावसहे फुरंतं, माणिक्कदीवुव्व तमोहरंतं ॥ ७ ॥

विध विध (अनेक प्रकारना) अपेक्षावाळा अभिप्रायोवडे वस्तुमां रहेला अनंता धर्मोनुं स्फोटन करनारा नय समूहयोगे निष्पन्न थयेल, केवळ वस्तु स्वरुपनुं ज प्रतिपादन करनार, अत्यारे पण आगम रुप प्रगट देखातो. स्वपर प्रकाशक होवाथी बीजा चार ज्ञान करतां चढीयाता, रत्नदीपकनी पेरे अंतस्तम (उंडा अज्ञान अंधकार) ने हरण करनारा, जाज्वल्यमान ज्ञानदीपकने हे भव्यजनो ! तमारा मनमंदिरमां स्थापो ! ७

सुसंवरं मोहनिरोहसारं, पंचप्पयारं विगयाइयारं ॥
मूलोत्तराणेगगुणपवित्तं, पालेह निच्चंपि हु सच्चरित्तं ॥८॥

जगतमात्रने अंध करी नांखे एवा समर्थ मोहनो निरोध करवा वडे प्रधान, समिति–गुप्ति प्रमुख सुसंवर स्वरुप, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, अने यथाख्यात ए पांच प्रकारवाळा अने मूळ तथा उत्तर अनेक गुणोवडे पवित्र एवा सत् चारित्रने तमे सदाय निरतिचारपणे पाळो. ८

बज्झं तहा भिंतरभेयमेयं, कयाइ दुब्भेयकुकम्म भेयं ॥
दुक्खक्खयत्थं कयपावनासं, तवं तवेहागमियं निरासं ॥९॥

छ प्रकारे बाह्य अने छ प्रकारे अभ्यंतर एम जेना बार भेद गणाय छे, जेनावडे दुर्भेद्य कुकर्मोनो भेद (विनाश) थइ शके छे, एवा पाप विनाशक तपने हे भव्यजनो ! तमे जन्ममरणादिक दुःखनो क्षय करवा माटे आगमरीते निराशीभावे (निष्कामवृत्तिथी) सेवो ! जेथी तमे जलदी भवभ्रमण निवारीने अक्षय–अव्याबाध–शिव सुखने पामी शकशो. ९

एयाइं जे केवि नवपयाइं, आराहयंतिट्ठफलप्पयाइं ॥
लहंति ते सुक्खपरंपराणं, सिरिसिरीपालनरेसरुव्व ॥१०॥ इति.

उपसंहार.

सर्व–मोक्ष प्रमुख इष्ट फळने प्रकर्षे करीने देवावाळा उपर कहेलां उत्तम नव पदोने जे भव्यात्माओ आराधे छे, तेओ श्री श्रीपाळ नरेश्वरनी पेरे सुखनी परंपरा-अविच्छिन्न सुख संपदाने सहजे पामे छे.

श्री सिद्धचक्र-आराधन विधि.

उपर कह्या मुजब नवपदना गुण समजी शाश्वत सुखना अर्थी जनोए तेनुं सदा सद्भावथी सेवन करवुं. त्रिकाळ पूजा सेवा भक्ति बहुमान पूर्वक मनमां निरंतर नवपदनुं स्मरण करवुं. दृढ अभ्यासथी नवपदनुं ध्यान धरनार पोतेज नवपदरूप थइ शके छे, तेथी अहोनिश हृदय कमळमां नवपदनुं स्थापन करी राखवुं जरूरनुं छे. आसो अने चैत्र मासमां विशेष करीने शुद ७ थी शुद १५ सुधी निरंतर 'आयंबिल' तपनुं सेवन करवुं अने एकेक दिवसे अनुक्रमे ॐ ह्रीं पूर्वक १ नमो अरिहंताणं, २ नमो सिद्धाणं, ३ नमो आयरियाणं, ४ नमो उवज्झायाणं, ५ नमो लोए सव्वसाहूणं, ६ नमो दंसणस्स, ७ नमो नाणस्स, ८ नमो चारित्तस्स, ९ नमो तवस्स, ए नवपदनुं गणणुं गणवुं. दरेक पदनो २००० जाप करवो अथवा एकेक पदथी २० नवकारवाळी गणवी. गणणुं गणतां अरिहंतादिक पदमांज उपयोग स्थिर करवो. स्थिर आसन करी मन तथा इंद्रियोने काबुमां राखी, एकांत अने पवित्र स्थळमां अडग ध्यान धरवुं. उभयकाळ प्रतिक्रमण अने पडिलेहण तथा त्रिकाळ देववंदन संबंधि क्रिया यथाविध प्रमाद रहित करवी. प्रतिक्रमण एटले करेलां पापनुं पश्चात्ताप पूर्वक सद्गुरु समीपे आलोचन करी निःशल्य थइ पुनः तेवां पापथी डरतां रहेवुं अने सर्व जीवउपर समान बुद्धि राखवी. राग, द्वेष, क्रोधादिक कषाय, निंदा, चुगली, मिथ्या आळ तथा

कलह आदिक निंद्य कामथी सदंतर दूर रहेवुं. यथाशक्ति दान देवुं. निर्मळ मन राखी शुद्धशील पाळवुं. नव दिवस सुधी यथावर्ण एकज धान्यथी, आसक्ति विना-लुखाशवृत्तिथी, एकज वखते, स्थिर आसने भोजन करवुं. पहेले दिवसे श्वेत अन्न चोखा प्रमुख, बीजे दिवसे लाल अन्न-घउं प्रमुख, त्रीजे दिवसे पीत अन्न-चणा प्रमुख, चोथे दिवसे नीलवर्ण अन्न-मग प्रमुख, पांचमे दिवसे कृष्णवर्ण-अडद प्रमुख अने छल्ला चार दिवसे श्वेतवर्ण-चोखा-शालि प्रमुख राधेलुं धान्य वापरी देहने आधार आपवो. मैत्री प्रमुख भावना चतुष्टयनुं सदाय सेवन करवुं. सर्व जीवोनुं सदाय हित इच्छवुं, सद्गुणीने देखी प्रमुदित थवुं. दीन-दुखीनुं दुःख टाळवा बनतुं करवुं अने कठोर दीलना निर्दय प्राणी उपर पण द्वेष लाववो नहिं. देहादिक पुद्गालिक वस्तुओनुं अनित्यपणुं अने असारपणुं विचारी सदा शाश्वत अने सारभूत धर्मनुं दृढ आलंबन लेवुं. सर्वज्ञ प्रणीत धर्मज आ दुःखदरियामां डुबता जीवोने सहायभूत छे. नवपदमां देव, गुरु अने धर्म ए त्रणेनो समावेश थाय छे, तेथीज तेनुं दृढतर अवलंबन लेवुं उचित छे. ए नव पदनुं सविशेष स्वरूप सद्गुरु समीपे समजी पर आशंसा रहित-निष्कामी पणे तेनुं सेवन करवामां आवे तो अल्पकाळमां अक्षय सुख प्राप्त थई शके छे. उक्त नवपद अनंत गुणनिधान छतां तेनां अनुक्रमे १२, ८, ३६, २५, २७, ६७, ५१, ७० अने १२ गुणो शास्त्रमां वर्णवेलां छे. ते प्रमाणे तेटला लोगस्सना काउस्सग्ग तेटलांज खमासमण अने तेटलीज प्रदक्षिणा विगेरे करणी स्थिर उपयोगथी नव दिवस सुधी अनुक्रमे करवी कही छे. वळी दिन दिन विनय, वेया-

वच्च, स्वाध्याय, ध्यान प्रमुख धर्म व्यापार शुद्ध मन, वचन, कायाना योगथी करतां आत्मा अवश्य उच्च गतिनो अधिकारी थायछे. आ प्रमाणे नवपदनुं आराधन ४॥ वर्ष सुधी अने बनी शके तो जीवित पर्यंत करवानुं छे. ४॥ वर्षमां सर्व मळीने ८१ आयंबिल उपर मुजब करवानां छे अने साथे साथे बीजी धर्मकरणी करवानो परमार्थ सद्गुरु समीपे समजी तेनुं सेवन करनारने यथार्थ लाभ मेळववा, एटलुं अवश्य लक्षमां राखवानी जरूर छे, के ते करणी तद्गत उपयोगथी दोष रहित निष्कपटपणे करवी. भय–परिणामनी चंचळता, द्वेष–अरुचि, अने खेद रहित चढते परिणामे दोष रहित करेली करणी उत्तम फळ आपे छे. एम समजी सुज्ञ सज्जनोए सर्व मत कदाग्रह मूकी दइ उक्त नवपदजीनुं स्वरुप यथार्थ रीते निष्पक्षपातपणे निर्धारी तेनुं सेवन–आराधन निर्मळ श्रद्धाथी उल्लासित भावे प्रमाद रहित करवुं. एवी रीते शुद्धभावथी सिद्धचक्रजीनी आराधना करनार श्री श्रीपाळ अने मयणा सुंदरीनीपेरे अत्र मनुष्य भवमां अद्भुत सुख अनुभवी अनुक्रमे स्वर्गनां अने मोक्षनां अक्षय अनंत सुख प्राप्त करे छे.

अत्र दर्शावेल आराधन विधि सामान्य रीते वीश स्थानक प्रमुख अन्य तपनुं आराधन करवा इच्छनारा भव्य जनोने पण यथायोग्य उपयोगी थइ शके एम होवाथी ते तरफ तेमनुं खास लक्ष दोरवामां आवे छे.

नवपदनुं आराधन करनाराओने दरेक पद दीठ बोलवाना दूहा.

॥ प्रथम श्री अरिहंतपद ॥

अरिहंत पद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जायेरे ॥
भेद छेद करी आतमा, अरिहंत रूपी थायेरे ॥ १ ॥
वीर जिनेश्वर उपदिशे, सांभलजो चित्त लाइरे ॥
आत्मध्याने आतमा, ऋद्धि मले सवि आइरे ॥ २ ॥

॥ द्वितीयश्रीसिद्धपद ॥

रूपातीत स्वभावजे, केवल दंसण नाणीरे ॥
ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्धगुण खाणीरे ॥वी०॥ ३ ॥

॥ तृतीयश्रीआचार्यपद ॥

ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभध्यानीरे ॥
पंच प्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणीरे ॥ वी० ॥ ४ ॥

॥ चतुर्थश्रीउपाध्यायपद ॥

तप सज्झाए रत सदा, द्वादश अंगनो ध्यातारे ॥
उपाध्याय ते आतमा, जगबन्धव जगभ्रातारे ॥ वी० ॥ ५ ॥

॥ पञ्चमश्रीसाधुपद ॥

अप्रमत्त जे नित्य रहे, नवि हरखे नवि सोचेरे ॥
साधु सुधा ते आतमा, शुं मूंडे शुं लोचेरे ॥ वी० ॥ ६ ॥

॥ षष्ठश्रीदर्शनपद ॥

शम संवेगादिक गुणा, क्षय उपशमे जे आवेरे ॥
दर्शन तेहिज आतमा, शुं होय नाम धरावेरे ॥ वी० ॥ ७ ॥

॥ सप्तमश्रीज्ञानपद ॥

ज्ञानावर्णी जे कर्म छे, क्षय उपशम तस थायरे ॥
तो हुए एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जायरे ॥ वी० ॥ ८ ॥

॥ अष्टमश्रीचारित्रपद ॥

जाण चारित्र ते आत्मा, निज स्वभावमां रमतोरे ॥
लेश्या शुद्ध अलंकर्यो, मोहवने नवि भमतोरे ॥ वी० ॥ ९ ॥

॥ नवमश्रीतपपद ॥

इच्छारोधे संवरी, परिणति समतायोगेरे ॥
तप ते एहिज आतमा, वर्त्ते निजगुणभोगेरे ॥ वी० ॥ १० ॥

वर्धमान तपनी ओळी संबंधी सामान्य समज.

वर्धमान तप एटले उत्तरोत्तर वृद्धि पामतो तप. ते तप संबंधी ओळी करवानी रीति आ प्रमाणे छे—प्रथम एक आयंबिल, पछी एक उपवास ए प्रथम ओळी. पछी बे आयंबिल अने एक उपवास ए बीजी ओळी. पछी त्रण आयंबिल अने एक उपवास ए त्रीजी ओळी. पछी चार आयंबिल अने एक उपवास ए चोथी ओळी. पछी पांच आयंबिल अने एक उपवास ए पांचमी ओळी. आ पांच ओळी एक साथेज करवामां आवे छे. त्यारबाद सशक्त, हिंमतवान होय ते एज रीते उत्तरोत्तर एक एक आयंबिल वधारता जाय अने तेना उपर प्रत्येक उपवास करी एक एक ओळी पूर्ण करतो रहे. जेमके ६ आयंबिल अने उपर उपवास, पछी ७ आयंबिल अने उपवास, पछी ८ आयं-

बिल अने उपवास, एवी रीते यावत् १०० आयंबिल अने उपर उपवास करे, त्यारे १०० मी ओळी पूर्ण थाय एटले वर्धमान तपनी पूर्णाहुति थई कहेवाय. आ वर्धमान तपनी ओळी अविच्छिन्नपणे (वचमां तूटक पाड्या वगर) चालु राखवामां आवे तो ते तप १४ वर्ष, ३ मास अने २० दिवस सुधी चाले छे. अने जो वचमां वचमां थोडाक दिवस कंइ शरीरादिकनी शिथिलता प्रमुख कारणसर पडती मूकी पछी आंतरे आंतरे करवामां आवे तो ते तप पूर्ण थतां विलंब थाय छे. आ वर्धमान तप घणोज प्रभाविक तेमज द्रव्य भाव विघ्न—उपद्रवने हरनारो छे, तेने कोईक विरल भाग्यशाळी जनोज पूर्ण करी शके छे. ए वर्धमान तप कोई महानुभाव सुविहित संविज्ञ भवभीरु गीतार्थ गुरु पासे शुभ मुहूर्ते उल्लासपूर्वक जिन मंदिरमां अथवा नंदि (समवसरण) मंडावीने यथाविधि अंगीकार करी श्री गुरुमहाराज पासे वासक्षेप कराववो; अने प्रमाद तजी नवपदनी ओळी करतां जे जे सदाचार पाळवा सूचना करवामां आवी छे ते ते सदाचारो ज्यां सुधी आ महान वर्धमान तपनुं सेवन करवामां आवे त्यां सुधी पाळवा शील, संतोषादिक प्रमुख सद्वर्तन नेक निष्ठाथी पाळवुं. विशेषमां प्रत्येक ओळीना दिवसोमां गणणुं ' नमो तवस्स ' अथवा ' नमो सिद्धाणं ' पदनुं २००० गणवामां आवे छे अने तेना गुण प्रमाणे १२ अथवा ८ लोगस्सनो काउस्सग, प्रतिदिन तेटलांज खमासमण, तेमज प्रदक्षिणा पण देवामां आवे छे. बाकीनी सामान्य विधि नवपदना प्रसंगे कहेवामां आवेल छे ते उपरथी जाणी लेवी.

तिथीओ संबंधी तपनी समज.

(१)

बीजनुं माहात्म्य तथा सामान्य समज.

दुविध धर्मनुं आराधन करवा निमित्त आ तपनुं सेवन करवामां आवे छे अने ते दिवस उपवास पोषधादिक यथाशक्ति करवुं जोइए. ए तप यथाशक्ति बे मास, २२ मास अथवा जींदगी पर्यंत करवामां आवे छे. ज्यां स्पष्ट गणणुं जणाववामां आवेलुं नथी त्यां पण नवपद पैकी कोई पण पदनुं २००० गणणुं गणवुं घटे छे. बाकीनो विधि नवपदनी ओळीमां बताव्या मुजब यथायोग्य समजी लेवानो छे.

(२)

पंचमी तपनो महिमा तथा सामान्य समज.

ज्ञाननुं आराधन करवा शास्त्रकारे पंचमी तप करवा जणाव्युं छे. शक्ति होय तो सघळी पंचमी करवामां आवे. नहिं तो दरेक मासनी उज्वळ (अजवाळी) पंचमी, नहिं तो छेवटे कार्त्तिक शुदि पंचमी (सौभाग्य पंचमी) तो जरुर करवी जोईए; तेमां २००० गणणुं " नमो नाणस्स " ए पदनुं गणवुं. काउस्सग लोगस्स ५ अथवा ५१ अने एटलांज खमासमण विगेरे पण प्रतिदिन देवा जोईए, आ तप पण यथाशक्ति पांच मास, पांच वरस अथवा जींदगी पर्यंत करवामां आवे छे. तपना दिवसे पोषधादिकनुं सेवन करवुं जोईए.

(३)

अष्टमी (आठम) तपनो महिमा अने तेनी सामान्य समज.

आवश्यक सूत्रनी निर्युक्तिमां श्रीमान भद्रबाहु स्वामीजीए कह्युं छे के " अट्ठकम्ममहणी अट्ठमी " एटले आठे कर्मनुं मथन करनारी अष्टमी छे. अर्थात् विधियुक्त अष्टमीनो तप करतां आठे कर्मनो क्षय थई शके छे. तपना दिवसे बनी शके त्यांसुधी अवश्य पौषध प्रमुख करवुं जोईए. ते तप यथाशक्ति ८ मास, ८ वर्ष अथवा जींदगी पर्यंत करवो घटे छे.

(४)

एकादशी तपनुं माहात्म्य तथा सामान्य समज.

अगीयार अंगनुं आराधन करवा आ तपनुं निर्माण छे. श्री नेमिनाथ महाराजने कृष्णजीए पोताना उद्धारार्थे कंई साधन माटे पूछ्युं हतुं त्यारे भगवाने तेने एकादशीनुं आराधन करवा जणाव्युं हतुं. सुव्रत शेठे आ पर्वनुं यथाविधि आराधन करेलुं छे. तपना दिवसे एक चित्ते पौषधादिकनुं सेवन करवुं, अने ते तप यथाशक्ति ११ मास, ११ वर्ष यावत् जीवित करवुं जोईए. जो वधारे न बने तो मागशिर शुद एकादशी (मौन अगीयारस) नुं तो अवश्य आराधन करवुं अने ते जींदगी पर्यंत करवुं. तेनुं गुणणुं (१५० कल्याणकनुं) अन्य ग्रंथमां बतावेलुं छे त्यांथी जोई लेवुं.

(५)

चतुर्दशीनुं माहात्म्य अने सामान्य समज.

चौद पूर्वनुं आराधन करवा आ तप करवामां आवे छे. ते दिवसे पौषधादिकनुं सेवन करवुं. अने ते यथाशक्ति १४

मास, १४ वर्ष अथवा जींदगी पर्यंत करवुं. पाखीनी आलोयण तरीके पण दरेक चौदशे एक उपवास के तेना जेटलो बीजो तप, बे आयंबिल, त्रण नीवी, चार एकासणां प्रमुख करवो जोईए.

(६)

पूर्णिमा अने अमावास्या संबंधी तपनी समज.

छ पर्वी पैकी पूर्णिमा तथा अमावास्या पण चारित्र आराधन तिथिओज छे अने तेथी ते उपवास पौषधादिक वडे आराधवा योग्य छे. तेमां पण कार्तकी अने चैत्री पूर्णिमानी तथा वीर प्रभुना निर्वाण दिवस तरीके अमावास्यानी पण अधिकता जाणवी. अथवा तो बधी तिथियोनो विवेक करवो घटे छे, ते आवी रीते के–दरेक अष्टमी चतुर्दशी, पूर्णिमा अने अमावास्या ए चारित्र आराधननी तिथिओ जाणीने तेमज बीजी पंचमी अने एकादशी ते ज्ञानदर्शन आराधवानी तिथिओ जाणीने यथाशक्ति तप तथा पौषधादिक वडे तेमनुं आराधन करवुं योग्य छे.

महोपाध्याय श्री मद्यशोविजयजी कृत श्री पार्श्वजिन स्तवन.

(राग धमाल–फाग)

चिदानंद घन परम निरंजन, जन मन रंजन देव ॥ ललना ॥
वामा नंदन जिन पति थुणिए, सुरपति जस करे सेव
मन मोहन जिनजी भेटिए हो ॥ ए आंकणी ॥

जायजूइ चंपक केतकी, दमणाने मचकुंद ॥ ललना ॥
कुंदइंदु रुचि सुंदर जोडी, पूजीए पासजिणंद ॥ मनमोहन० ॥ २ ॥
केसर घोळी घसी घनचंदन, आनंदघन घन घनसार ॥ ललना ॥
प्रभुकी पूजा करो मनरंगे, पाइये पुण्य सफार¹ ॥ मनमोहन० ॥ ३ ॥
अंग चंगी आंगी बनावी, अलंकार अति सार ॥ ललना ॥
द्रव्यस्तवविधि पूरण विरची, भाविए भाव उदार ॥ मनमोहन० ॥ ४ ॥
परमातम पूरण गुण प्रत्यक्ष, पुरुषोत्तम परधान ॥ ललना ॥
प्रगटभाव प्रभावती वल्लभ², तुं जयो सुगुणनिधान ॥ मन मोहन० ॥ ५ ॥
जो तुझ भक्ति मोरी³ मुझमन, वनविचरे अतिचित्त ॥ ललना० ॥
दुरित भुजंगम⁴ बंधन त्रुटे, तो सघळो जगमित्त ॥ मन मोहन० ॥ ६ ॥
तुझ आणा सुरवेली मुजमन, नंदनवन जिहां रूढ ॥ ललना० ॥
कुमति कदाग्रह कंटक शाखी⁵, संभवे नहिं तीहां गूढ ॥ मन मोहन० ॥७॥
भक्तिरंग तुज आणाराधन⁶, दोय चक्र संसार ॥ ललना ॥
सहस अढार अंग रथ चाले, विघन रहित शिवधार ॥मन मोहन०॥८॥
गुरु उपदेश जो मुज लाग्यो, तुझ शासनको राग ॥ ललना ॥
महानंदपद खेंच लहेगो, ज्युं अलि⁷ कुसुम पराग ॥ मन मोहन० ॥९॥
बाहिर मन निकसन⁸ नहि चाहत, तुझ शासनमां लीन ॥ललना॥
उमग निमग⁹ करी निजपद रहेवे, ज्युं जलनिधि¹⁰ जळमीन
॥ मन मोहन० ॥ १० ॥

१ विशाल-अनर्गल. २. प्राणप्रिय. ३ मयूरी (मोरली). ४ पाप-साप. ५. कांटालां रुखडां. ६ आज्ञापालन. ७ भ्रमर. ८ निकळवा ९ क्षेम. १० समुद्र.

ओरनकी गणती न पावुं, जो तुं साहीब एक ॥ ललना० ॥
फल वासना दृढ निजमनकी, ज्युं अविचल पद टेक ॥मन मोहन०॥११॥
मुज तुज शासन अनुभवको रस, क्युं करी जाणे लोग ? ॥ललना॥
अपरिणीत कन्या नवी जाणे, ज्युं सुख द्वैत[1] संजोग ॥मन मोहन० ॥१२॥
तुं साहिब हुं सेवक तोरो, ए व्यवहार विभाग ॥ललना॥
निश्चय नयमत दोनुं विरंच, है नहिं भेदको लाग ॥मन मोहन०॥१३॥
मन वचनादिक पुद्गळ न्यारो, न्यारा सकळ विभाव ॥ललना॥
शुद्ध द्रव्य गुण पर्याय घटना, तुझ समशुद्ध स्वभाव ॥मन मोहन०॥१४॥
तुं घट अंतर प्रगट विराजे, ज्युं निर्मल मणिकंत ॥ललना॥
बाहीर ढुंढत गुढ न पावे, ज्युं मृगमद मृग भ्रान्त ॥ मन मोहन० ॥१५॥
गुणठाणादिकभावे मिश्रित, सबमांहे तुझ अंश ॥ललना॥
खीरनीर जिम भिन्न करतहे, उज्जवल अनुभवहंस ॥मन मोहन०॥१६॥
आतमज्ञान दशा जब लागी, वैरागी तुझ ज्ञान ॥ललना॥
सो पावे ज्युं रत्नपरीक्षा, पेखत रत्नप्रधान ॥ मन मोहन० ॥ १७ ॥
पुण्य प्रकृति देवको कारण, मूढ लहे नहीं धर्म ॥ललना॥
ज्युं पीरो कोई अंध न माने, लहत न अंतर मर्म ॥मन मोहन० ॥१८॥
गंध रूप रस फरस विवरजन, न धरे तिहां संठाण ॥ललना॥
अण अवतार अशरीर अवेदी, तुं प्रभु शुद्धप्रमाण ॥मन मोहन०॥१९॥
केवळज्ञान दशा अवलोके, लोकालोक प्रमाण ॥ललना॥
दर्शन वीर्य चरण गुणधारी, सेवत सब अहिठाण ॥मन मोहन०॥२०॥

१ दंपती।

सत्ता शुद्ध अरूपी तोरी. नहीं जगको व्यवहार ॥लल्ना॥
कहा कही कछु कहत न आवे, तुं प्रभु अलख अपार ॥ मन मोहन० ॥२
दीपचंद्र रवि ग्रहगण केरो, जिहां प्रसरत नहीं तेज ॥लल्ना॥
तिहां एक तुज धाम विराजे, निर्मल चेतन मेज[1] ॥मन मोहन०॥२
आदि रहित अजरामर निर्भय, व्यापक एक अनंत ॥लल्ना॥
शुद्ध प्रकृति अकषाय अमायी, तुं प्रभु बहु गुणवंत ॥मनमोहन॥३॥
तुं माता तुं त्राता भ्राता, पिता बंधु तुं मित्त ॥लल्ना॥
सरण तुंहि तुज सेवा कीजे, दृढ करी तनु वच चित्त ॥मनमोहन.॥४॥
पास आश पूरो अब मोरी, अरज एक अवधार ॥लल्ना॥
श्री नयविजय विबुध पाय सेवक, जस कहे भवजलतार ॥ मनमोहन
जिनजी भेटिये हो. २५ इति.

१ सहज-निरुपाधिक.

સમાપ્ત.

[illegible]

[illegible] ॥ १ ॥

[illegible]

परमार्थ भावना

[illegible] ॥ २ ॥

[illegible]

[illegible]

बे बोल

[illegible]

[illegible]

सेक्रेटरी श्री जैन श्वेताम्बर मंडळ

[illegible]